RNI No. MPBIL02443/2020-TC

सामुदायिक

GOONJ

National News Magzine

HOLI Special

वर्ष : 01 अंक : 03 मार्च 2021 मूल्य: ₹ 25 पृष्ठ : 52

International Women's Day

GOONJ - Open Mike Contest

ग्वालियर के गौरव नरेन्द्र सिंह तोमर

महिला शक्ति की रोल मॉडल- कृति सिंह

All About GOONJ

GOONJ

"We started this journey with the germ of an idea of creating social equality, thus came into being MPMM. However, we soon realized the need for widening the sphere and means for realizing our goals. Today the society is infested with so many pressing & compelling social issues that just being an NGO and serving people wouldn't suffice. Very quickly

we realized that we could maximize our social impact, by addressing the needs of the youth and children. By assisting the younger generation we can improve the communities where they live there by making the future of these communities brighter. From the epiphany came a clear Vision:Inform,Inspire,Empower.We not only wanted to help them but also empower them and give them a media platform which is their own and where they can raise their own concerns, through our voice; hence came up Goonj 90.8 FM Aapkee Apni Aawaz. Madhya Pradesh has produced so many famous reporters and journalist but does not house any reputed media college. With a aim of retaining and grooming this local talent we started Goonj Institute and a news portal Goonj MP recently."

FOUNDER'S BIOGRAPHY

For over decade MS Krati Singh has been a Social worker. With a degree in BBA from De Montfort University (U.K), an MBA from Indore and specialization in Media Studies, Krati Singh's life is a cynosure for others who want to be the agents of social change .A social entrepreneur every bit she strongly believes that social enterprise is not a silver bullet, but it is a promising approach to fulfilling unmet needs and fostering genuinely "triple-bottom-line" organizations – those simultaneously seeking profits, social impact, and environmental sustainability. It's certainly not the only solution, but it is most definitely a solution.

Krati Singh
Director, Goonj Media Group

गूंज का जनवरी 2021 एडिशन

ग्वालियर, मार्च 2021
(वर्ष 01, अंक 03, , पृष्ठ 52, मूल्य 25 रुपए)

प्रेरणास्रोत
श्रीमती संध्या सिकरवार

प्रधान सम्पादक
डॉ. जे. एस. सिकरवार

सम्पादक
कृति सिंह

कार्यकारी संपादक
डॉ. आर. एन. एस. तोमर

सह संपादक
विवेक सिकरवार

सहायक संपादक
अछेन्द्र सिंह कुशवाह

एडिटिंग
इमरान गौरी

एडिटोरियल प्रभारी
पुनीत शर्मा

संकलन
भरत सिंह

कानूनी सलाहकार
अरविन्द दूदावत

छायांकन
माहीन रहमान

कार्यालय प्रभारी
स्तुति सिंह

सिटी रिपोर्टर
कुशाग्र तोमर
आकांक्षा तिवारी

गूंज पत्रिका संपादकीय कार्यालय
ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश
(संपर्कः 7987167692)

IN THIS ISSUE...

आध्यात्मिक गुरु श्री संत कृपाल सिंह जी महाराज ने गूंज पत्रिका के (जनवरी 2021) प्रथम अंक का विमोचन किया। इस अवसर पर गूंज पत्रिका की एडिटर कृति सिंह, विवेक सिकरवार भी उपस्थित थे। महाराज जी ने पत्रिका का अवलोकन किया एवं इसके सफलतम प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं पूरी गूंज टीम को बधाई व शुभकामनाएं भी दीं।

स्वात्वाधिकारी एवं प्रकाशक कृति सिंह के लिए मुद्रक संदीप कुमार सिंह द्वारा नेहा ग्राफिक्स, 32 ललितपुर कॉलोनी, लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश से मुद्रित एवं ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश से प्रकाशित। **संपादक कृति सिंह**। सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र ग्वालियर होगा।
RNI.Title Code-MPBIL02443/2020-TC (समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार) पत्रिका में प्रकाशित सामग्री, रचनाएं, एवं स्तंभ लेखक के स्वयं के हैं इसमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। (पत्रिका में सभी पद अवैतनिक एवं अस्थाई हैं।) **संपर्क: 7987167692**

हर क्षेत्र में आगे आज की नारी....

कृति सिंह

संपादक

नारी आज के बदलते परिवेश में जिस तरह पुरुष वर्ग के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है, वह समाज के लिए एक गर्व और सराहना की बात है. आज राजनीति, टेक्नोलोजी, सुरक्षा समेत हर क्षेत्र में जहां जहां महिलाओं ने हाथ आजमाया उसे कामयाबी ही मिली. अब तो ऐसी कोई जगह नहीं है, जहां आज की नारी अपनी उपस्थिति दर्ज न करा रही हो. और इतना सब होने के बाद भी वह एक गृहलक्ष्मी के रूप में भी अपना स्थान बनाए हुए है. नारी, स्त्री, महिला वनिता, चाहे जिस नाम से पुकारो नारी तो एक ही है। ईश्वर की वो रचना जिसे उसने सृजन की शक्ति दी है, ईश्वर की वो कल्पना जिसमें प्रेम त्याग सहनशीलता सेवा और करुणा जैसे भावों से भरा ह्रदय है।

महिला दिवस के अवसर पर हम महिला शक्ति की बात करेंगे जिन्होंने हर क्षेत्र में आगे बढ़कर खुद को साबित किया है और देश का मान देश व दुनिया में बढ़ाया है अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सभी सम्मानीय महिलाओं को हार्दिक बधाई यह दिन महिलाओं के साहस और उनकी कामयाबी को सलाम करने का दिन है।

भारतीय शास्त्रों में कहा गया है कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता वास करते हैं। भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान काफी ऊंचा है। वैदिक युग में समाज में नारी की भूमिका बेहद अहम थी। लेकिन कालांतर

में पुरुषों की वर्चस्ववादी सोच ने महिलाओं को हाशिए पर लाकर खड़ा कर दिया। महिलाओं को अबला समझा जाने लगा। धीरे-धीरे महिलाएं अपने सम्मान के लिए आगे बढ़ने लगी और हाल के दिनों में भारत समाज के विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी उपलब्धि हासिल की। चाहे वो शिक्षा का मामला हो या खेलकूद का, हर क्षेत्र में महिलाएं आगे बढ़ रही हैं। इसके बावजूद बालिकाओं की संख्या कम होने, बाल विवाह, दहेज, महिलाओं के खिलाफ हिंसा, अनेक स्तरों पर शोषण और भेदभाव जैसी बुराइयां मौजूद हैं। इन बुराइयों के खिलाफ एक जंग की जरूरत है। पहले नारी का स्थान घर की चारदीवारी तक सीमित था लेकिन आज वो हर सीमा को चुनौती दे रही है। चाहे राजनीति का क्षेत्र हो चाहे सामाजिक, चाहे हमारी सेनाएँ हों चाहे कारपोरेट जगत, आज की नारी हर क्षेत्र में सफलता पूर्वक दस्तक देते हुए देश की तरक्की में अपना योगदान दे रही है।

इकसवीं शताब्दी में, महिलाओं ने न सिर्फ धन अर्जन करने में अपनी भूमिका दर्ज कराई है बलकि भावी संगठनों का निर्माण करते हुए अभिकर्ताओं का स्वरूप भी परिवर्तित किया है। हाल के वर्षों में, महिलाओं ने जीवन के हर क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है।

विगत तीन दशकों में, महिलाओं ने कॉरपोरेट जगत में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है, सामाजिक नैतिकता की बाध्यताओं को पार करते हुए घर तथा कार्यस्थल पर स्वयं को सफल उद्यमी एवं कार्यकारी व्यावसायिकों के रूप में साबित किया है। भारतीय महिला उद्यमी वर्ग ने नए उद्यमों को आरंभ करने एवं उनका सफलतापूर्वक संचालन करने में बेहतर कार्य-निष्पादन के कई उदाहरण प्रस्तुत किए हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात कार्यक्रम की 40वीं कड़ी के जरिए अपने विचार देशवासियों के साथ साझा किए। प्रधानमंत्री ने मन की बात में नारी शक्ति की चर्चा करते हुए कहा कि प्राचीन काल से लेकर आज के दिन भी भारतीय महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है और साथ ही कहा किए ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जहां पर महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज नहीं कराई हो। प्रधानमंत्री ने महिलाओं के रक्षा क्षेत्र से लेकर विमानन क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने को एक मील का पत्थर बताया। साथ ही प्रधानमंत्री ने गणतंत्र दिवस की परेड में भाग लेने वाली बीएसएफ महिला बाइकर कंटिंजेंट के साहस की भी सराहना की।

आज नारी ने भूमिका के बदलाव को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया है अपनी इच्छा शक्ति के बल पर सफल भी हुई लेकिन आज वो एक अनोखी दुविधा से गुजर रही है। उसे अपने प्रति पुरुष अथवा समाज का ही नहीं बल्कि उसका खुद का भी नजरिया बदलने का इंतजार है।

नारी आज के बदलते परिवेश में जिस तरह पुरुष वर्ग के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है, वह समाज के लिए एक गर्व और सराहना की बात है. आज राजनीति, टेक्नोलोजी, सुरक्षा समेत हर क्षेत्र में जहां जहां महिलाओं ने हाथ आजमाया उसे कामयाबी ही मिली. अब तो ऐसी कोई जगह नहीं है, जहां आज की नारी अपनी उपस्थिति दर्ज न करा रही हो. और इतना सब होने के बाद भी वह एक गृहलक्ष्मी के रूप में भी अपना स्थान बनाए हुए है. नारी, स्त्री, महिला वनिता, चाहे जिस नाम से पुकारो नारी तो एक ही है। ईश्वर की वो रचना जिसे उसने सृजन की शक्ति दी है, ईश्वर की वो कल्पना जिसमें प्रेम त्याग सहनशीलता सेवा और करुणा जैसे भावों से भरा ह्रदय है।

ग्वालियर के गौरव, विकास को समर्पित

नरेन्द्र सिंह तोमर

भारतीय जनता पार्टी की नई पीढ़ी के जिन वरिष्ठ नेताओं ने अपने सहज, सरल और सफल व्यक्तित्व व कृतित्व से गहरी छाप छोड़ी है उनमें से नरेन्द्र सिंह तोमर का नाम अग्रगण्य है। सहजता के आवरण में उनका कुशाग्र राजनय उनके व्यक्तित्व का चुम्बकीय आकर्षण है। यही वजह है कि 1998 से विधानसभा और फिर संसदीय पारी को आगे बढ़ाते हुए श्री तोमर प्रदेश के सत्ता संगठन से लेकर केन्द्रीय राजनीति तक अपरिहार्य हैं। यह सब कुछ उन्हें विरासत में नहीं मिला अपितु उन्होंने अपनी लकीर खुद खींची, अपनी लीक स्वयं तैयार की। राजनीति के इस दौर में जहां धैर्य लुप्तप्राय तत्व है वहीं यह तोमरजी की सबसे बड़ी पूंजी है। यही एक अद्भुत साम्य है जो इनका श्री मोदी जी व श्री शिवराज सिंह जी के व्यक्तित्व से मेल कराता है। श्री तोमर की जड़ें राजनीति की जमीन पर गहराई तक हैं। विस्तृत जनाधार और लोकप्रियता की छांव उन्हें सहज, सरल, सौम्य और कुशाग्र बनाती है, यही उनके धैर्य और शक्ति-सामर्थ्य का आधार भी है।

● संकलनः रामनरेश तोमर

नरेन्द्र सिंह तोमर वर्तमान में मोदी सरकार में केन्द्रीय कृषि मंत्री हैं और इससे पहले भी उन्हें जो मंत्रालय मिला उन्होंने अपनी कड़ी मेहनत से बखूबी काम किया है। केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने मोदी सरकार 2.0 में जबसे कार्यकाल संभाला है तब से ही उनका प्रयास रहा है कि अपने पिछले कार्यकाल में किये गये विकास कार्यों को आगे बढाना है एवं तय समय से पहले काम करने का प्रयास करना

केंद्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर हमारे देश के एक ऐसे राजनेता हैं जिन्होंने छात्र जीवन से ही राजनीति का ककहरा पढ़ना शुरू कर दिया था। इस तरह पूत के पांव पालने में ही दिखाई देने लगे थे। मुरैना जिले में पोरसा विकासखंड के तहत आने वाले ग्राम ओरेठी में श्री मुंशी सिंह तोमर किसान के सपूत नरेंद्र सिंह तोमर का जन्म 12 जून 1957 को तोमर राजपूत परिवार में हुआ। उन्होंने स्नातक की शिक्षा ग्रहण की। वे इस दौरान महाविद्यालय में छात्र संघ के अध्यक्ष भी रहे। शिक्षा पूरी करने के बाद वे ग्वालियर नगर निगम के पार्षद पद पर निर्वाचित हुए। इसके बाद वे पूरी तरह से राजनीति में सक्रिय हो गये। वे 1977 में भारतीय जनता युवा मोर्चा के मंडल अध्यक्ष बनाए गए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मंत्रिमंडल में शामिल मध्यप्रदेश भारतीय जनता पार्टी के पूर्व अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर संगठनात्मक क्षमता के साथ ही प्रशासन पर मजबूत पकड़ और कुशल रणनीतिकार के रूप में जाने जाते हैं। बात करने की बजाए काम को तवज्जो देने वाले तोमर पहली बार प्रदेश के मुरैना संसदीय क्षेत्र से वर्ष 2009 में लोकसभा सदस्य निर्वाचित हुए थे। वे इसके पहले प्रदेश से राज्यसभा सदस्य थे। तोमर इस बार ग्वालियर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से सांसद निर्वाचित हुए। वे युवा मोर्चा में विभिन्न पदों पर रहते हुए 1996 में युवा मोर्चा के प्रदेशाध्यक्ष बनाए गए। तोमर पहली बार 1998 में ग्वालियर से विधायक निर्वाचित हुए और इसी क्षेत्र से वर्ष 2003 में दूसरी बार चुनाव जीता। इस दौरान वे सुश्री उमा भारती, बाबूलाल गौर और शिवराज सिंह चौहान मंत्रिमंडल में कई महत्वपूर्ण विभागों के मंत्री भी रहे। उन्हें वर्ष 2008 में तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष, सोमनाथ चटर्जी ने उत्कृष्ट मंत्री के रूप में सम्मानित किया था। तोमर वर्ष 2008 में भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए और उसके बाद वे 15 जनवरी 2009 में निर्विरोध राज्यसभा सदस्य चुने गए। बाद में वे पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री पद पर रहे। तोमर एक बार फिर 16 दिसम्बर 2012 को पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष बनाए गए थे।

क्रियाशीलता और कार्य कुशलता का ही परिणाम है कि प्रधानमंत्री ने अपने महत्वाकांक्षी अभियानों यथा ''ग्राम उदय से भारत उदय'', ''जन-'धन योजना'', ''सामाजिक सुरक्षा योजना'' की मॉनीटरिंग में केन्द्रीय मंत्रियों के बीच समन्वय का दायित्व श्री तोमर को सौंपा इतना सब करते हुए भी ग्वालियर के ''मुन्ना'' या ''मुन्ना भैया'' अपने नगर, अपने अंचल के साथ शिद्दत से जुड़े रहे । मुन्ना भैया यानी नरेन्द्र सिंह तोमर ने अपने संसदीय क्षेत्र मुरैना,ग्वालियर और चम्बल संभाग के लिए इतना कुछ कर दिया है, जिसे सदियां याद रखेंगी । ग्वालियर का स्मार्ट सिटी में शुमार होना सबसे बड़ी उपलब्धि है। इसके लिए महानगर की सीमा में 5 रेलवे ओवर ब्रिज की स्वीकृति कम बड़ी उपलब्धि नहीं है । रेल यातायात को सुगम बनाने के लिए श्री तोमर के प्रयासों का ही नतीजा है कि मथुरा से झांसी तक तीसरी रेल लाइन की स्वीकृति संभव हो सकी है । इससे रेल की रतार बढ़ेगी और नई ट्रेनों के आवाजाती की संभावनाएँ बढ़ेंगी। ग्वालियर से देश के अन्य महानगरों तक हवाई यात्रा सुगम बनाने में भी श्री तोमर प्रयासरत रहे हैं नरेन्द्र सिंह तोमर के लोक जीवन में उनके द्वारा लोकमंगल के कार्य और प्रयासों की लम्बी फेहरिस्त है ।

युवाओं के रोल मॉडल

जनता के सच्चे जनसेवक

ज्योतिरादित्य

पूर्व केन्द्रीय मंत्री और बीजेपी के राज्यसभा सांसद ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया मध्य प्रदेश की राजनीति में सबसे युवा और प्रभावी चेहरा हैं पिता का सख्त अनुशासन और 6 साल तक दून स्कूल की तालीम, दोनों ने मिलकर उस ज्योतिरादित्य को तैयार किया जो आज नजर आता है। ज्योतिरादित्य का जन्म 1 जनवरी 1971 को हुआ था। उनके पिता स्वर्गीय माधवराव सिंधिया हैं जो कांग्रेस के वरिष्ठ नेता रहे हैं ज्योतिरादित्य सिंधिया अपने पिता की विरासत को आगे बढ़ाते हुए राजनीति के माध्यम से लोगों की सेवा कर रहे हैं।

नपूर्व केन्द्रीय मंत्री बीजेपी राज्यसभा सांसद कद्दावर युवा नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया जनता के सच्चे सेवक हैं यह बात हम नहीं बल्कि कई बार खुद सिंधिया ने ही साबित कर दी है मध्य प्रदेश की कमलनाथ सरकार द्वारा जनता से चुनाव में किए वायदे पूरे नहीं करने पर सिंधिया ने कमलनाथ सरकार को कटघरे में कई बार खड़ा किया और जनता से जुड़े मुद्दों को लेकर उनसे सवाल किए लेकिन जनता से जुड़ीं सिंधिया की मांगों को कांग्रेस सरकार ने हल्के में लिया और कर्जमाफी जैसे कई मुद्दों पर टकराव बढ़ा जिसके बाद ज्योतिरादत्यि सिंधिया ने विकास के लिए समर्पित और विकास की बात करने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से प्रभावित होकर बीजेपी ज्वाइन की और शिवराज सरकार को मध्य प्रदेश में स्थापित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की क्योंकि श्री सिंधिया विकास की राजनीति करते हैं वह जनता के हित की बात करते हैं और शायद उन्हें यह बात समझ आ गई थी कि जनता का विकास सिर्फ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पार्टी ही कर सकती है इसलिए उन्होंने बीजेपी ज्वाइन की और राज्यसभा सदस्य के रूप में संसद पहुंचे और जहां वह निरंतर ग्वालियर अंचल के लिए प्रत्यनशील होकर कार्य कर रहे हैं।

भाजपा में जाने से पहले ज्योतिरादित्य सिंधिया पिता स्व0 माधवराव सिंधिया म0प्र0 में कांग्रेस पार्टी का सबसे युवा व प्रभावशाली चेहरा थे। पिता के सख्त अनुशासन और 6 साल तक दून स्कूल की तालीम इन दोनों ने मिलकर ज्योतिरादित्य सिंधिया को तैयार किया है जो आज उनके व्यक्तित्व को निखार रहा है। ज्योतिरादित्य सिंधिया का जन्म 1 जनवरी 1971 को हुआ उनके पिता स्व0 माधवराव सिंधिया जो कि केन्द्र में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता रहे हैं। ज्योतिरादित्य सिंधिया अपने पिता की राजनैतिक विरासत को आगे बढाते हुए राजनीति के माध्यम से आम

जनों की सेवा कर रहे हैं। हमेशा अपने उद्धबोधन में ज्योतिरादित्य सिंधिया कहते है कि हमारे पूर्वज इस देश और समाज की सेवा विगत 300 वर्षों से करतेआये है इसी परंमपरा को आगे बढ़ाना मेरा कर्म भी है और मेरा धर्म भी हैं। वे आम लोगों से हमेशा कहते है कि हर आदमी के साथ में उसके मुश्किल वक्त में खड़ा हूं। कभी कोई व्यक्ति अपने आप को असहाय और अकेला न समझें। मैं चाहे किसी भी पार्टी में रहूं में हमेशा आम लोगों की सेवा तन, मन और धन से करता रहूंगा।

अभी हाल ही में राज्यसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव के दौरान बीजेपी के राज्यसभा सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया ने मोदी सरकार के लिए शानदार बैटिंग की थी। उन्होंने सदन में अपने पुराने साथियों को खूब धोया था। कृषि कानूनों पर सवाल उठाने वाले लोगों को ज्योतिरादित्य सिंधिया ने मुंहतोड़ जवाब दिया था। पीएम मोदी ने संसद में उनकी तारीफ की है। संसद में कृषि कानूनों पर बोलते हुए पीएम मोदी ने कहा कि हमारे सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया ने इस मुद्दे पर विस्तार से बात की है। उन्होंने अच्छी तरह से सदन में अपनी बात को रखा है। इसके साथ ही प्रधानमंत्री ने कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर का भी जिक्र किया है, उन्होंने अपनी बात सही तरीके से रखा है। ज्योतिरादित्य सिंधिया ने बिना नाम लिए कहा था कि कुछ लोग कोरोना वैक्सीन पर भी सवाल उठा रहे हैं। सिंधिया ने कहा था कि किसान इस देश की रीढ़ है। लेकिन 26 जनवरी को जो हुआ उसे सबने देखा है। कृषि कानून का विरोध कर रहे लोगों को मैं बताना चाहूंगा कि 2019 में कांग्रेस के घोषणा पत्र में कृषि कानून की बात थी। किसानों बात जरूर होनी चाहिए। सरकार ने इस कानून को 18 महीने तक स्थगित करने के फैसले भी लिए हैं। लेकिन आज लोग कृषि कानूनों का विरोध कर रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

अब अबला नहीं आत्मनिर्भर है नारी

भारतीय शास्त्रों में कहा गया है कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता वास करते हैं। भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान काफी ऊंचा है। वैदिक युग में समाज में नारी की भूमिका बेहद अहम थी। लेकिन कालांतर में पुरुषों की वर्चस्ववादी सोच ने महिलाओं को हाशिए पर लाकर खड़ा कर दिया। महिलाओं को अबला समझा जाने लगा। धीरे-धीरे महिलाएं अपने सम्मान के लिए आगे बढ़ने लगी और हाल के दिनों में भारत समाज के विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी उपलब्धि हासिल की। चाहे वो शिक्षा का मामला हो या खेलकूद का, हर क्षेत्र में महिलाएं आगे बढ़ रही हैं। इसके बावजूद बालिकाओं की संख्या कम होने, बाल विवाह, दहेज, महिलाओं के खिलाफ हिंसा, अनेक स्तरों पर शोषण और भेदभाव जैसी बुराइयां मौजूद हैं। इन बुराइयों के खिलाफ एक जंग की जरूरत है।

हर क्षेत्र में अग्रसर आज की नारी महिला सशक्तिकरण की ओर

परिवार के अंदर आज भी अधिकांश यह देखने को आया है कि महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का मौका मिलता ही नहीं। लड़की के जवान होने पर परिवार की सबसे बड़ी चिंता उसकी शादी की होती है। अगर इतनी चिंता उसकी पढ़ाई को लेकर की जाए तो वह आत्मनिर्भर बनकर पूरे परिवार को एक नया रास्ता दिखा सकती है। कम उम्र में लड़कियों की शादी भी हमारे समाज की एक बड़ी समस्या है। लेकिन इन सभी समस्याओं के बीच महिलाओं ने प्रगति की रफ्तार रूकने नहीं दी है। आज जीवन के हर क्षेत्र में वे आगे बढ़ रही हैं। चाहे वह वायुसेना के फाइटर प्लेन उड़ाने की बात हो या फिर सेना में तैनात होकर देश की सेवा करने का मौका, हर जगह महिलाओं का दखल बढ़ रहा है। यह आत्मनिर्भरता की ओर उनकी उड़ान की एक अहम कड़ी है।

सेना में महिलाओं के दखल की बात करें तो सेना के तीनों अंगों में महिला अधिकारी कार्यरत हैं। सेना की चिकित्सा, दंत चिकित्सा और नर्सिंग से संबंधित महिला अधिकारी शामिल हैं। वहीं राज्यों की पुलिस सेवा में महिलाओं को आरक्षण देने पर अमल शुरू हो गया है। ग्राम पंचायतों में महिलाओं के लिए पद आरक्षित रखे गए हैं। अन्य सरकारी नौकरियां चाहे वह केंद्र सरकार की हों या राज्य सरकार की, सभी में महिलाओं के लिए स्थान रिजर्व रखे गए हैं।

नारी आज के बदलते परिवेश में जिस तरह पुरुष वर्ग के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है, वह समाज के लिए एक गर्व और सराहना की बात है. आज राजनीति, टेक्नोलोजी, सुरक्षा समेत हर क्षेत्र में जहां जहां महिलाओं ने हाथ आजमाया उसे कामयाबी ही मिली. अब तो ऐसी कोई जगह नहीं है, जहां आज की नारी अपनी उपस्थिति दर्ज न करा रही हो. और इतना सब होने के बाद भी वह एक गृहलक्ष्मी के रूप में भी अपना स्थान बनाए हुए है. लेकिन सिक्के का दूसरा पहलू भी विचारणीय है जहां आज भी महिलाओं को घर के बाहर न निकलने की हिदायत दी जाती है, रेप या बलात्कार होने पर आत्महत्या पर मजबूरकरने वाला समाज, कन्या भ्रूण हत्या जैसे पाप हमारे समाज के विकास में अवरोध पैदा कर रहे हैं.

हाल ही में भारत ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में अभूतपूर्व कदम उठाते हुए, देश की संसद और राज्य विधानसभाओं में एक तिहाई महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित की. महिला आरक्षण बिल के पास होने से जहां पहले से ही पंचायतों में महिलाओं की हिस्सेदारी 33प्रश से

ज्यादा थी अब उम्मीद है कि देश की सरकार में भी उनकी भागीदारी बढ़ेगी. भ्रूण हत्या के मामलों में भी तेजी से वृद्धि हो रही है. इन हालात में निश्चित ही महिला आरक्षण विधेयक से महिलाओं का संख्या बल इस नकारात्मक परिदृश्य को बदलने में सहायक सिद्ध होगा.

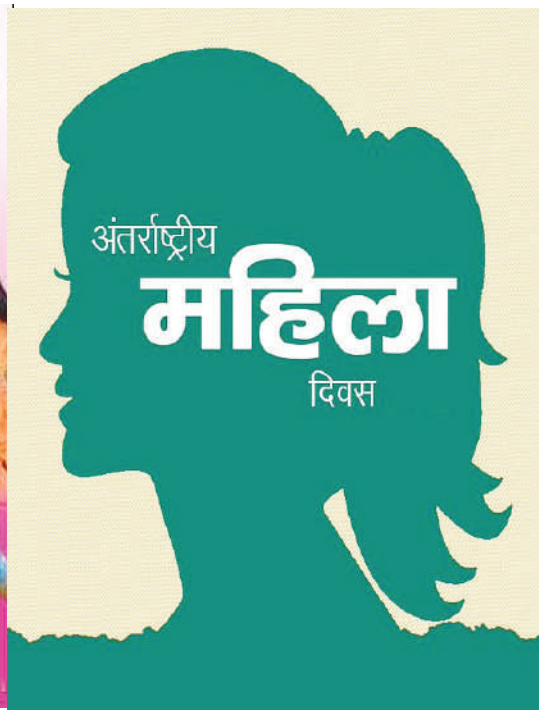

मेहनत और लगन से इन महिलाओं ने बनाई पहचान, आज दुनिया में बजता है इनका डंका

8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का सबसे बड़ा उद्देश्य महिलाओं और पुरुषों में समानता बनाने के लिए जागरूकता लाना है। वैसे तो महिलाओं के सम्मान के लिए किसी खास दिन की जरूरत नहीं होती लेकिन यह एक ऐसा दिन है जब महिलाएं अपनी आजादी का जश्न खुलकर मनाती हैं। यह दिन महिलाओं के प्रति सम्मान और प्यार प्रकट करने का है और इस दिन का महत्व महिलाओं को आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर पहचान दिलाना और महिलाओं की उपलब्धियों को मनाना है। इस खास मौके पर हम आपको उन महिलाओं के बारे में बताने जा रहे हैं, जिन्होंने अपने दम पर देश ही नहीं दुनियाभर में एक अलग मुकाम हासिल किया है।

कल्पना चावला

नासा वैज्ञानिक और अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला का जन्म हरियाणा के करनाल में हुआ था। स्कूली पढ़ाई के बाद कल्पना ने पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज 1982 में ग्रेजुएशन पूरा किया। ग्रेजुएशन के बाद वह अमेरिका चली गईं और आगे की पढ़ाई की। 1995 में कल्पना नासा में अंतरिक्ष यात्री के तौर पर शामिल हुईं। कल्पना अंतरिक्ष में जाने वाली प्रथम भारतीय महिला थीं 1 फरवरी 2003 को अंतरिक्ष से वापस लौटते वक्त कल्पना चावला हादसे का शिकार हो गईं। सभी बेसब्री से उनके लौटने का इंतजार कर रहे थे, लेकिन तभी ये खुशियां मातम में बदल गईं।

कमला हैरिस

20 अक्टूबर 1964 को ऑकलैंड में जन्मी कमला हैरिस अमेरिका की उपराष्टपति हैं। 55 साल की हैरिस

भारतीय मां और जमैकाई पिता की बेटी हैं। कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी से कानून की डिग्री हासिल करने के बाद कमला हैरिस ने सैन फ्रांसिस्को डिस्ट्रिक्ट अटॉर्नी ऑफिस से अपना करियर शुरू किया। 2003 में वह सैन फ्रांसिस्को की शीर्ष अभियोजक बनीं। 2010 में वह कैलिफोर्निया की अटॉर्नी बनने वाली पहली महिला और पहली अश्वेत व्यक्ति थीं। अमेरिका के कई समुदायों में उन्हें पसंद किया जाता है।

एमसी मैरीकॉम

मैरीकॉम का जन्म 1 मार्च 1983 को मणिपुर में एक गरीब किसान परिवार में हुआ था लेकिन मैरीकॉम ने

अपने मेहनत और सफलता के दम पर पहली भारतीय मुक्केबाज बनी जो की 2012 के ओलम्पिक खेल में कास्य पदक जीत चुकी है और यही नही मैरीकॉम 5 बार विश्व मुक्केबाजी में फाइनल विजेता रह चुकी है मैरीकॉम की उपलब्धी का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है उन्हें भारत के सर्वोच्च खेल सम्मान राजीव गाँधी खेल रत्न पुरस्कार से भी नवाजा जा चूका है और तो और उनके जीवन पर आधारित फिल्म भी बन चुकी है जिसे 2014 में प्रदर्शित किया जा चूका है

महिलाओं को पता होने चाहिए उनके ये पांच अधिकार

हमारे जीवन में महिलाओं का काफी महत्व है। महिलाएं कई क्षेत्रों में पुरुषों से भी बेहतर कर रही हैं और अपना नाम ऊंचा कर रही हैं। ऐसे में महिलाओं का कद जितना बढ़ रहा है, इसलिए उन्हें वो अधिकार भी पता होने चाहिए जो उनके लिए हैं। दफ्तर में उनके क्या अधिकार हैं, बाहर उनके क्या अधिकार हैं, घर पर उनके क्या अधिकार हैं, समाज में उनके क्या अधिकार हैं। कौन सा अधिकार उनके कहां काम आ सकता है। ये सब महिलाओं को पता होना चाहिए। हर साल हम 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाते हैं, ताकि महिलाओं को उनका सम्मान मिल सके। तो चलिए हम आपको महिलाओं के अधिकारों के बारे में बताते हैं।

जीरो एफआईआर

अगर कोई महिला बलात्कार पीड़िता है, तो वो भारत के किसी भी पुलिस स्टेशन में अपनी शिकायत दर्ज करवा सकती है, और कोई भी पुलिस स्टेशन पीड़िता की एफआईआर ये कहकर लिखने से मना नहीं कर सकता कि ये क्षेत्र उनके दायरे में नहीं आता, क्योंकि महिलाओं को ये अधिकार दिया गया है कि वो जीरो एफआईआर के तहत किसी भी पुलिस स्टेशन में अपनी शिकायत दर्ज करा सकती है। साथ ही महिलाएं अपनी शिकायत को पंजीकृत डाक या फिर ईमेल के माध्यम से भी पुलिस स्टेशन को भेज सकती है।

बिना इजाजत फोटो/वीडियो नहीं शेयर कर सकता कोई

एक महिला के पास ये पूरा अधिकार होता है कि उसकी तस्वीरों और वीडियो को बिना उनकी इजाजत के कोई भी इंटरनेट/सोशल मीडिया पर अपलोड नहीं कर सकता है। जिस साइट ने या व्यक्ति ने आपकी तस्वीरें अपलोड की हैं, आप उससे सीधा संपर्क कर सकती हैं। ये वेबसाइट कानून के अधीन हैं और इनका अनुपालन करने के लिए बाध्य भी हैं। सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम यानी आईटी एक्ट की धारा-67 और 66-ई बिना किसी भी व्यक्ति की अनुमति के उसके निजी क्षणों की तस्वीर को खींचने, प्रकाशित या प्रसारित करने को निषेध करती है। आपराधिक कानून (संशोधन) अधिनियम 2013 की धारा 354-सी के तहत किसी महिला की निजी तस्वीर को बिना अनुमति के खींचना या साझा करना अपराध माना जाता है।

समान वेतन

आज के दौर में सिर्फ पुरुष ही काम करने नहीं जाते, बल्कि महिलाएं भी काम पर जाती हैं। महिलाएं पढ़-लिखकर इतनी शिक्षित बन रही हैं कि अब वो खुद अपने लिए काम ढूंढकर कर रही हैं। ऐसे में अगर आप किसी कंपनी में काम करते हैं तो आपके पास ये अधिकार है कि आपको भी समान वेतन दिया जाए। दरअसल, समान पारिश्रमिक अधिनियम, 1976 समान कार्य के लिए पुरुष और महिला को समान भुगतान का प्रावधान करता है।

रात में पुलिस अरेस्ट नहीं कर सकती

अगर कोई महिला अपराधी है या उस पर कोई आरोप है, तो सुप्रीम कोर्ट के आदेश के मुताबिक किसी भी महिला को सूरज ढलने के बाद अरेस्ट नहीं किया जा सकता है। यहां तक कि महिला सिपाही तक भी किसी महिला को रात में अरेस्ट नहीं कर सकती है। अगर अपराध काफी ज्यादा संगीन है, तो इस अवस्था में पुलिस को मजिस्ट्रेट को इस बात की लिखित जानकारी देनी होगी कि महिला को रात में अरेस्ट करना क्यों जरूरी है। इसके अलावा महिलाओं के पास पांचवा अधिकार ये होता है कि अगर कोई महिला अपने साथ हुई किसी घटना (ब्लात्कार, कोई हिंसा आदि) की रिपोर्ट घटना के वक्त नहीं करा पाती, तो उसके पास ये अधिकार होता है कि वो काफी दिनों बाद भी शिकायत दर्ज करवा सकती हैं।

राजनीति की पॉवरफुल वुमन लीडर्स

8 मार्च पूरी दुनिया में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है। अब समय काफी बदल गया है, पहले पर्दे के पीछे रह कर महिलाएं काम करती थी लेकिन अब महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं। कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां महिलाओं ने अपनी पहचान न बनाई हो। राजनीति की बात करें तो देश के कई बड़े पदों पर आज महिलाएं आसीन है और उन्होंने अपनी एक अलग छवि लोगों के दिलों में छोड़ी है। आइए आपको बताते हैं ऐसी ही पॉवरफुल वुमन लीडर्स के बारे में जो कई बड़ी जिम्मेदारियां निभा रही हैं।

प्रतिभा पाटिल

प्रतिभा देवी सिंह पाटिल जुलाई 2007 में भारत की पहली महिला राष्ट्रपति बनी थीं। पाटिल ने 27 वर्ष की अवस्था में 1962 में राजनीतिक जीवन का प्रारंभ कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और महाराष्ट्र के भूतपूर्व मुख्यमंत्री यशवंत राव चव्हाण की देखरेख में प्रारंभ किया। 1962 से 1985 तक वे पांच बार महाराष्ट्र विधानसभा की सदस्य रहीं। इस दौरान वर्ष 1967 से 1972 तक वह महाराष्ट्र सरकार में राज्यमंत्री और वर्ष 1972 से 1978 तक कैबिनेट मंत्री रहीं उन्होंने कई महत्वपूर्ण मंत्रालयों का कार्यभार संभाला। सामाजिक कार्यों में वे एक सक्रिय नेता के रूप में जानी जाती हैं।

निर्मला सीतारमण

निर्मला सीतारमन भारत की पहली पूर्णकालिक महिला रक्षा मंत्री रहीं हैं, वर्तमान में फायनेंस मिनिस्टर का कार्यभार संभाल रहीं हैं। रक्षा मंत्री बनने से पहले वे भारत की वाणिज्य और उद्योग (स्वतंत्र प्रभार) तथा वित्त व कारपोरेट मामलों की राज्य मंत्री रह चुकी हैं। निर्मला सीतारमन 2003 से 2005 तक राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्या रह चुकी हैं।

सोनिया गांधी

भारतीय राजनीति में कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी सबसे ताकवर शख्सियतों में से एक मानी जाती हैं। उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष के पद को बाखूबी निभाया। इटली में जन्मी सोनिया गांधी ने राजनीति की बारीकियां अपनी सास इंदिरा गांधी और पति राजीव गांधी से सीखीं। पूर्व सोनिया गांधी ने अपने पति और पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या के बाद बच्चों की खातिर राजनीति से दूरी बना ली थी लेकिन 1996 में कांग्रेस की डूबती नैय्या को पार लगाने के लिए वे एक बार फिर इसमें सक्रिय हुई और पार्टी की कमान संभाली।

सुमित्रा महाजन

लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन इस पर आसीन होने वाली भारत की दूसरी महिला हैं। इससे पहले मीरा कुमार पहली लोकसभा स्पीकर रह चुकी हैं। 72 वर्षीय सुमित्रा महाजन आठ बार से लोकसभा सांसद हैं। सुमित्रा महाजन को प्यार से 'ताई' बुलाते हैं और वह अपने सहृदय स्वभाव के लिए जानी जाती हैं। हर दल में उनके मित्र और प्रशंसक हैं। 12

अप्रैल 1943 को महाराष्ट्र के चिपलुण में जन्मी सुमित्रा के पिता संघ प्रचारक थे। 1989 में प्रकाशचंद्र सेठी के खिलाफ लोकसभा का चुनाव लड़ा और जीत दर्ज की। अटल बिहारी वाजपेयी की राजग सरकार में वे राज्यमंत्री भी रह चुकी हैं।

स्मृति ईरानी

स्मृति ईरानी की राजनीति से लेकर टीवी पर अपनी अलग ही पहचान है। टेलीविजन की बहू और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मुंहबोली छोटी बहन स्मृति ईरानी केंद्रीय मंत्री हैं। टेलीविजन धारावाहिक 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' में 'तुलसी' का किरदार निभा वह हर घर की लाडली बहू बन गई थी।

वसुंधरा राजे

वसुंधरा राजे राजस्थान की पहली महिला मुख्यमंत्री हैं। 1987 में वे राजस्थान भाजपा की उपाध्यक्ष बनी। राजनीति में उनकी मेहनत और कार्यशैली को देखते हुए 1998-1999 में अटल बिहारी वाजपेयी मंत्रिमंडल में राजे को विदेश राज्यमंत्री बनाया गया। 2003 से वे सीएम पद पर आसीन हैं।

ममता बनर्जी

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का राजनीतिक सफर बड़ा ही उम्दा रहा है। उनके अनुयायियों उन्हें दीदी (बड़ी बहन) के नाम से बुलाते हैं। वे अपनी सादगी के लिए जानी जाती हैं। एनडीए की सरकार में ममता रेल मंत्री भी रह चुकी हैं।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का दिख रहा सार्थक असर

पूरे भारत में लड़कियों को शिक्षित बनाने और उन्हें बचाने के लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ नाम से लड़कियों के लिये एक योजना की शुरुआत की। इसका आरंभ हरियाणा के पानीपत में हुआ। पूरे देश में हरियाणा में लिंगानुपात 775 लड़कियाँ पर 1000 लड़कों का है जो बेटीयों की दयनीय स्थिति को दर्शाता है इसी वजह से इसकी शुरुआत हरियाणा राज्य से हुई। लड़कियों की दशा को सुधारने के लिये पूरे देश के 100 जिलों में इसे प्रभावशाली तरीके से लागू किया गया है, सबसे कम स्त्री-पुरुष अनुपात होने की वजह से हरियाणा के 12 जिलों (अंबाला, कुरुक्षेत्र, रिवारी, भिवानी, महेन्द्रगण, सोनीपत, झज्जर, रोहतक, करनाल, यमुना नगर, पानीपत और कैथाल) को चुना गया।

लड़कियों की दशा को सुधारने और उन्हें महत्व देने के लिये हरियाणा सरकार 14 जनवरी को 'बेटी की लोहड़ी' नाम से एक कार्यक्रम मनाती है। इस योजना का उद्देश्य लड़कियों को सामाजिक और आर्थिक रुप से स्वतंत्र बनाना है जिससे वो अपने उचित अधिकार और उच्च शिक्षा का प्रयोग कर सकें। आम जन में जागरुकता फैलाने में ये मदद करता है साथ ही महिलाओं को दिये जाने वाले लोक कल्याणकारी सेवाएँ की कार्यकुशलता को भी बढ़ाएगा। अगर हम 2011 के सेंसस रिपोर्ट पर नजर डाले तो हम पाएँगे कि पिछले कुछ दशकों से 0 से 6 वर्ष के लड़कियों की संख्या में लगातार गिरावट हो रही है। 2001 में ये 927/1000 था जबकि 2011 में ये और गिर कर 919/1000 पर आ गया। अस्पतालों में आधुनिक लक्षण यंत्रों के द्वारा लिंग पता करने के बाद गर्भ में ही कन्या भ्रूण की हत्या करने की वजह से लड़कियों की संख्या में भारी कमी आयी है। समाज में लैंगिक भेदभाव की वजह से ये बुरी प्रथा अस्तित्व में आ गयी। जन्म के बाद भी लड़कियों को कई तरह के भेदभाव से गुजरना पड़ता है जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, खान-पान, अधिकार आदि दूसरी जरुरतें है जो लड़कियों को भी प्राप्त होनी चाहिये। हम कह सकते हैं कि महिलाओं को सशक्त करने के बजाय अशक्त किया जा रहा है। महिलाओं को सशक्त बनाने और जन्म से ही अधिकार देने के लिये सरकार ने इस योजना की शुरुआत की। महिलाओं के सशक्तिकरण से सभी जगह प्रगति होगी खासतौर से परिवार और समाज में। लड़कियों के लिये मानव की नकारात्मक पूर्वाग्रह को सकारात्मक बदलाव में परिवर्तित करने के लिये ये योजना एक रास्ता है। ये संभव है कि इस योजना से लड़कों और लड़कियों के प्रति भेदभाव खत्म हो जाये तथा कन्या भ्रूण हत्या का अन्त करने में ये मुख्य कड़ी साबित हो। इस योजना की शुरुआत करते हुए पीएम मोदी ने चिकित्सक बिरादरी को ये याद दिलाया कि चिकित्सा पेशा लोगों को जीवन देने के लिये बना है ना कि उन्हें खत्म करने के लिये। आज भारतीय नारी ने अपने स्तर पर हर क्षेत्र में सफलता हासिल की है। अगर हम शिक्षा के विषय में बात करें तो पुरुषों की अपेक्षा, महिलाओं में अशिक्षा का स्तर ज्यादा है किन्तु अगर शिक्षित नारी की शिक्षित पुरुष से तुलना की जाए तो वह उनसे कहीं आगे है।

देश में 16.6 प्रतिशत महिलाएं ही शोध व विकास से जुड़ीं

संयुक्त राष्ट्र हर वर्ष 11 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय महिला वैज्ञानिक दिवस मनाता है। इसका मकसद महिलाओं और लड़कियों को स्टेम यानी विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) के क्षेत्र में लाने के लिए प्रोत्साहित करना है। इस बार की थीम कोविड-19 के खिलाफ संघर्ष में अग्रणी महिला विज्ञानी रखी गई है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अनुसार, 2019-20 में 16.6 फीसदी महिलाएं देश में सीधे तौर पर शोध एवं विकास (आरएंडडी) से जुड़ी हैं। यह संख्या पुरुषों की तुलना में बेहद कम है। वहीं आईआईटी दिल्ली के सहयोग से वीमन आत्रप्रीन्योरशिप एवं इमपॉवरमेंट (डब्ल्यूईई) के तहत 170 स्टार्टअप के लिए महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया है। तकनीक के क्षेत्र में देश में इस तरह का यह पहला प्रयास है।

तकनीकी शिक्षा में आगे आ रही हैं बेटियां

संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक भारत में एसटीईएम से 43 फीसदी छात्राएं पढ़ाई कर रही हैं। भारत इस मामले में 17 देशों की सूची में पहले नंबर पर है। इसी सूची में रूस दूसरे नंबर पर है जबकि अमेरिका 34 फीसदी के साथ नौवें नंबर पर है। भारत में काम कर रहे 2.80 लाख वैज्ञानिक, इंजीनियर और टेक्नोलॉजिस्ट में सिर्फ 14 फीसदी महिलाएं हैं। यूनेस्को के आंकड़े के अनुसार, दुनियाभर में केवल 33 फीसदी महिला शोधकर्ता हैं। यह स्थिति तब है जब स्टेम के तहत बैचलर्स और मास्टर्स में दाखिले का प्रतिशत 45 और 55 प्रतिशत है। 44 फीसदी छात्राएं पीएचडी कार्यक्रम में दाखिला लेती हैं। स्वास्थ्य और सामाजिक कार्यों के क्षेत्र में 70 फीसदी महिलाएं हैं, लेकिन उन्हें पुरुषों की तुलना में 11 फीसदी कम वेतन दिया जाता है। कोरोना से लड़ाई में महिलाओं की अहम भागीदारी रही। इलाज और जांच से लेकर दवा की खोज और मरीज की देखरेख में महिलाएं आगे रहीं। देश की डॉक्टर सौम्या स्वामीनाथन विश्व स्वास्थ्य संगठन में चीफ साइंटिस्ट की भूमिका में महामारी से लड़ाई को अंजाम पहुंचाने के लिए काम कर रही हैं। महिलाएं आगे बढ़ रही हैं पर पुरुषों की तुलना में वे काफी पीछे हैं, जिन्हें बराबरी पर लाने के लिए पूरी दुनिया को एकजुट होना होगा।

विज्ञान क्षेत्र में सिर्फ 25 महिलाओं को नोबेल पुरस्कार

अब तक सिर्फ 25 महिलाओं को फिजिक्स, केमिस्ट्री, मेडिसिन और इकनॉमिक्स के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार मिला है। पुरुषों की संख्या बहुत है जिसकी बराबरी करने में महिलाओं को एक सदी लग सकती है।

कोरोना महामारी में भी लड़ती रही नारी

कोरोना महामारी के शुरूआती दिनों में हुए लॉकडाउन में स्त्रियों ने मुश्किलें तो उठायीं लेकिन हार नहीं मानीं। अपने परिवार को बीमारी की भयावहता, भूख की विवशता तथा अवसाद की तीव्र वेदना से निकालने के लिए जूझती रही नारी, अंतराष्ट्रीय महिला दिवस पर नारियों की गौरव गाथा इस विकट परिस्थिति की चर्चा बिना अधूरी है। पिछले साल भारत में शुरू हुई कोरोना महामारी के भय ने लोगों को घरों में बंद कर दिया। सामान्य गतिविधियों में कमी आने के कारण लोगों में अवसाद बढ़ गया। लेकिन कोरोना पहली महामारी नहीं है जिसने दुनिया में तबाही मचायी है बल्कि इससे पहले भी विश्व ने कई घातक बीमारियों का सामना किया है। अस्पतालों में महिला डॉक्टरों, नर्सों, ने कोरोना से पीड़ित मरीजों का जिस तरह से इलाज किया वह वाकई तारीफ के काबिल है उन्होंने अपना घर परिवार को छोड़कर महीनों अस्पतालों में गुजारे और लोगों की सेवाभाव और समर्पण के साथ जिस तरह से कार्य के प्रति समर्पण भाव दिखाया उसकी मिसाल आज दी जाती हैं।

कोरोना महामारी के दौरान सार्वजनिक स्थानों तथा घर के बीच में खीचीं गयी लक्ष्मण रेखा का पुरुषों ने पहली बार अनुभव किया। ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक रूप से ऐसा पहली बार हुआ जब स्त्रियों के साथ पुरुष भी घर की चारदीवारी में बंद थे। इस दौरान न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में स्त्रियों के खिलाफ असहनीय उत्पीड़न की कहानी लिखी गयी। महिलाओं को इस लक्ष्मण रेखा की आदत थी लेकिन इस बार वह घर के अंदर सुरक्षित नहीं थी। इस बार उत्पीड़न की शिकार स्त्रियां घर से बाहर नहीं जा सकती थीं। स्वास्थ्य तथा पेट भरने की कठिनाइयों ने नयी परिस्थितियों को जन्म दिया। इस बार घर में हिंसा तो थी आजीविका हेतु घर के बाहर किए जाने वाले छोटे-मोटे काम भी हाथ से जा रहे थे। सामान्य परिस्थितियों में स्त्रियों को आजीविका हेतु इच्छा न होते हुए भी जबरजस्ती घर से बाहर भेजा जाता था। लॉकडाउन में महिलाओं ने घर में अधिक समय व्यतीत किया। इन परिस्थितियों में वह अनावश्यक घरेलू कामों में लगी रहीं। इसके अलावा कई महिलाओं ने स्वेच्छा से खुद को काम में व्यस्त कर लिया। इसके लिए उन्होंने घर की साफ-सफाई से लेकर साल भर के लिए आचार पापड़ बनाना उचित समझा। महामारी का भय, परिवार को संक्रमण से बचाने, उसका भरण-पोषण करने, अपने काम का उत्तरदायित्व तथा परिवार की जिम्मेदारियां निभाने, बच्चों की

शिक्षा, उनके स्वास्थ्य की देखभाल करने में नारियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जो आगे भी जारी रहेगी। लॉकडाउन के दौरान महिलाओं के लिए वर्क फ्राम होम में भी समस्याएं कम नहीं थी। भारत में अंसगठित क्षेत्र में महिलाओं हेतु कोई वर्क फ्राम होम का तो प्रावधान नहीं था तथा संगठित क्षेत्रों में जिन्हें ऐसी सुविधा मिली वह काम के बोझ से कराह उठीं। पतियों और बच्चों का लगातार घर में रहना अनावश्यक काम के बोझ बढ़ाता चला गया। जो बच्चे पहले डे-केयर सेंटर या कामवालियों के हाथों पलते थे उनकी जिम्मेदारी भी मां की हो गयी। यही नहीं बच्चों की ऑनलाइन कक्षाओं ने उन्हें घंटों लैपटॉप के सामने बैठने को मजबूर कर दिया। महामारी के दौरान सामाजिक दूरी ने न केवल बच्चों को उनके दादा-दादी, नाना-नानी तथा पड़ोसियों से दूर किया बल्कि दोस्तों के साथ खेलने में भी परेशानी खड़ी की। ऐसी परिस्थितियों में मां के ऊपर काम का बोझ बढ़ता चला गया।

आजादी का अमृत महोत्सव में पीएम बोले-

हमें हमारे लोकतंत्र पर गर्व, हम बढ़ रहे तेजी से आगे

केंद्र सरकार ने 12 मार्च 2021 से 15 अगस्त 2022 तक आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाने की घोषणा की है। इसी सिलसिले में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नमक सत्याग्रह के 91 वर्ष पूरे होने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अहमदाबाद के साबरमती आश्रम में अमृत महोत्सव की शुरुआत करते हुए इसकी वेबसाइट लॉन्च की। उन्होंने दांडी मार्च यात्रा को भी हरी झंडी दिखाई। इस यात्रा में शामिल 81 लोग 386 किमी की यात्रा कर 5 अप्रैल को दांडी पहुंचेंगे।

पीएम मोदी ने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव यानी आजादी की ऊर्जा का अमृत। स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणाओं का अवसर, नई ऊर्जाओं और संकल्पों का उत्सव। यह राष्ट्र के जागरण का उत्सव है। स्वराज के सपनों को पूरा करने का अवसर है। वैश्विक शांति को बनाए रखने का महोत्सव है। आज एक यात्रा भी शुरू होने जा रही है। यह संयोग ही है कि दांडी यात्रा का प्रभाव ऐसा है कि देश आज भी आगे बढ़ रहा है। गांधी जी की इस एक यात्रा ने भारत के नजरिए को पूरी दुनिया तक पहुंचा दिया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारे युवा, हमारे ये ज़िम्मेदारी उठाएँ कि वो हमारे स्वाधीनता सेनानियों के इतिहास लेखन में देश के प्रयासों को पूरा करेंगे। आज़ादी के आंदोलन में और उसके बाद हमारे समाज की जो उपलब्धियां रही हैं, उन्हें दुनिया के सामने और प्रखरता से लाएँ.पीएम ने कहा कि मैं कला-साहित्य, नाट्य जगत, फिल्म जगत और डिजिटल इंटरनेटनमेंट से जुड़े लोगों से भी आग्रह करूंगा, कितनी ही अद्वितीय कहानियाँ हमारे अतीत में बिखरी पड़ी हैं, इन्हें तलाशिए, इन्हें जीवंत कीजिए.प्रधानमंत्री ने कहा कि कोरोना काल में ये हमारे सामने प्रत्यक्ष सिद्ध भी हो रहा है. मानवता को महामारी के संकट से बाहर निकालने में, वैक्सीन निर्माण में भारत की आत्मनिर्भरता का आज पूरी दुनिया को लाभ मिल रहा है.

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज भी भारत की उपल्धियां आज सिर्फ हमारी अपनी नहीं हैं, बल्कि ये पूरी दुनिया को रोशनी दिखाने वाली हैं, पूरी मानवता को उम्मीद जगाने वाली हैं.हम भारतीय चाहे देश में रहे हों, या फिर विदेश में, हमने अपनी मेहनत से खुद को साबित किया है. हमें गर्व है हमारे संविधान पर. हमें गर्व है हमारी लोकतांत्रिक परंपराओं पर. लोकतंत्र की जननी भारत, आज भी लोकतंत्र को मजबूती देते हुए आगे बढ़ रहा है- भारत की आत्मनिर्भरता से ओतप्रोत हमारी विकास यात्रा पूरी दुनिया की विकास यात्रा को गति देने वाली है. पीएम ने कहा कि अंडमान में जहां नेताजी सुभाष ने देश की पहली आज़ाद सरकार बनाकर तिरंगा फहराया था, देश ने उस विस्मृत इतिहास को भी भव्य आकार दिया है. अंडमान निकोबार के द्वीपों को स्वतन्त्रता संग्राम के नामों पर रखा गया है. जालियाँवाला बाग में स्मारक हो या फिर पाइका आंदोलन की स्मृति में स्मारक, सभी पर काम हुआ है. बाबा साहेब से जुड़े जो स्थान दशकों से भूले बिसरे पड़े थे, उनका भी विकास देश ने पंचतीर्थ के रूप में किया है. मोदी ने कहा कि देश इतिहास के इस गौरव को सहेजने के लिए पिछले छह सालों से सजग प्रयास कर रहा है. हर राज्य, हर क्षेत्र में इस दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं.

मध्य प्रदेश में अमृत महोत्सव कार्यक्रम में सीएम शिवराज और प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा व अन्य।

GOONJ

टीकाकरण की रफ्तार में इजाफा

पीएम मोदी के डोज लेने के बाद वैक्सीन पर बढ़ा विश्वास

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से कोरोना वायरस का टीका लगाने के बाद देश में टीकाकरण की रफ्तार में 4 गुना का इजाफा हुआ है। देश में प्रति 100 लोगों पर कोरोना टीके की खुराक की संख्या 0.41 से 1.56 पर पहुंच गई है। ब्लूमबर्ग और जॉन्स हॉपकिंस यूनिवर्सिटी की ओर से इकट्ठा किए गए आंकड़ों के मुताबिक भारत में अब तक लगभग 21 (2 करोड़ से अधिक) मिलियन खुराक दिए जा चुके हैं। आंकड़ों के अनुसार देश में प्रति 100 लोगों पर कोरोना टीके की खुराक की संख्या 0.41 से 1.56 पर पहुंच गई है। सरकार की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबित एक दिन में 15 लाख से अधिक लोगों को टीके की खुराक दी गई। बता दें कि देशभर में टीकाकरण के दूसरे चरण की शुरुआत 1 मार्च से हुई है। दूसरे चरण का पहला टीका पीएम मोदी ने लगवाया था। पीएम मोदी के टीका लेने के बाद कहीं न कहीं लोगों में विश्वास बढ़ा है और लोग अब टीका लगवाने के लिए आगे आ रहे हैं। कहीं-कहीं के टीकाकरण सेंटरों और अस्पताल में लाइन लगी हुई भी नजर आई थी।

कोवैक्सिन असरदार, नए स्ट्रेन से भी लड़ेगी

भारत बायोटेक ने स्वदेशी वैक्सीन कोवैक्सिन को लेकर बड़ी खुशखबरी दी है। कंपनी ने वैक्सीन के फेज-3 के क्लीनिकल ट्रायल्स के अंतरिम नतीजे जारी कर दिए। यह वैक्सीन 81त्न तक असरदार साबित हुई है। सरकार ने जनवरी के पहले हफ्ते में वैक्सीन को इमरजेंसी अप्रूवल दिया था। सरकार का यह फैसला विशेषज्ञों के निशाने पर था क्योंकि वे फेज-3 के नतीजे देखे बिना इमरजेंसी अप्रूवल के खिलाफ थे। हैदराबाद की कंपनी भारत बायोटेक ने इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च के साथ मिलकर यह वैक्सीन डेवलप की है। खास बात यह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत कई मंत्रियों ने हाल ही में कोवैक्सिन के ही डोज लिए हैं। आईसीएमआर के महानिदेशक डॉ. बलराम भार्गव ने कहा कि 8 महीने से भी कम समय में प्रभावी कोरोना वैक्सीन-कोवैक्सिन विकसित की है और यह आत्मनिर्भर भारत की सही तस्वीर पेश करती है। भारत बायोटेक के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. कृष्णा एल्ला का कहना है कि यह हमारे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि वाला दिन है। क्लीनिकल ट्रायल्स के तीनों फेज में हमने 27 हजार वॉलंटियर्स पर अपनी वैक्सीन का प्रयोग किया है। फेज-3 क्लीनिकल ट्रायल्स के नतीजों के साथ यह साबित हो गया है कि कोवैक्सिन

कोरोनावायरस के खिलाफ असरदार है। यह वैक्सीन तेजी से सामने आ रहे कोरोनावायरस के अन्य वैरिएंट्स के खिलाफ भी कारगर है। कोवैक्सिन के फेज-3 क्लीनिकल ट्रायल्स में 25,800 वॉलंटियर्स शामिल हुए थे। यह भारत में कोरोना वैक्सीन के क्लिनिकल ट्रायल में शामिल होने वालों का अब तक का सबसे बड़ा आंकड़ा है। इनमें 2,433 लोग 60 वर्ष से ज्यादा उम्र के थे, जबकि 4,500 वॉलंटियर्स गंभीर बीमारियों से जूझ रहे थे। इनमें से 43 वॉलंटियर्स कोरोनावायरस से इंफेक्टेड पाए गए हैं। 36 प्लेसिबो ग्रुप के थे, जबकि सिर्फ 7 वैक्सीन ग्रुप के। इस आधार पर वैक्सीन की इफेक्टिवनेस 80.6त्न रही है।

देशभर में तेजी से बढ़ रहे आंकड़े फिर डरा रहा कोरोना

“ कोरोना वायरस की नई लहर से दिल्ली से महाराष्ट्र तक का बुरा हाल होता दिख रहा है। एक बार फिर से महाराष्ट्र कोरोना की रडार पर है और यहां मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। दिल्ली में भी कोरोना की रफ्तार तेज होती जा रही है। दिल्ली में जहां एक दिन में 400 से अधिक कोरोना के केस सामने आए, वहीं महाराष्ट्र में यह आंकड़ा 14 हजार पार कर गया। नागपुर में कोरोना लॉकडाउन का ऐलान कर दिया गया है, मगर जिस तरह से मामले बढ़ रहे हैं, ऐसी आशंका जताई जा रही है कि ऐसे प्रतिबंध अन्य कई जगहों पर लग सकते हैं।

इस साल की शुरुआत में जब कोविड-19 की वैक्सीन लगनी शुरू हुई तो उम्मीद जगने लगी थी कि अब कोरोना पर नियंत्रण पा ही लेंगे। इस बीच, सुखद आंकड़े आये और कोरोना संक्रमितों की संख्या में गिरावट भी देखी गयी, लेकिन पिछले कुछ दिनों से लगातार बढ़ रहे मामलों ने सबकी चिंता बढ़ा दी है। पंजाब के चार जिलों समेत भारत के अनेक राज्यों के कई इलाकों में नाइट कर्फ्यू लगा दिया गया है। कुछ जगहों पर चेतावनी जारी कर दी गयी है। कई जगह मॉल, रेस्तरां और थियेटरों को दोबारा बंद करने पर विचार चल रहा है। कोरोना वायरस के फिर से पैर पसारने का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि देश में लगातार तीसरे दिन 18 हजार से अधिक नये मामले सामने आए हैं। इसके साथ ही मरीजों के ठीक होने की दर में भी गिरावट दर्ज की गई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की रिपोर्ट के मुताबिक इस वायरस से अब तक 1 लाख 57 हजार 853 लोग जान गंवा चुके हैं। रविवार-सोमवार के बीच जिन 97 लोगों की मौत हुई, उनमें से महाराष्ट्र के 38, पंजाब के 17 और केरल के 13 लोग थे। इस वक्त कोरोना के ज्यादा मामले महाराष्ट्र, केरल, पंजाब, कर्नाटक, गुजरात और तमिलनाडु में हैं। उसके बाद हरियाणा, दिल्ली, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भी मामले बढ़ रहे हैं। इस महामारी पर काबू पाने के लिए बेशक टीकाकरण अभियान तेजी से आगे बढ़ रहा है, लेकिन हर व्यक्ति तक इसकी पहुंच अभी दूर की कौड़ी है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक अब तक वैक्सीन की करीब 2.10 करोड़ खुराकें दी जा चुकी हैं। वैक्सीनेशन अभियान जारी रहने का यह अर्थ कतई नहीं कि कोरोना पर हमने काबू पा लिया है। इससे बचाव के लिए वही सावधानियां अब भी जरूरी हैं, जो शुरुआत से चल रही थीं। यानी पर्याप्त दूरी

बनाकर रहें, सार्वजनिक स्थलों पर मास्क पहनें, हाथों को सैनेटाइज करें या साबुन से धोते रहें। कोरोना के प्रति सावधानी के लिए अनेक माध्यमों से चेताये जाने के बावजूद ज्यादातर इलाकों का माहौल देखने से लग रहा है जैसे लोग अब मान चुके हैं कि यह महामारी चली गयी। उधर, सरकारें कोरोना के खिलाफ कदम तो उठा रही हैं, लेकिन बिना सुरक्षा उपायों के रैलियों, सभाओं का दौर बदस्तूर जारी है, खासतौर से चुनावी राज्यों में। इन दोहरे मापदंडों से बचना होगा। आम जनता को भी समझना होगा कि कोरोना से बचाव के जो जरूरी नियम-कायदे हैं, उनमें ढिलाई बिल्कुल न बरती जाये। संक्रमण की यह बीमारी एक से अनेक लोगों में फैलती है। इसलिए इस चेन को तोड़ना जरूरी है। याद कीजिए सालभर पहले का मंजर। इन्हीं दिनों पूरे विश्व से कोरोना की खौफनाक तस्वीर सामने आने लगी थी। यूं तो बदलते मौसम में स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना होता है, फिर कोरोना काल में कुछ सावधानियों का सख्ती से पालन और अहम हो जाता है। कोशिश करें कि बिना काम घर से बाहर न निकलें, निकलना ही पड़े तो मास्क लगाकर जायें। पर्याप्त दूरी बनाकर रखें। घर में बुजुर्गों और बच्चों का विशेष ध्यान रखें। वैक्सीनेशन की बारी आ गयी हो तो डॉक्टरी सलाह पर उसे लगायें। ध्यान रहे कोरोना को मात देने के लिए हम सबको एक होना पड़ेगा। यह जिम्मेदारी सिर्फ सरकारों की नहीं है। हमें यह भी समझना होगा कि दिनों को गिनने से वायरस नहीं चला जाएगा। इस बात का कोई मतलब नहीं कि लंबा वक्त हो गया, अब कोरोना कहीं नहीं है। कोरोना महामारी का खौफ अभी भी वैसा ही है, जैसा पहले था, बल्कि कई देशों में तो इसके नये स्वरूप के सामने आने की सूचनाएं हैं। गनीमत है कि भारत में नये स्वरूप के ज्यादा मामले नहीं हैं। कोरोनामुक्त भारत के लिए लापरवाही वाली आदत सबको छोड़नी होगी। सावधानी से चलेंगे तो निश्चित रूप से इस महामारी से भी पार पा लेंगे, लेकिन सावधानी हटेगी तो दुर्घटना घटेगी ही। महामारी से निपटने में हर किसी को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। सरकारों, सियासी दलों की ओर से उचित कदम उठें, सकारात्मक संदेश मिलें और आम जनता जागरूक रहे, तभी बीमारी का यह वायरस खत्म होगा।

पांच राज्यों के चुनाव नतीजों से बदल सकते हैं सत्ता के समीकरण

कौन बनेगा किंगमेकर

चुनाव आयोग की ओर से 5 राज्यों में चुनाव की तारीखों के ऐलान के साथ ही सत्ता की लड़ाई का बिगुल बज चुका है। असम, पश्चिम बंगाल, केरल, तमिलनाडु और पुडुचेरी में चुनाव के नतीजे 2 मई को एक साथ ही घोषित किए जाएंगे। इन 5 राज्यों के चुनाव नतीजे देश में सत्ता के समीकरणों में भी 5 बड़े बदलाव ला सकते हैं। पश्चिम बंगाल में एक तरफ टीएमसी और बीजेपी के बीच जोरदार लड़ाई देखने को मिल सकती है तो केरल में वामपंथी दल अपने अस्तित्व के लिए लड़ रहे हैं। पुडुचेरी में चुनाव से पहले राष्ट्रपति शासन लगा है और बीजेपी मजबूती से उभरती दिख रही है। ऐसे में इन राज्यों के चुनाव अहम हैं और सत्ता के समीकरण में बड़े बदलाव का कारण बन सकते हैं। आइए जानते हैं, चुनावों के बाद हो सकते हैं क्या बदलाव...

बीजेपी ने 2014 के लोकसभा चुनावों के बाद देश के कई ऐसे राज्यों में अपनी पैठ मजबूत की है, जहां वह पहले बहुत अच्छी स्थिति में नहीं थी। हरियाणा से लेकर असम तक ऐसे कई उदाहरण हैं। ऐसे में यदि पश्चिम बंगाल में बीजेपी जीत हासिल करती है तो पहली बार पूर्वी छोर पर भगवा लहराएगा। पश्चिम बंगाल से तमिलनाडु तक पूर्वी छोर पर बीजेपी कमजोर रही है। 2019 के आम चुनाव में बंगाल में 40 पर्सेंट वोट शेयर हासिल करने वाली बीजेपी को इस बार बड़ी उम्मीदें हैं। यही नहीं तमिलनाडु में भी एआईएडीएमके के समर्थन से वह कुछ बेहतर करने की कोशिश करेगी। भारत में पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा और केरल को वामपंथी दलों के गढ़ के तौर पर जाना जाता था। आज पश्चिम बंगाल में वामपंथी दल मुख्य मुकाबले से भी बाहर दिख रहे हैं। वहीं त्रिपुरा में बीजेपी सरकार बना चुकी है। ऐसे में केरल ही एक ऐसा राज्य है, जहां लेफ्ट की सरकार है। पिनराई विजयन के चेहरे पर चुनाव लड़ रहे वामपंथी दलों को यदि यहां शिकस्त झेलनी पड़ती है तो फिर वह किसी भी राज्य में सत्ता में नहीं रह जाएंगे। केरल में वामपंथी पार्टी सीपीएम के लिए यह चुनाव करो या मरो की स्थिति वाला है।

2014 के बाद बीजेपी के उभार जिस तरह से हुआ है, उसमें देश में कुछ ही क्षेत्रीय दल हैं, जो बेहद मजबूत हैं। इन दलों में से एक टीएमसी भी है। यदि पश्चिम बंगाल की सत्ता से टीएमसी बेदखल होती है तो एक मजबूत क्षेत्रीय

दल की हैसियत भी उसकी नहीं रहेगी। बीएसपी और एसपी जैसे दलों के कमजोर होने के बाद टीएमसी का कमजोर होना राष्ट्रीय राजनीति के समीकरणों पर असर डालेगा। इसके अलावा तमिलनाडु में डीएमके ने लोकसभा में बड़ी संख्या में सीटें जीतकर मजबूत स्थिति हासिल की है। यदि विधानसभा चुनाव में वह जीत जाती है तो उसका कद राष्ट्रीय राजनीति में भी बढ़ जाएगा। लोकसभा की कुल 543 सीटों में केरल, तमिलनाडु और असम की हिस्सेदारी 13 पर्सेंट है। 2019 के आम चुनावों में कांग्रेस को कुल 52 सीटें मिली थीं, जिनमें से आधी सीटें उसने इन्हीं राज्यों से हासिल की थीं। ऐसे में कांग्रेस के लिए ये तीनों राज्य अहम हैं। तमिलनाडु में कांग्रेस डीएमके के साथ जूनियर पार्टनर के रोल में है। वहीं केरल में वह यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट की मुखिया है। लेफ्ट, कांग्रेस के अलावा बीजेपी भी वहां बड़ा प्लेयर बनने की कोशिश में है। यदि त्रिकोणीय मुकाबला होता है और कांग्रेस के हाथ से बाजी निकलती है तो उसके लिए बड़ा झटका होगा। असम में कांग्रेस ने इस चुनाव में पहली बार के साथ गठबंधन का फैसला लिया है। मुख्य तौर पर मुस्लिमों में आधार रखने वाली ढृष्ठस्न के साथ उसके गठबंधन की भी परीक्षा होगी। पश्चिम बंगाल, केरल और असम जैसे राज्यों में बड़ी संख्या में मुस्लिम और ईसाई आबादी है। ऐसे में ये राज्य ध्रुवीकरण की राजनीति के लिए भी अहम माने जा रहे हैं। पश्चिम बंगाल में तो जय श्री राम का नारा, सरस्वती पूजा और मुस्लिम तुष्टीकरण चुनावी मुद्दे बन चुके हैं। ऐसे में यह देखना होगा कि ध्रुवीकरण के इन मुद्दों पर वोटर्स का क्या रुख रहता है।

क्या उत्तर प्रदेश में लगा पाएगी नैया पार प्रियंका

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने उत्तर प्रदेश की सियासी गंगा में कांग्रेस की तीन दशक से जर्जर हो चुकी नाव की पतवार संभाल कर नाव को मझधार में उतार दिया है। उन्हें अगले दस-ग्यारह महीनों में पार्टी की इस नाव को उस मुकाम तक पहुंचाना है, जहां से देश के सबसे बड़े और सबसे अहम सियासी राज्य की सत्ता का सिंहासन है। चुनौती बड़ी है और यह चुनौती कांग्रेस से ज्यादा खुद प्रियंका के लिए है, क्योंकि इस सियासी अग्निपरीक्षा से ही कांग्रेस महासचिव के लिए सियासत के किले का वह बंद दरवाजा खुलेगा, जो उन्हें उस मुकाम तक पहुंचा सकता है, जो कभी उनकी दादी ने कांग्रेस के भीतर और बाहर संघर्ष करके अपने लिए बनाया था।

उत्तर प्रदेश की सियासी जमीन पर जो तोड़ मेहनत करनी होगी और इसके लिए सिर्फ प्रियंका गांधी का करिश्मा ही काफी नहीं होगा, बल्कि उन्हें अपने साथ पार्टी नेताओं की एक एसी मजबूत टीम तैयार करनी होगी, जो विरोधियों की हर चाल का माकूल जवाब दे सके और उनकी मेहनत को जमीन पर उतार सके। कांग्रेस के भीतरी सूत्रों का कहना है कि खुद प्रियंका इसे लेकर बेहद गंभीर हैं और उन्होंने इस पर विचार भी शुरू कर दिया है। मुमकिन है कि जल्दी ही उनकी नई टीम सामने भी आ जाए।

जहां तक प्रदेश में मौजूदा कांग्रेस का सवाल है तो 1989 से अब तक कांग्रेस हर विधानसभा चुनाव में इतना हारी है कि अब हारने के बाद उसके नेताओं के पास रोने के आंसू तक नहीं बचे हैं, इसलिए अगर 2022 भी हार गई तो पार्टी के थक चुके और छके नेताओं की सेहत पर कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है, लेकिन प्रियंका गांधी के सियासी सफर पर जरूर ग्रहण लग जाएगा। हालांकि यह कहा जा सकता है कि 2019 के लोकसभा चुनावों में प्रियंका के करिश्मे का इम्तिहान हो चुका है क्योंकि कांग्रेस ने बड़ी उम्मीदों और दावों के साथ उनको मैदान में उतारा था। लेकिन 2019 का मुकाबला प्रियंका का नहीं बल्कि नरेंद्र मोदी और राहुल गांधी के बीच था, जिसमें मोदी ने बाजी मारी और राहुल विफल रहे।

प्रियंका उस चुनाव में महज राहुल की सहायक थीं और जब नायक असफल होता है तो पूरी टीम असफल होती है। लेकिन इस बार 2022 में उत्तर प्रदेश में राहुल के नहीं प्रियंका के हाथों में कमान है और मुकाबला उनके, अखिलेश, मायवाती और योगी आदित्यनाथ के

बीच होगा। अभी तक योगी आदित्यनाथ सवा तीन सौ से ज्यादा विधायकों के प्रचंड बहुमत के साथ उस भाजपा के रथ पर सवार हैं जिसके पास राज्य की सत्ता, केंद्र की सत्ता, राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ का पूरा संगठन तंत्र, जिसमें सभी अनुषांगिक संगठन शामिल हैं, अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के साथ भगवा वस्त्रधारी मुख्यमंत्री के हिंदुत्व का बल समेत नरेंद्र मोदी जैसा लोकप्रिय नेता, अमित शाह जैसा रणनीतिकार और जेपी नड्डा जैसा सक्रिय पार्टी अध्यक्ष है।

1993 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की नैया में भाजपा की राम लहर और सपा-बसपा के गठबंधन से दो सुराख हुए। फिर 1996 के विधानसभा चुनावों में राष्ट्रीय स्तर पर हुए पार्टी के विभाजन से जूझती कांग्रेस ने बसपा के सामने समर्पण गठबंधन करके अपनी नाव के पटरे ही तोड़ दिए। तब राज्य की तत्कालीन 425 विधानसभा सीटों में से 300 सीटों पर कांग्रेस ने उम्मीदवार नहीं उतारे और यहां उसके कार्यकर्ताओं को या तो घर बैठना पड़ा या फिर सपा, बसपा और भाजपा में जाकर अपनी राजनीतिक पिपासा शांत करनी पड़ी। यही हाल उसके समर्थक जनाधार वर्ग का भी हुआ। 2002 और 2007 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस अपने प्रदेश नेताओं के झगड़ों में इस कदर उलझी कि उसकी नाव में अनगिनत सुराख हो गए। 2012 का विधानसभा चुनाव राहुल गांधी की कमान में कांग्रेस ने बहुत जुझारू तरीके से लड़ा, लेकिन जिस तरह सिकंदर के सामने पोरस को अपने हाथियों की भगदड़ के कारण हारना पड़ा था, कुछ उसी तरह कांग्रेस के दिग्गजों ने ऐसी भगदड़ मचाई कि राहुल गांधी की तमाम आक्रामकता और मेहनत के बावजूद कांग्रेस की नाव फिर मझधार में डूब गई। 2017 में लगा कि कांग्रेस इस बार नए तरीके से चुनाव लड़ेगी और अगर जीत नहीं सकी तो भी अपनी वापसी प्रभावशाली तरीके से कर सकेगी

मुश्किल समय में पूरी दुनिया का भरोसा जीतने में कामयाब रहा है भारत

आज दुनिया के देशों में चीन खलनायक बन कर उभरा है तो पाकिस्तान अलग-थलग होने के साथ ही याचक की दृष्टि में आ गया है। अमेरिका में जिस तरह से ट्रंप ने जाते-जाते लोकतंत्र की हत्या करने के प्रयास किए वह जगजाहिर है तो रूस भी अब पहले वाली स्थिति में नहीं रहा। बात चाहे कोविड महामारी की हो या चिकित्सा और स्वास्थ्य के क्षेत्र की या शांति रक्षा मिशनों की हो या जलवायु परिवर्तन की या आर्थिक क्षेत्र की हो या आतंकवाद के खिलाफ कदम उठाने की, आज दुनिया के देश भारत की ओर आशा और विश्वास डुकी दृष्टि से देखने लगे हैं। अब वैश्विक मंचों पर भारत को लेकर दुनिया के देशों द्वारा दिए जा रहे संदेशों में भारत की सर्वोच्चता प्रमुखता से उजागर होने लगी है। पिछले सप्ताह ही विश्व सतत विकास शिखर सम्मेलन 2021 को संबोधित करते हुए संयुक्त राष्ट्र की उपमहासचिव अमीनो मोहम्मद ने अपने संबोधन में कहा कि भारत पर वैश्विक समुदाय का भरोसा बढ़ा है। दुनिया के देश भारत की और आशाभरी दृष्टि से देखने लगे हैं। मोहम्मद ने कहा कि भारत जी-20 में शामिल दुनिया के देशों में इकलौता ऐसा देश है जो राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान के उद्देश्यों को बेहतरीन तरीके से हासिल करेगा।

दरअसल देखा जाए तो अब भारत दुनिया के देशों में महाशक्तियों के पिछलग्गू देशों में ना होकर नेतृत्व देने की स्थिति में आने लगा है। आज दुनिया के देश कोविड वैक्सीन के लिए भारत की ओर देख रहे हैं। भारत ने ना केवल छह महीनों में कोविड वैक्सीन सफलतापूर्वक विकसित कर ली अपितु दुनिया के देशों द्वारा इस वैक्सीन को मान्यता भी तेजी से मिली। भारत ने पड़ोसी देशों को करोड़ों की संख्या में जहां वैक्सीन निःशुल्क उपलब्ध कराने की पहल की है वहीं ब्राजील आदि देश भारतीय वैक्सीन की जल्दी से जल्दी सप्लाई की मांग कर रहे हैं। देश में भी वैक्सीन का दूसरा चरण आरंभ हो गया है। भारतीय वैक्सीन के साइड इफेक्ट ना के बराबर होने से दुनिया के देशों का इस पर भरोसा बढ़ा है। इससे पहले कोविड के विरुद्ध संघर्ष में अमेरिका सहित दुनिया के देशों में भारतीय दवा की बहुत अधिक मांग देखी गई और स्थिति यहां तक हो गई कि विदेशों में दवा नहीं भेजने के संकल्प के बावजूद देश को निर्णय परिवर्तित करना पड़ा। यह हमारी दवाओं की विश्वसनीयता का ही कारण है। दुनिया के देशों में कोविड वैक्सीन ही नहीं भारत द्वारा तैयार जीवन रक्षक वैक्सीनों का सबसे अधिक विश्वास रहा है यही कारण है कि टिटनेस से लेकर अधिकांश बीमारियों के टीकों की सप्लाई भारत कर रहा है।

आज दुनिया के देशों में चीन खलनायक बन कर उभरा है तो पाकिस्तान अलग-थलग होने के साथ ही याचक की दृष्टि में आ गया है। अमेरिका में जिस तरह से ट्रंप ने जाते-जाते लोकतंत्र की हत्या करने के प्रयास किए वह जगजाहिर है तो रूस भी अब पहले वाली स्थिति में नहीं रहा। इंग्लैण्ड अपनी समस्याओं से जूझ रहा है तो फ्रांस आए दिन आतंकवादी गतिविधियों से दो-चार हो रहा है। ऐसे में दुनिया के देशों की भारत के प्रति आशाभरी दृष्टि

से देखना जायज भी हो जाता है और इसका सबसे बड़ा कारण दुनिया के देशों का भरोसा जीतना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विश्व सतत विकास शिखर सम्मेलन 2021 का वर्चुअल उद्घाटन करते हुए साफ कर दिया कि इस तरह के वैश्विक सम्मेलन वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए बहुत जरूरी हैं। नागरिकों के स्वास्थ्य के साथ ही पृथ्वी के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना होगा। भारत पेरिस संबंधी प्रतिबद्धताओं और लक्ष्यों को हासिल करने की राह पर है। हम 2030 तक 450 गीगावाट अक्षय ऊर्जा उत्पादन क्षमता स्थापित करने की राह पर बढ़ रहे हैं। 2019 में भारत ने लगभग शतप्रतिशत विद्युतीकरण का लक्ष्य हासिल कर लिया है वहीं सालाना 80 लाख टन कार्बन डाईआक्साइड उत्सर्जन कम किया है। यह शुभ संकेत हैं। देखा जाए तो अब दुनिया के देशों का भारत के प्रति नजरिया बदला है। अब भारत सांप सपेरों का देश ना होकर दुनिया के देशों को नेतृत्व देने की स्थिति में आ गया है। जल्दी ही हमारी अर्थव्यवस्था दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने जा रही है तो समग्र विकास का पहिया तेजी से घूमने लगा है। इज ऑफ डूइंग में हमने लंबी छलांग लगाई है। कोरोना के इस दौर में दुनिया के देश निवेश की दृष्टि से भारत की और रुख कर रहे हैं। आईटी के क्षेत्र में भारतीय युवाओं का लोहा माना जा रहा है। यही कारण है कि लाख प्रयासों के बावजूद भारतीय युवा आज अमेरिका की आईटी कंपनियों के लिए अनिवार्य जरूरत बन गए हैं। अंतरिक्ष में अपने उपग्रहों को स्थापित कराने में भारतीय सैटेलाइट यान की सहायता ली जा रही है। आज भारत मेडिकल पर्यटन के क्षेत्र में तेजी से उभर रहा है तो कोविड को छोड़ दिया जाए तो विदेशी पर्यटकों की पहली पसंद भारत बनता जा रहा है। चीन जैसी महाशक्ति को चुनौती देने में भारत सक्षम हुआ है। यह चुनौती चाहे सीमा पर हो या अन्य क्षेत्रों में। चीनी एपों पर रोक लगाकर सीधे-सीधे चीन को चुनौती दी जा चुकी है। यह सब समग्र प्रयासों का परिणाम है।

दुनिया के देशों के विश्वास और भरोसे को बनाए रखने के लिए भारत को और अधिक सतर्कता और दूरदृष्टि से आगे बढ़ना होगा। देश की जिस तरह की छवि बनती जा रही है इस छवि का सकारात्मक उपयोग करते हुए भारतीय उत्पादों को, सेवा क्षेत्र को दुनिया के नक्शे पर आगे बढ़ाना है ताकि इस भरोसे का अधिक से अधिक लाभ लिया जा सके।

देवों के देव महादेव

भगवान शिव का त्यौहार है महाशिवरात्रि

शिवरात्रि के प्रसंग को हमारे वेद, पुराणों में बताया गया है कि जब समुद्र मन्थन हो रहा था उस समय समुद्र में चौदह रत्न प्राप्त हुए। उन रत्नों में हलाहल भी था। जिसकी गर्मी से सभी देव दानव त्रस्त होने लगे तब भगवान शिव ने उसका पान किया। महाशिवरात्रि भगवान शिव का त्यौहार है। भारत के सभी प्रदेशो में महाशिव रात्रि का पर्व धूमधाम से मनाया जाता है। भारत के साथ नेपाल, मारिशस सहित दुनिया के कई अन्य देशों में भी महाशिवरात्रि मनाते है। फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को महाशिव रात्रि का व्रत किया जाता है। हिन्दू पुराणों के अनुसार इसी दिन सृष्टि के आरंभ में मध्यरात्रि मे भगवान शिव ब्रह्मा से रुद्र के रूप में प्रकट हुए थे। इसीलिए इस दिन को महाशिवरात्रि कहा जाता है।

शिवरात्रि के प्रसंग को हमारे वेद, पुराणों में बताया गया है कि जब समुद्र मन्थन हो रहा था उस समय समुद्र में चौदह रत्न प्राप्त हुए। उन रत्नों में हलाहल भी था। जिसकी गर्मी से सभी देव दानव त्रस्त होने लगे तब भगवान शिव ने उसका पान किया। उन्होंने लोक कल्याण की भावना से अपने को उत्सर्ग कर दिया। इसलिए उनको महादेव कहा जाता है। जब हलाहल को उन्होंने अपने कंठ के पास रख लिया तो उसकी गर्मी से कंठ नीला हो गया। तभी से भगवान शिव को नीलकंठ भी कहते हैं। शिव का अर्थ कल्याण होता है। जब संसार में पापियों की संख्या बढ़ जाती है तो शिव उनका संहार कर लोगों की रक्षा करते हैं। इसीलिए उन्हें शिव कहा जाता है।

माना जाता है की इस दिन भगवान शंकर और माता पार्वती का विवाह हुआ था। इस दिन लोग व्रत रखते हैं और भगवान शिव की पूजा करते है। महाशिवरात्रि का व्रत रखना सबसे आसान माना जाता है। इसलिये बच्चों से लेकर बूढ़ो तक सभी इस दिन व्रत रखते हैं। महाशिवरात्रि के व्रत रखने वालों के लिये अन्न खाना मना होता है। इसलिये उस दिन फलाहार किया जाता है। राजस्थान में व्रत के समय गाजर, बेर का सीजन होने से गांवों में लोगों द्धारा गाजर, बेर का फलाहार किया जाता है। लोग मन्दिरों में भगवान शिव की पूजा करते हैं व उन्हे आक, धतूरा चढ़ाते हैं। भगवान शिव को विशेष रूप से भांग का प्रसाद लगता है। इस कारण इस दिन काफी जगह शिवभक्त भांग घोट कर पीते हैं।

पुराणों में कहा जाता है कि एक समय शिव पार्वती जी कैलाश पर्वत पर बैठे थी। उसी समय पार्वती ने प्रश्न किया कि इस तरह का कोई व्रत है जिसके करने से मनुष्य आपके धाम को प्राप्त कर सके? तब उन्होंने यह कथा सुनाई थी कि प्रत्यना नामक देश में एक व्यक्ति रहता था, जो जीवों को बेचकर अपना भरण पोषण करता था। उसने सेठ से धन उधार ले रखा था। समय पर कर्ज न चुकाने के कारण सेठ ने उसको शिवमठ में बन्द कर दिया।

संयोग से उस दिन फाल्गुन बदी त्रयोदशी थी। वहां रातभर कथा, पूजा होती रही जिसे उसने भी सुना। अगले दिन शिघ्र कर्ज चुकाने की शर्त पर उसे छोड़ा गया। उसने सोचा रात को नदी के किनारे बैठना चाहिये। वहां जरूर कोई न कोई जानवर पानी पीने आयेगा। अतः उसने पास के बील वृक्ष पर बैठने का स्थान बना लिया। उस बील के नीचे शिवलिंग था। जब वह अपने छिपने का स्थान बना रहा था उस समय बील के पत्तों को तोडकर फेंकता जाता था जो शिवलिंग पर ही गिरते थे। वह दो दिन का भूखा था। इस तरह से वह अनजाने में ही शिवरात्रि का व्रत कर ही चुका था। साथ ही शिवलिंग पर बेल-पत्र भी अपने आप चढ़ते गये।

एक पहर रात्रि बीतने पर एक गर्भवती हिरणी पानी पीने आई। उस व्याध ने तीर को धनुष पर चढ़ाया किन्तु हिरणी की कातर वाणी सुनकर उसे इस शर्त पर जाने दिया कि सुबह होने पर वह स्वयं आयेगी। दूसरे पहर में दूसरी हिरणी आई। उसे भी छोड़ दिया। तीसरे पहर भी एक हिरणी आई उसे भी उसने छोड़ दिया और सभी ने यही कहा कि सुबह होने पर मैं आपके पास आऊंगी। चैथे पहर एक हिरण आया। उसने अपनी सारी कथा कह सुनाई कि वे तीनों हिरणियां मेरी स्त्री थी। वे सभी मुझसे मिलने को छटपटा रही थी। इस पर उसको भी छोड़ दिया तथा कुछ और भी बेल-पत्र नीचे गिराये। इससे उसका हृदय बिल्कुल पवित्र, निर्मल तथा कोमल हो गया। प्रातः होने पर वह बेल-पत्र से नीचे उतरा। नीचे उतरने से और भी बेल पत्र शिवलिंग पर चढ़ गये। अतः शिवजी ने प्रसन्न होकर उसके हृदय को इतना कोमल बना दिया कि अपने पुराने पापों को याद करके वह पछताने लगा और जानवरों का वध करने से उसे घृणा हो गई। सुबह वे सभी हिरणियां और हिरण आये। उनके सत्य वचन पालन करने को देखकर उसका हृदय दुग्ध सा धवल हो गया और वह फूट-फूट कर रोने लगा। महाशिवरात्रि आध्यात्मिक रूप से सबसे महत्वपूर्ण है

कानून के दायरे में सोशल मीडिया-ओटीटी प्लेटफार्म

अच्छा ही हुआ जो मोदी सरकार ने सोशल मीडिया और ओटीटी प्लेटफॉर्म के लिए गाइडलाइंस जारी कर दी की. पिछले कुछ वर्षो में जिस तरह से सोशल मीडिया और ओटीटी प्लेटफॉर्म का अराजक तत्वों द्वारा देश को तोड़ने, जनता को आपस में लड़ाने, झूठी खबरें फैला कर देश में दंगा फंसाद, अश्लीलता फैलाने आदि के लिए दुरूपयोग किया जा रहा था, उसको देखते हुए सोशल मीडिया और ओटीटी प्लेटफार्म पर कानून बनाकर नियंत्रण करना बेहद जरूरी हो गया था,हो सकता है कि मोदी विरोधी खेमा इस पर हो-हल्ला मचाए और इसे अभिव्यक्ति की आजादी पर कुठाराघात बता कर धरना-प्रदर्शन करें. मगर सच्चाई यही है कि देशहित में लगातार अनियंत्रित होते जा रहे सोशल मीडिया पर लगाम लगाया जाना बेहद जरूरी हो गया था. यह बात मोदी सरकार ही नहीं सुप्रीम कोर्ट भी समझ रही थी,जिसकी पहल पर ही उक्त कानून साकार रूप ले पाया. ट्विटर और फेसबुक जैसी सोशल मीडिया कंपनियों के लिए अब यह बताना जरूरी हो गया है कि उनके प्लेटफॉर्म पर कोई मैसेज पहली बार किसने भेजा है। इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने सोशल मीडिया कंपनियों, ओवर-द-टॉप (ओटीटी) प्लेटफॉर्म और डिजिटल मीडिया पब्लिशर्स के लिए गुरुवार को नए दिशानिर्देश जारी किए, जिसमें यह प्रावधान किया गया है। व्हाट्सएप जैसे प्लेटफॉर्म एंड टू एंड इंक्रिप्शन देते हैं, यानी एक व्यक्ति ने दूसरे को मैसेज भेजा है तो वही दो लोग उसे देख सकते हैं, बीच में कोई भी तीसरा उस व्हाट्सएप मैसेज को नहीं देख सकता है। नए दिशानिर्देशों के बाद व्हाट्सएप जैसी कंपनियों को यह इन्क्रिप्शन तोड़ना पड़ेगा। सरकार जिस मैसेज के बारे में जानना चाहे, उससे जानकारी ले सकती है। प्रेस कॉन्फ्रेंस में नए दिशानिर्देशों की जानकारी देते हुए इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कहा कि हमने कोई नया कानून नहीं बनाया है बल्कि मौजूदा आईटी एक्ट के तहत ही यह नियम बनाए गए हैं।

सोशल मीडिया कंपनियों की दो कैटेगरी होगी

इन नियमों में महत्वपूर्ण सोशल मीडिया इंटरमीडियरी और नियमित सोशल मीडिया इंटरमीडियरी की अलग-अलग श्रेणी बनाई गई हैं। महत्वपूर्ण सोशल मीडिया इंटरमीडियरी किसे माना जाएगा अभी यह तय होना बाकी है। हालांकि मंत्री ने संकेत दिए कि 50 लाख से अधिक यूजर वाली कंपनियों को महत्वपूर्ण माना जा सकता है। उनके लिए दिशानिर्देश अधिसूचना जारी होने के 3 महीने बाद लागू होंगे। नियमित सोशल मीडिया इंटरमीडियरी के लिए यह नियम अधिसूचना

जारी होने के साथ ही लागू हो जाएंगे।

यूजर्स की शिकायतें दूर करने के लिए सोशल मीडिया कंपनियों को कुछ निर्देश भी दिए गए हैंः- -उन्हें चीफ कंप्लायंस ऑफिस नियुक्त करना पड़ेगा जो कंप्लायंस के लिए जिम्मेदार होगा। वह व्यक्ति भारत में ही होना चाहिए। कानून पालन कराने वाली एजेंसियों के साथ कोऑर्डिनेशन के लिए एक व्यक्ति नियुक्त करना पड़ेगा। वह भी भारत में ही होना चाहिए।

आपत्तिजनक कॉन्टेंट 24 घंटे में हटाना पड़ेगा

सरकार का कहना है कि इन दिशानिर्देशों का मकसद सोशल मीडिया के यूजर्स और दूसरी इंटरमीडियरी को अधिकार देना है। महत्वपूर्ण सोशल मीडिया कंपनियों को भी चीफ कंप्लायंस ऑफिसर की नियुक्ति करनी पड़ेगी। कंपनियों के लिए हर महीने कंप्लायंस रिपोर्ट भी प्रकाशित करना जरूरी होगा। भारत में कंपनी का ऑफिस होना जरूरी है। उसे अपनी वेबसाइट, ऐप या दोनों जगहों पर यह पता बताना पड़ेगा। किसी भी सोशल मीडिया पर अगर किसी के लिए कुछ आपत्तिजनक बातें कही गई हैं या तस्वीरें दिखाई गई हैं तो उन्हें 24 घंटे के भीतर हटाना पड़ेगा।

आपत्तिजनक मैसेज पहली बार किसने भेजा

सबसे महत्वपूर्ण नियम यह है कि सोशल मीडिया कंपनी को जरूरत पड़ने पर यह पता लगाना पड़ेगा कि कोई मैसेज पहली बार किसने भेजा। सरकार का कहना है कि मैसेज में क्या लिखा है यह जानने में उसकी कोई रुचि नहीं है। वह सिर्फ यह पता लगाना चाहती है कि किसी गलत मैसेज की शुरुआत किसने की। सरकार देश की सुरक्षा और सार्वभौमिकता, कानून-व्यवस्था, बलात्कार या ऐसे मामलों में सोशल मीडिया कंपनी से मैसेज की शुरुआत करने वाले की जानकारी ले सकती है।

ओटीटी प्लेटफॉर्म्स को सेल्फ रेगुलेटरी बॉडी बनानी पड़ेगी

नेटफ्लिक्स, हॉट स्टार और अमेज़न प्राइम वीडियो जैसे ओटीटी प्लेटफॉर्म भी अब सरकार की स्क्रूटनी के दायरे में आ गए हैं। दिशानिर्देशों के मुताबिक ओटीटी प्लेटफॉर्म और डिजिटल पोर्टल को भी ग्रीवेंस रिड्रेसल सिस्टम यानी शिकायतें दूर करने की व्यवस्था बनानी पड़ेगी। ओटीटी प्लेटफॉर्म को सेल्फ रेगुलेटरी बॉडी बनानी पड़ेगी जिसका प्रमुख सुप्रीम कोर्ट या हाई कोर्ट का रिटायर्ड जज या इस क्षेत्र का कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति हो सकता है। ओटीटी प्लेटफॉर्म को अपने कंटेंट और सिनेमा का उम्र के हिसाब से वर्गीकरण करना पड़ेगा। यह वर्गीकरण 7 साल से अधिक, 13 साल से अधिक, 16 साल से अधिक और वयस्क चार श्रेणी में किया जाएगा।

सुंदर, स्वच्छ, स्वस्थ, आधुनिक, झुग्गीमुक्त और रोजगार युक्त शहर बनायेंगेः सीएम

स्व-रोजगार के लिए उद्यम क्रांति योजना शुरू होगी

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि रोटी, कपड़ा और मकान, पढाई-लिखाई, दवाई और रोजगार का इंतजाम नगरीय विकास का विजन है। मुख्यमंत्री श्री चौहान मिशन नगरोदय के राज्य स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने 3,112 करोड़ 81 लाख रूपये लागत की विभिन्न हितग्राही मूलक योजनाओं में हितलाभ वितरित किये और नगरीय अधोसंरचनाओं का भूमि-पूजन एवं लोकार्पण किया। यह कार्यक्रम प्रदेश के सभी 407 नगरीय निकायों में किया गया।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि स्वच्छता है तो स्वास्थ्य है और स्वास्थ्य है तो आनंद है। अतः प्रदेश को स्वच्छता में देश में नंबर वन बनाने के लिए हम सब को मिलकर संकल्प लेना है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि हम सब मास्क लगाकर और दूरी बनाकर कोरोना को हराने का संकल्प भी ले। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने वृक्षारोपण के लिए सभी को प्रेरित किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कार्यक्रम में सबको स्व-रोजगार उपलब्ध कराने के लिए मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना आरंभ करने की घोषणा की। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि अगले पाँच वर्षों में नगरों के विकास के लिए 70 हजार करोड़ रूपये खर्च किए जाएंगे। विकास और जन-कल्याण का कार्य लगातार जारी रहेगा। सड़क, बिजली, पानी, अडंरग्राउण्ड सीवेज और हर घर में नल से जल की व्यवस्था होगी। मोतीलाल नेहरू स्टेडियम भोपाल में आयोजित कार्यक्रम में वित्त मंत्री श्री जगदीश देवड़ा, नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह, सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री श्री ओम प्रकाश सखलेचा, खजुराहो

मिशन नगरोदय के अंतर्गत मुख्यमंत्री श्री चौहान ने जारी किये 3 हजार 112 करोड़ रूपये

सांसद श्री वी.डी. शर्मा, विधायक श्री रामेश्वर शर्मा, विधायक श्रीमती कृष्णा गौर, प्रमुख सचिव नगरीय विकास एवं आवास श्री नीतेश व्यास सहित जन-प्रतिनिधि उपस्थित थे। वर्चुअल आधार पर आयोजित इस कार्यक्रम से सभी नगरीय निकाय जुड़े थे। कार्यक्रम में समस्त मंत्री, सांसद, विधायक भी कार्यक्रम से वर्चुअली जुड़े। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने मिशन नगरोदय में प्रधानमंत्री आवास योजनांतर्गत करीब एक लाख 60 हजार से अधिक परिवारों को प्रथम एवं द्वितीय किस्त की राशि करीब 1602 करोड़ रूपये के वितरण की शुरूआत की। प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना में 407 नगरीय निकायों और 5 छावनी क्षेत्रों के एक लाख हितग्राहियों को 100 करोड़ रूपये वितरित किये गये। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री चौहान ने 15वें वित्त आयोग के अंतर्गत नगरीय निकायों को विकास कार्यों के लिये करीब 810 करोड़ रूपये की राशि प्रदान की। मुख्यमंत्री शहरी अधोसंरचना फेस-3 के अंतर्गत अमृत योजना, स्मार्ट सिटी और निकाय मद के 500 करोड़ रूपये की लागत के विकास कार्यों का भूमि-पूजन और शिलान्यास किया। नगरीय क्षेत्रों में सड़कों की मरम्मत और निर्माण के लिए 100 करोड़ रूपये की अतिरिक्त राशि जारी की गयी।

इन नौ प्लेटफॉर्म्स पर जाकर महिलाएं कुछ ही मिनटों में पा सकती हैं हर तरह की मदद

महिला सेफ्टी को लेकर सोशल पुलिसिंग के साथ सरकार भी आगे आई है। मदद के लिए महिलाएं ऑनलाइन ही संपर्क कर सकती हैं। कई एप्लीकेशन भी आ गए हैं, जिन्हें सावधानी के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है। आंकड़े बताते हैं कि मध्यप्रदेश में महिलाओं के साथ पिछले साल 54 हजार अपराध दर्ज किए गए। औसतन देखा जाए, तो प्रदेश में महिलाओं के साथ रोजाना 149 अपराध हो रहे हैं। ऐसे में विमेंस सेफ्टी को लेकर हर तरफ से आवाज उठती रही है। महिला सुरक्षा पर खास रिपोर्ट-प्रदेश सरकार ने पुलिस के माध्यम से महिलाओं की मदद के लिए अलग-अलग प्लेटफॉर्म तैयार किए हैं। इनमें कुल 9 तरह के प्लेटफॉर्म शामिल हैं, जिन पर महिलाएं कभी भी और कहीं से भी शिकायत कर सकती हैं।

महिला हेल्प लाइन

मध्यप्रदेश के किसी भी गांव-कस्बे की महिला टोल फ्री नंबर 1090 पर कॉल करके राज्य महिला हेल्प लाइन पर मदद ले सकती हैं। इसके अतिरिक्त लोकल पुलिस द्वारा 1091 नंबर भी जारी किया है। वी केयर फॉर यू और लोकल वाट्सऐप नंबर भी हैं, जिस पर शिकायत की जा सकती है।

भोपाल के लिए 1090, 1091, 2420026, 2443801 नंबर हैं।

इंदौर की महिलाएं 1091, 2522111, वाट्सऐप-7049124445 नंबर हैं।

ग्वालियर में 1091, 7049110100, वी केयर ऑफ यू 7049112018 वाट्सऐप - 7049110100 पर मदद ले सकती हैं।

पुलिस का एप

महिलाओं की मदद के लिए पुलिस ने MPeCop नाम से एप लांच किया है। यहां महिलाएं सीधे शिकायत दर्ज करा सकती हैं। यहां पर तमाम तरह की पुलिस सेवाओं की जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है।

ऊर्जा डेस्क

पीड़ित महिलाओं को तत्काल मदद मुहैया कराने के लिए प्रदेश के 180 पुलिस थानों में ऊर्जा (अर्जेंट रिलीफ एंड जस्ट एक्शन) डेस्क बनाई गई। इस डेस्क में महिला पुलिस अधिकारी ही कार्य करती हैं। इसका मकसद पीड़ित महिलाओं को तत्काल कार्रवाई के माध्यम से फौरन न्याय दिलाना है।

सीएम हेल्प लाइन

सीएम हेल्प लाइन में सीधे फोन नंबर 181 डायल कर शिकायत की जा सकती है। यहां कहीं से भी कभी भी कॉल कर सकते हैं। ये शिकायत संबंधित विभाग या थाने में भेज दी जाती है। इसकी निगरानी खुद मुख्यमंत्री करते हैं।

महिला शक्ति का सम्मान

अध्यक्ष की आसंदी पर बैठीं एमएलए झूमा सोलंकी, मीनाक्षी वर्मा बनीं मानद गृहमंत्री

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर मध्य प्रदेश विधानसभा में अध्यक्ष गिरीश गौतम ने कार्यवाही के संचालन के लिए कांग्रेस विधायक झूमा सोलंकी को आसंदी पर बैठाया. उधर विधानसभा में सहायक संचालक करमजीत छिनना ने चीफ मार्शल का कार्य संभाला. गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा ने

अपने कार्यालय में तैनात मीनाक्षी वर्मा को मानद गृहमंत्री बनाया. गृहमंत्री ने कहा कि यह नवाचार महिलाओं को सशक्त बनाने की पहल है. नरोत्तम मिश्रा ने कहा कि आज अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर निवास पर स्थित कार्यालय पर होने वाली जनसुनवाई आरक्षक मीनाक्षी वर्मा ने की, उन्होंने गृहमंत्री की कुर्सी पर बैठकर न सिर्फ नागरिकों की समस्याएं सुनीं, बल्कि उनके निराकरण के निर्देश भी दिए. यह भारत ही है जहां नारी को पूजा जाता है. इसलिए हम भारत को माता कहते हैं, हमें ताकत चाहिए तो दुर्गा जी के पास जाएं, विद्या चाहिए तो सरस्वती जी के पास जाएं, धन चाहिए तो लक्ष्मी जी के पास जाते हैं. नारी का सम्मान जहां है, सस्कृति का उत्थान वहां है. और इसलिए आज मातृ शक्ति के रूप में मैंने अपने दिन की शुरुआत बिटिया मीनाक्षी को यह स्थान देकर यह बताने की कोशिश की है कि आप अपार शक्ति की भंडार हैं.

अन्नपूर्णा ही है कुपोषित

> अन्नपूर्णा का शाब्दिक अर्थ है- धान्य (अन्न) की अधिष्ठात्री। सनातन धर्म की मान्यता है कि प्राणियों को भोजन माँ अन्नपूर्णा की कृपा से ही प्राप्त होता है।गृहणी को घर का पोषण करने का वरदान प्राप्त है, मां अन्नपूर्णा ने नारी को यह वरदान दिया था। शास्त्रों में भी इस बात का वर्णन है की जहां नारी की पूजा होती है उस घर में देवता निवास करते हैं।पर ये कैसी विडम्बना है आज के इस समाज में की हमारी अनपूर्णा ही कुपोषित है। सबसे पहले तो सवाल यह उठता है कि कुपोषण है क्या ?

● आरती जादौन

कुपोषण का अर्थ?

कुपोषण वह अवस्था है जिसमें पौष्टिक पदार्थ और भोजन, अव्यवस्थित रूप से ग्रहण करने के कारण शरीर को पूरा पोषण नहीं मिल पाता है। चूँकि हम स्वस्थ रहने के लिये भोजन के ज़रिये ऊर्जा और पोषक तत्त्व प्राप्त करते हैं, लेकिन यदि भोजन में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन तथा खनिजों सहित पर्याप्त पोषक तत्त्व नहीं मिलते हैं तो हम कुपोषण के शिकार हो सकते हैं। कुपोषण तब भी होता है जब किसी व्यक्ति के आहार में पोषक तत्त्वों की सही मात्रा उपलब्ध नहीं होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनिसेफ के अनुसार कुपोषण के तीन प्रमुख लक्षण हैं-

नाटापन – यदि किसी व्यक्ति का कद उसकी आयु के अनुपात में कम रह जाता है तो उसे नाटापन कहते हैं।

निर्बलता - यदि किसी व्यक्ति का वज़न उसके कद के अनुपात में कम होता है तो उसे निर्बलता कहा जाता है।

कम वज़न - आयु के अनुपात में कम वजन वाले व्यक्ति को 'अंडरवेट' कहा जाता है।

भारतीय संविधान और कुपोषण

यद्यपि संविधान के अनुच्छेद-21 और अनुच्छेद-47 भारत सरकार को सभी नागरिकों के लिये पर्याप्त भोजन के साथ एक सम्मानित जीवन सुनिश्चित करने हेतु उचित उपाय करने के लिये बाध्य करते हैं। किंतु भारतीय संविधान में भोजन के अधिकार को 'मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता नहीं प्रदान की गई है।

अनुच्छेद 21 के मुताबिक, किसी भी व्यक्ति को उसके जीवन अथवा निजी स्वतंत्रता से वंचित नहीं किया जा सकता। वहीं संविधान के अनुच्छेद 47 के अनुसार, राज्य अपने लोगों के पोषाहार स्तर और जीवन स्तर को ऊँचा करने तथा लोक स्वास्थ्य में सुधार को अपने प्राथमिक कर्त्तव्यों के रूप में शामिल करेंगे।

इस प्रकार संविधान के मूल अधिकारों से संबंधित प्रावधानों में अप्रत्यक्ष जबकि राज्य के नीति निर्देशक तत्त्वों से संबंधित प्रावधानों में प्रत्यक्ष रूप से कुपोषण को खत्म करने की बात की गई है।

कुपोषित अनपूर्णा

भारत में माँ बनने-योग्य आयु की एक चौथाई महिलाएँ कुपोषित है और उनका बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) 18.5 किलोग्राम/एमसे कम है(स्रोत- हस्न।।स्4 2015-16)।यह सभी को पता है कि एक कुपोषित माँ अवश्य

ही एक कमजोर बच्चे को जन्म देती है, और कुपोषण चक्र पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है।

कुपोषित लड़कियों में कुपोषित मां बनने की संभावना अधिक होती है, जिससे कम वजन के बच्चों को जन्म देने की स्थिति अधिक होती हैं, और इस प्रकार कुपोषण का चक्र पीढ़ीयों तक बना रहता है।

इस चक्र को कम आयु की माताओं द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है, विशेष रूप से उन किशोरियोंद्वारा, जो पूर्ण तौर पर शारीरिक रूप से विकसित होने से पहले बच्चे पैदा करना शुरू करती हैं। जब माताएँ गर्भावस्था के बीच बहुत कम अंतराल रखती हैं और अनेक बच्चे पैदा करती है, तो यह शरीर में पोषण की कमी को बढ़ाता है जो कि आगे बच्चों में भी जारी रहता है।

पूरे घर की जिम्मेदारी उठाने वाली ये महिलाएं खुद कितनी कमजोर हैं इसका उदाहरण वैश्विक पोषण रिपोर्ट 2017 देती है। इसके अनुसार 51 फीसदी महिलाएं एनीमिक हैं, इसके पीछे के कई कारण हैं । महिलाओं के हित में काम करने वाली दिल्ली स्थित गैर सरकारी संस्था केयर के सदस्य रुपा शर्मा बताती हैं, हमारे देश में लैंगिक असमानताओं के चलते आज भी लड़की व लड़के के खाने में अंतर किया जाता है खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में या गरीब परिवारों में। जहां बेटे को दूध, दही खाने को मिलता है कई जगह बेटियों के लिए ये जरूरी नहीं समझा जाता। महिलाएं घर के पुरुष सदस्यों को तो सब्जी, दाल सब परोस देती हैं लेकिन खुद जो बचता है वही खाती हैं जबकि महिलाओं को पुरुषों से ज्यादा पोषण की जरूरत होती है। महिलाओं को पुरूषों की अपेक्षा ज्यादा कैलोरी की जरूरत होती है। इस बारे में स्वास्थ्य एवं पोषण सलाहकार डॉ सुरभि जैन बताती हैं, एक घरेलू महिला को दिन भर में 2100 कैलोरी की जरूरत होती है वहीं खेती या मजदूरी करने वाली महिला को 2400 कैलोरी की जरूरत होती है। महिलाओं को पूरे पोषण के लिए भोजन में दाल, चावल, रोटी और हरी सब्जी दोनों समय लेना चाहिए। फल और दूध को आहार में शामिल करना चाहिए। खाने में प्रोटीन की मात्रा ज्यादा होनी चाहिए।

GOONJ

ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य के मुद्दे

योगिक और डायट प्रबंधन

● डॉ. ललिता गौरव

भारत आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी, साहित्य, फिल्मों और कई क्षेत्रों में सफलता के शिखर पर पहुंच गया है। लेकिन, कुछ मुद्दे ऐसे हैं जो अभी भी देश में प्रचलित हैं और ग्रामीण भारत में अधिक प्रमुख हैं। ग्रामीण भारत देश की वास्तविक आत्मा है जहाँ इसकी अधिकतम आबादी निवास करती है फिर भी यह सरकार द्वारा सबसे अधिक उपेक्षित है। ग्रामीण भारत में मौजूद मुद्दों की प्रमुख शिकार महिलाएं हैं। ग्रामीण भारतीय महिलाओं को बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण कारक है जो मानव भलाई और आर्थिक विकास में योगदान देता है। वर्तमान में, भारत में महिलाएँ कुपोषण, मातृ स्वास्थ्य की कमी, एड्स जैसी बीमारियों, स्तन कैंसर, घरेलू हिंसा और कई अन्य मुद्दों का सामना करती हैं।

कुपोषण

पोषण व्यक्ति के समग्र स्वास्थ्य, मनोवैज्ञानिक और शारीरिक स्वास्थ्य की स्थिति में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। भारत में विकासशील देशों में कुपोषित महिलाओं की सबसे अधिक दर है। हालांकि, यह देखा गया है कि महिलाओं में कुपोषण की दर बढ़ जाती है क्योंकि वे वयस्कता में प्रवेश करती हैं। मातृ मृत्यु दर और बच्चे के जन्म दोषों के बढ़ते जोखिम से मातृ कुपोषण जुड़ा हुआ है। कुपोषण का मूल कारण कार्बोहाइड्रेट और विटामिन का अनुचित सेवन है। सब्जियों में मसालों का अधिक उपयोग विटामिन के अवशोषण में बाधा उत्पन्न करेगा। अनिवार्य रूप से, उन्हें खाना पकाने के अपने तरीके में थोड़ा बदलाव करना होगा :-

अब जैसे ठंड के मौसम में थोड़ा गर्म पानी के साथ सब्जियों को साफ करना;

सब्जियों को काटने के बाद धोना नहीं;

या तो सरसों के तेल या देसी घी का उपयोग सब्जियों को तलने के लिए करें और रिफाइंड तेल, डालडा आदि से परहेज करें।

पोहा, रोटियां, चावल का सेवन जो मध्य प्रदेश का मुख्य भोजन है, अच्छे कार्बोहाइड्रेट चयापचय में मदद करेगा क्योंकि उनके शरीर को ऐसे स्थानीय खाद्य उत्पादों के हिसाब से ढल जाता है

अपने चमकदार रंग में लाने के लिए चमकदार सामग्री और कई कीटनाशकों के उपयोग के साथ दाल का हेरफेर किया जाता है। कंटेनर या प्रेशर कुकर को बंद करने से पहले उबली हुई दाल के पानी से झागदार परत को हटाने का एक छोटा सा कार्य हाइपोथायरायडिज्म होने की संभावनाओं को मिटा देगा। अचार, उचित सेवन सब्जियों का उपयोग करने के बजाय, कच्चे या पके हुए उनके सूक्ष्म पोषक पोषण में मदद करेंगे

सब्जियों को गर्म या गर्म पानी में धोया जाना चाहिए जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है कि उन्हें भोजन के लिए सलाद के रूप में इस्तेमाल किया जाना है। यह ई-कोलाई बैक्टीरिया को दूर करने में मदद करता है जो उन सब्जियों में रहता है जिन्हें हम थैलस (सड़क विक्रेताओं) से खरीदते हैंमहिलाओं को अपने आहार में रौधे बढ़ाने के लिए दिन में कम से कम एक फल खाना चाहिए ताकि उनकी गैस्ट्रो आंत्र दक्षता में वृद्धि हो सके। अधिकांश महिलाएँ शहरी और ग्रामीण दोनों ही, किसी कारणवश पानी नहीं पीती हैं- इससे न केवल उन्हें कुपोषण हो जाएगा, क्योंकि पानी पोषक तत्वों का महत्वपूर्ण

घटक है, बल्कि उन्हें कई गर्भाशय पथ संक्रमण, सूखा आंखों का रोग, मासिक धर्म में ऐंठन, खराब पाचन आदि होने का खतरा भी है।

मातृ स्वास्थ्य की कमी

गरीब मातृ स्वास्थ्य न केवल प्रतिकूल तरीकों से एक बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए एक महिला की क्षमता भी घट जाती है। यद्यपि भारत ने पिछले दो दशकों में नाटकीय वृद्धि देखी है, कई विकासशील देशों की तुलना में मातृ मृत्यु दर अभी भी अधिक है। भारत 1992 से 2006 के बीच दुनिया भर में सभी मातृ मृत्यु में लगभग 20 प्रतिशत का योगदान देता है। मातृ मृत्यु दर के उच्च स्तर के प्राथमिक कारण सीधे आर्थिक स्थितियों और सांस्कृतिक बाधाओं की असमानता से संबंधित हैं जो देखभाल तक पहुंच को सीमित करते हैं। आसनों की पोषक देखभाल और अभ्यास मातृ स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में मदद करेगा और भ्रूण के स्वास्थ्य को भी बढ़ाएगा।

मेवे और फलों के सेवन जैसे आहार संबंधी टिप्स गर्भवती महिलाओं को प्रोजेस्टेरोन के हार्मोनल स्राव को स्थिर करने में मदद करेंगे

प्रोजेस्टेरोन का स्राव राजमा, चूरा, साबुत दाल, आदि जैसे फलियों के सेवन से स्वाभाविक होगा।

फूलगोभी, कद्दू, गोभी जैसी सब्जियों का सेवन भी गर्भवती महिलाओं को उनके प्रोजेस्टेरोन स्तर को बनाए रखने में मदद करेगा जो गर्भाशय के पोषण और शक्ति के लिए महत्वपूर्ण है

सिद्धायोनी, अर्ध उत्तानपादासन, उष्ट्रासन, सुपता वज्रासन जैसे आसनों का अभ्यास महिलाओं को उनकी पैल्विक मांसपेशियों को मजबूत करने में मदद करेगा

यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि आसन अभ्यास गर्भावस्था के तिमाही के अनुसार अलग होगा

वामन धौति जैसे क्रियाओं से युवा लड़कियों को मासिक धर्म की ऐंठन से राहत मिलेगी। लेकिन गैर-मासिक धर्म में क्रिया अभ्यास करना पड़ता है

प्राणायाम का अभ्यास जैसे चन्द्र एनुलोमा विलोमा (बायीं नासिका छिद्र), नाड़ी शुद्धी, उज्जायी प्राण को बढ़ाएगा और भ्रूण के विकास के लिए ऊर्जा को चैनलाइज़ करेगा।

फेटल टॉक को कई बाल रोग विशेषज्ञों और स्त्री रोग विशेषज्ञों द्वारा सुझाया गया है क्योंकि यह अभ्यास माँ की मानसिक शक्ति और इच्छा शक्ति को बढ़ावा देने में मदद करता है और भ्रूण के मस्तिष्क में अच्छे संस्कार (इंप्रेशन) को भी शामिल करता है। योग शास्त्रों में भ्रूण चर्चा के दौरान गर्भावस्था के दौरान मंत्र / स्तोत्र / श्लोक का जाप किया जाता है क्योंकि संस्कृत के शक्तिशाली शब्दांशों के उच्चारण के माध्यम से बनाया गया पुनर्मिलन माता और बच्चे दोनों में स्वास्थ्य को शामिल करेगा।

आत्महत्या

भारत में आत्महत्या एक बड़ी समस्या है। भारत में आत्महत्या की दर विकसित दुनिया की तुलना में पांच गुना अधिक है। इसके अलावा, भारत में पुरुषों की तुलना में महिलाओं में आत्महत्या की दर अधिक पाई गई है। महिलाओं की आत्महत्या के सबसे आम कारण सीधे तौर पर संबंधित हैं- अवसाद चिंता लिंग भेदभाव घरेलू हिंसा

घरेलु हिंसा

भारत में घरेलू हिंसा एक प्रमुख मुद्दा है। घरेलू हिंसा को महिलाओं के खिलाफ शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और यौन हिंसा के कार्यों के रूप में परिभाषित किया गया है। एक अध्ययन में पाया गया कि सबसे गरीब महिलाओं ने मध्यम और उच्च आय वाली महिलाओं के बीच सबसे खराब घरेलू हिंसा का अनुभव किया।

ग्वालियर की गौरवशाली महिलाएं

ग्वालियर एक ऐतिहासिक शहर है ग्वालियर को हिन्द के किले के हार का मोती कहा जाता है। यह स्थान ग्वालियर किले के लिए प्रसिद्ध है जो कई उत्तर भारतीय राजवंशों का प्रशासनिक केंद्र था। जहाँ इतिहास आधुनिकता से मिलता है ग्वालियर वह स्थान है जहाँ इतिहास आधुनिकता से मिलता है आज महिला दिवस के अवसर पर हम ग्वालियर शहर की गौरवशाली महिलाओं से आपका परिचय कराएंगे जिन्होंने घर की दहलीज़ से बहार निकल कर,पूरे आत्मविश्वास से कामयाबी की नई इबारत लिखी है महिला दिवस पर सामुदायिक गूँज पत्रिका गौरवशाली ग्वालियर की कुछ ऐसी सम्मानित महिलाओं से आपको रूबरू कराएंगे।

समीक्षा गुप्ता

यूँ तो बिजनेस फेमिली से है ,पर समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए उन्होंने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ली और सामाजिक कार्यो से जुड़ गई .जिस उनको बड़ी लोकप्रियता हासिल हुई .उनकी इसी कार्य क्षमता को देख कर भाजपा ने उनको ग्वालियर नगर पालिका के लिए महापौर का टिकिट दिया,जिसमे अपनी लोकप्रिय छबि की बदौलत उन्होंने बड़ी जीत हासिल की

संगीता शुक्ला

ग्वालियर के जीवाजी विश्वविधालय की वाईस चांसलर है.आप एम्.एस.सी (गोल्डमेडलिस्ट इन लाइफ साइंस) साथ ही पीएचडी और डीएससी भी है। जीवाजी यूनिवर्सिटी ने आप के कार्यकाल मैं शिक्षा के क्षेत्र मैं कई नए प्रयोग किये .साथ ही आप देश की कई विख्यात शिक्षण संस्थाओ भी जुडी हुई है।

जयंती सिंह

आईएएस और स्मार्ट सिटी परियोजना की सीईओ है .इन के नेतृत्व मैं ग्वालियर की यह महत्पूर्ण परियोजना निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है.नए बस स्टैंड,दीवारों को सुन्दर पेंटिंग से सजाने काम जोर से चल रहा है.साथ ही आप अपनी शिक्षा के समय से ही अपनी पॉकेट मनी बचा कर लोगो की सहायता करने आदत डाली थी,वह आज भी कायम है .ग्वालियर पदस्थ होने सी पूर्व डबरा एस डी एम् रह चुकी है.

रश्मि सबा

ग्वालियर की लोकप्रिय शायरा-कवियत्री देश विदेश कई कई

मुशायरो मैं अपनी धाक जमाई थी. उनकी किताब रात ने कहा मुझ से भी बेहद लोकप्रिय हुई उनके एक शेर की बानगी देखिये मैं दिया हूं मेरी फ़ितरत है उजाला करना, वो समझते हैं कि मजबूर हूं जलने के लिए ऐसे कई शेर कहने वाली रश्मि सबा,हर,देश के विख्यात कवियों और शायरों के बीच विशिष्ट स्थान रखती है .

डॉ. वंदना भूपेन्द्र प्रेमी

बेटी है तो कल है सामाजिक संस्था की अध्यक्ष डॉ. वंदना भूपेन्द्र प्रेमी बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान के लिए निरंतर कई वर्षों से कार्य कर रहीं हैं उनकी संस्था द्वारा बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए कई कार्यक्रम संस्था द्वारा आयोजित किए जाते हैं उनके द्वारा मुबारक हो बेटी हुई है, बिटिया सेल्फी अवार्ड जैसे कई सारे कार्यक्रम उनके द्वारा बेटियों के लिए आयोजित किए जाते हैं। हर वर्ष महिला दिवस के अवसर पर होनहार बेटियों को सम्मानित करने का कार्य उनके द्वारा निरंतर किया जा रहा है।

इशिका चौधरी

ग्वालियर की महिला हॉकी खिलाडी है ,दर्पण कॉलोनी के खेल मैदान से अपने खेल जीवन की शुरुआत करने वाली इशिका ने खेल के प्रति अपने समर्पण से कम समय मैं, ना सिर्फ अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की बल्कि राष्ट्रीय हॉकी टीम की उप कप्तान भी बनी.

GOONJ
WOMEN'S DAY
SPECIAL

आत्मनिर्भर महिला शक्ति की रोल मॉडल कृति सिंह

आज की नारी बदलते परिवेश में जिस तरह पुरुष वर्ग के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है, वह समाज के लिए एक गर्व और सराहना की बात है. आज राजनीति, टेक्नोलोजी, सुरक्षा समेत हर क्षेत्र में जहां जहां महिलाओं ने हाथ आजमाया उसे कामयाबी ही मिली. अब तो ऐसी कोई जगह नही है, जहां आज की नारी अपनी उपस्थिति दर्ज न करा रही हो. और इतना सब होने के बाद भी वह एक गृहलक्ष्मी के रूप में भी अपना स्थान बनाए हुए है. विगत कई दशकों में, महिलाओं ने कॉरपोरेट जगत में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है, सामाजिक नैतिकता की बाध्यताओं को पार करते हुए घर तथा कार्यस्थल पर स्वयं को सफल उद्यमी एवं कार्यकारी व्यावसायिकों के रूप में साबित किया है। आज अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर हम अपनी कलम के माध्यम से आत्मनिर्भर महिला शक्ति की मिसाल गूंज इंस्टीट्यूट एवं गूंज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह से आपको रूबरू कराएंगे जिन्होंने अपने दम पर कुछ करने का जज्बा व अपनी जन्मभूमि को ही कर्मभूमि बनाकर महिला उत्थान एवं अपने लोगों के लिए कार्य करने की भावना ने ही उन्हें आज ग्वालियर अंचल में आत्मनिर्भर महिला शक्ति की रोल मॉडल के रूप में पहचान दिलाने का कार्य किया है। कृति सिंह चाहतीं तो किसी बड़ी कंपनी की सी.ई.ओ बन सकतीं थीं या फिर किसी बिजनेस में नाम कमा सकती थी, परन्तु उन्होंने अपनी जन्मभूमि पर ही समाज के लिए कुछ करने की भावना को ध्यान में रखते हुए कार्य करने का दृढ संकल्प लिया, आप सामाजिक तौर समाज को जन को कुछ देना चाहतीं हैं, देश एवं प्रदेश में ग्वालियर अंचल को एक नई पहचान दिलाने के प्रयत्नशील होकर कार्य कर रहीं हैं। कृति सिंह घर-परिवार के साथ समाजसेवा एवं महिला उत्थान, जन कल्याण की भावना के साथ कार्य कर रहीं है। आपके के द्वारा सामाजिक संस्था माँ पूर्णागिरी महिला मंडल के द्वारा महिलाओं को आगे बढ़ाने एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई तरह के कार्यक्रम आपकी संस्था द्वारा किए जा रहे है जिससे समाजसेवा और आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाते हुए खुद को स्थापित करने का कार्य किया है।

अपनी जन्मभूमि पर ही समाज के लिए कुछ करने की भावना

समाज के लिए कुछ करने की भावना

आपकी शिक्षा की बात करें तो आपने अपना ग्रेजुएशन यूके से किया वही एम. बी. ए (इंदौर) और मास मीडिया कोर्स वाय.एम.सी.ए (देहली) से किया. हालाँकि घर में जानेमाने रेडियोलाजिस्ट पिता डॉ.जे .ऐस सिकरवार और माता श्रीमती संध्या सिंह हैं पर अपनी बेटी को उन्होंने यह नहीं कहा की तुम ने इतना पढ़ा लिखा है, तुम कोई और मल्टीनेशनल कंपनी ज्वाइन करो या विदेश में कुछ काम करो अपनी जन्मभूमि पर ही समाज के लिए कुछ करने उनकी भावना का सम्मान किया वही आप के पति अनुपम सिंह कुशवाह जो कामयाब बिजनेसमेन हैं उन्होने भी श्रीमती कृति सिंह के सामाजिक कार्य के फैसले का पूरे मन से सम्मान किया और अपना सहयोग भी दिया. आपके सास-ससुर श्री रविन्द्र सिंह कुशवाह-श्रीमती सरोज सिंह कुशवाह है।

काम के साथ समाजसेवा भी

डायरेक्टर-संपादक की अति व्यस्त भूमिका में ढालने वाली श्रीमती कृति सिंह एक 5 वर्षीय बेटी करिश्नी सिंह की माँ भी हैं,और बड़ा मुश्किल होता है पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच खुद को ढालना साथ में दूसरी सामाजिक गतिविधियों से जुड़ना वर्योंकी अपनी पत्रिका गूँज और रेडियो स्टेशन गूँज 90.8 एफ एम की व्यस्तताओं के साथ कृति सिंह माँ पूर्णागिरी महिला मंडल नामक एनजीओ का संचालन करती है. जिस के जरिये आप जरुरतमंदो की मदद, निर्धन छात्र छात्रों की शिक्षा प्रदान करना,विषम परिस्थियों में लोगों सहायता पहुंचना और इसके साथ ही फॅमिली प्लानिंग एसोशियन से भी जुड़ीं हैं,स्वामी विवेकानंद और अपने पिता को आदर्श मानने वाली और पढ़ने लिखने की शौकीन श्रीमती कृति सिंह चम्बल घाटी की दस्यु समस्या पर डॉक्युमेंट्री भी बना चुकी है. इनके द्वारा दो डॉक्युमेंट्री बनाई है दूसरी डॉक्यूमेंट्री दहेज प्रथा के ऊपर बनाई गई थी जिसे लोगों ने काफी सराहा था। आईये सामाजिक समानता को अपना धर्म वाक्य समझ कर कार्यरत श्रीमती कृति सिंह को हम अपनी बधाइयाँ प्रेषित करे और उनके गूँज पत्रिका तथा जल्द आ रहे रेडियो गूँज 90.8. एफ एम की सफलता की कामना करे।

कृति सिंह अपने जीवन में पिता को आदर्श मानती हैं ग्वालियर अंचल के जाने-माने रेडियोलाजिस्ट डॉ.जे .एस. सिकरवार और माता श्रीमती संध्या सिंह जिन्होंने जिंदगी के हर मोड़ पर आगे बढ़ने में बेटी का मार्गदर्शन किया और उनके साथ जनसेवा, महिला उत्थान में किए जा रहे सामाजिक कार्यों में माता-पिता उनका सहयोग एवं उनका मार्गदर्शन कर रहे हैं।

कृति सिंह बेटी करिश्नी के साथ।

समर्पण भाव से जनसेवा का कार्य कर रही माँ पूर्णागिरी महिला मंडल सामाजिक संस्था

अपने लिए तो सभी जीते हैं लेकिन दूसरों के लिए कुछ करने की भावना और उनके लिए समर्पण भाव से कार्य करने का जज्बा कुछ ही लोगों में होता है सच्ची जनसेवा एवं समाजसेवा इसी का नाम है आज हम बात कर रहे हैं सामाजिक संस्था माँ पूर्णागिरी महिला मंडल जो कि गरीब एवं असहाय लोगों के लिए निरंतर कई सालों से कार्य कर रही हैं संस्था की अध्यक्ष कृति सिंह हैं। संस्था की टीम द्वारा कोरोना काल में गरीब मजदूरों को भोजन एवं मास्क व

सैनेटाइजर वितरित किए गए। पूरी दुनिया जब कोरोना जैसी घातक बीमारी को झेल रही थी वहीं समाजसेवी निर्धनों के प्रति अपनी भूमिका निभाकर फरिश्ते का काम किया। माँ पूर्णागिरी महिला मंडल की अध्यक्ष कृति सिंह ने लोगों को जागरूक करते हुए कहा कि कोरोना महामारी से सुरक्षित रहने के लिए मास्क पहनें, बार-बार हाथ धोएं, सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें अपनी सुरक्षा अगर आप खुद रखेंगे तो परिवार व समाज के लोग भी सुरक्षित रहेंगे। वहीं विगत दिनों कोरोना काल में भी संस्था द्वारा झुग्गी झोपड़ियों को जाकर मास्क एवं राशन दाल चावल और आंटे के पैकेट वितरित किए गए थे। वहीं तितोरी गांव में आदिवासी झोपड़ियों में राशन वितरित किया गया। बच्चों को बिस्कुट एवं चिप्स भी बांटे गए। माँ पूर्णागिरी महिला मंडल नामक एनजीओ का संचालन करती है. जिस के जरिये आप जरुरतमंदो की मदद, निर्धन छात्र छात्रों की शिक्षा प्रदान करना,विषम परिस्थियों में लोगो सहायता पहुंचना और इसके साथ ही फॅमिली प्लानिंग एसोशियन से भी जुड़ीं हैं संस्था में अलका तोमर, रामनरेश तोमर, राजीव सिंह तोमर, अछेंद्र सिंह, गीता सूर्यवंशी आदि लोग अपना योगदान दे रहे हैं।

मास्क वितरण

स्वच्छ पर्यावरण का संदेश

महिलाओं को किया जागरूक

योग शिविर

वृक्षारोपण

MAA PURNAGIRI MAHILA MANDAL

संस्था द्वारा किए गए कार्य समाचार पत्रों में प्रकाशित कटिंग

MAA PURNAGIRI MAHILA MANDAL was formed in 1998 with an intention to uplift the weak sections of the society and provide them better opportunities and knowledge. The organization was registered under the Madhya Pradesh Society Registration Act1973 (Act 44 of 1973) and started functioning as a resource organization involving women, children, youths and socially deprived communities. Initially, its work was limited to Gwalior only, with the time the growth of organization and expansion of its workers and volunteers around the district has contributed to the well-being of areas near to Gwalior. During the years the organization collaborated with several other NGOs and Government Schemes to benefit the society. Along with the development of society, the organization has been working for the protection of the environment and ecosystem with an aim to establish the proper balance of nature and advancement in the society.

Founder's Message

I have always held the belief that "It is more blessed to give than to receive." I love to do things for people and expect no reward or gratitude for that because it makes me happy. I believe, if God has made us capable that we can drive the change then we should contribute to the wellbeing of society to bring smiles on everyone's' faces. The primary state of happiness is the connection between men and nature. I feel we should also understand our duties towards the infinite beauty of nature which is nurturing us selflessly. My efforts are always in the direction of synergy between human welfare and environmental conservation. I want to make my dream of a harmonious world come true with MPMM, I trust that God will definitely make our purpose worthwhile.

ORGANIZATIONAL GOVERNANCE

The internal governance of MAA PURNAGIRI MAHILA MANDAL is based on democracy, transparency and accountability. All the members of the organization are free to work in their respective fields under the guidance of the President. The top management hierarchy is very-well organized and flexible.

महिला दिवस पर मैराथन हुई : सीनियर में शशीलता, जूनियर में अर्पिता प्रथम

महिला मैराथन में दिखा नारी शक्ति दमखम

बालिकाओं ने मैराथन में की भागीदारी स्वस्थ होगी तभी परिवार और देश स्वस्थ रहेगा यशोधराराजे सिंधिया

● गूंज न्यूज नेटवर्क

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर मिनी मैराथन में थीम रोड कटोराताल पर नारी शक्ति का दमखम देखने को मिला। वहां मौजूद हर महिला का जज्बा देखते हुए बनता था। पूर्व राज्यपाल कप्तान सिंह सोलंकी और खेल एवं युवक कल्याण मंत्री यशोधरा राजे ने हरी झंडी दिखाकर दौड़ की शुरूआत कराई। यह दौड़ सीनियर और जूनियर वर्ग में थी जो शहर के प्रमुख मार्गो से होते हुए फूलबाग पर संपन्न हुई। राजमाता विजयाराजे सिंधिया महिला मैराथन के सीनियर वर्ग में शशीलता प्रथम, मोहिनी द्वितीय और रजनी तृतीय स्थान पर रही। जबकि जूनियर में अर्पिता शर्मा प्रथम, अंकी तोमर द्वितीय और सोनम परमार तृतीय स्थान पर रहीं। विजेताओं कों दो लाख के नगद पुरस्कार व 15 सायकलें दी गई। इस मौके पर महिला धावकों में मैराथन के प्रति जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। भारी संख्या में जूनियर और सीनियर वर्ग की धावकों ने भाग लिया। विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार दिये गये। इसमें दो लाख के नगद पुरस्कार व 15 सायकलें लकी ड्रा से बांटे गये।

प्रदेश की खेल एवं युवा कल्याण मंत्री ने फूलबाग मैदान पर पुरस्कार वितरण करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चलाए जा रहे फिट इंडिया अभियान की तर्ज पर मध्यप्रदेश में भी निरंतर कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि जब महिलायें स्वस्थ रहेंगीं तो परिवार और देश स्वस्थ रहेगा। स्वस्थ देश ही विश्व पटल पर अपनी पहचान बनाने में कामयाब होगा। ग्वालियर में भी फिट इंडिया अभियान के तहत प्रति माह कोई न कोई आयोजन हो, इसके प्रयास किए जायेंगे। मैराथन में भाग लेने वाली विजेता, उप विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। उन्होंने प्रतिभागियों से यह भी कहा कि जिन लोगों को पुरस्कार नहीं मिले हैं वे और मेहनत करें ताकि आगामी प्रतियोगिताओं में उन्हें पुरस्कार मिल सकें।

इस दौरान पूर्व मंत्री अनूप मिश्रा, नारायण सिंह कुशवाह,

भाजपा जिलाध्यक्ष कमल माखीजानी, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष खुशबू गुप्ता, सुमन शर्मा, अभय चौधरी, जयसिंह कुशवाह, बृजेन्द्र सिंह जादौन लालजी भाई, मुन्नालाल गोयल, नीटू सिकरवार, सहित कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह, एसपी अमित सांघी, निगम कमिश्रर शिवम वर्मा, स्मार्ट सिटी सीईओ जयति सिंह, जिला पंचायत सीईओ किशोर कान्याल, एडीएम रिंकेश वैश्य, नरोत्तम भार्गव आदि भी उपस्थित थे।

अंनर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ग्वालियर पुलिस द्वारा सुरक्षित गुड्डी: स्वस्थ समाज कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बेटियों को जागरूक करने एवं महिलाओं के लिए पुलिस विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया गया कार्यक्रम को वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने संबोधित किया।

महिलाओं की सुरक्षा ही पहली प्राथमिकता: कलेक्टर

● गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर को स्मार्ट बनाने के साथ साथ ही महिलाओं की सुरक्षा हमारी प्राथमिकता होगी। महानगर के एक सर्वे में 52 हॉट स्पॉट सामने आये हैं जहां महिलाओं युवतियों से छेडखानी आदि की घटनाएं हो जाती हैं। वहीं उनका प्रयास है कि महानगर में रहने वाली महिलाओं के साथ ही युवतियों को पूर्ण सुरक्षा मिले और महानगर अपराध मुक्त रहे इसे लेकर हम सभी आगे बढकर प्रयास कर रहे हैं। कलेक्टर ने घोषणा की कि कल मंगलवार को होने वाली जन सुनवाई में महिलाओं के लिये एक अलग से डेस्क रहेगी। उक्त जानकारी कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर पत्रकारों से चर्चा में कही। उन्होंने कहा कि महिला बाल विकास सेफ सिटी व शहर विकास कार्यक्रम को संचालित कर रहा है। उन्होंने कहा कि विकास हमारी प्राथमिकता है लेकिन उसी के साथ ही प्रशासनिक एवं सामाजिक स्तर पर महिलाओं की सुरक्षा भी प्रमुख है। उन्होने कहा कि महिला सशक्तिकरण की बात तभी सार्थक सिद्ध होगी जब महानगर में हर उम्र, हर वर्ग और हर तबके की युवतियां और महिलायें उत्पाडन , हिसा क बिना निजा सावजानक आर काय स्थलों पर बिना खौफ के आवाजाही कर सकें। यह काम सभी समुदाय व समाज द्वारा ही संभव हो सकता है। कलेक्टर सिंह ने बताया कि महिला बाल विकास

विभाग द्वारा पिछले सात माह पहले से एक सर्वे छात्र-छात्राओं से कराया गया उसके बाद महानगर में 52 ऐसे स्पॉटस को चिन्हित किया गया जहां पर महिलाओं के छेडखानी के मामले होते हैं। यह आंकडे डायल 100 के अलावा अन्य नंबर एप से लिये गये हैं। उन्होंने बताया कि वह एक डिब्बे के साथ ही कोई ऐसा एप बनाने का प्रयास कर रहे हैं जिससे महिलाएं अपनी सुरक्षा के लिये तत्काल पुलिस की मदद ले सकें।

ग्रामीण दीदियों को कैश क्रेडिट लिमिट प्रमाण पत्र बांटे

ग्रामीण आजीविका मिशन के महिला स्व-सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं ने कलेक्ट्रेट में ऑनलाइन प्रसारित मुख्यमंत्री का उद्बोधन सुना और कार्यक्रम में सहभागी बनीं। जिला पंचायत प्रशासकीय समिति की अध्यक्ष मनीषा यादव व कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने समूहों की दीदियों को कैश क्रेडिट लिमिट के रूप में प्रमाण-पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी किशोर कान्याल व अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. विजय दुबे सहित अन्य संबंधित अधिकारी एवं ग्रामीण स्व-सहायता समूहों से जुडीं दीदी मौजूद थीं।

अब गरीबों को घर जाकर दिया जाता है जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आज मिशन नगरोदय के तहत नगरीय निकायों के लिए 3300 करोड़ रूपये की सौगातें प्रदान की। इसके साथ ही अनेक हितग्राही मूलक योजनाओं के हितग्राहियों को प्रदेशभर में लाभ वितरण और नगरीय निकायों में विभिन्न विकास कार्यों का भूमि-पूजन एवं शिलान्यास किया। इसी के तहत ग्वालियर में 2248 हितग्राहियों को हितलाभ वितरित किये गए। इसके साथ ही विभिन्न विकास योजनाओं का शुभारंभ किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रदेश सरकार के ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कहा कि मुख्य मंत्री शिवराजसिंह चौहान के नेतृत्व में प्रदेश की सरकार द्वारा गरीबों के उत्थान के लिए तेजी से कार्य किये जा रहे हैं। पहले जहां पात्रता पर्ची के लिए गरीबों को अधिकारियों के एवं दफ्तरों के चक्कर लगाने पडते थे। वहीं अब पात्रता पर्ची घर-घर पहुंचाई जा रही है। इसके साथ ही प्रदेश के गरीबों को अच्छे हॉस्पिटल मिलें, अच्छे स्कूल मिले इसके लिए भी सरकार द्वारा तेजी से कार्य किया जा रहा है।

स्वर्ण रेखा नदी के उपर एलिवेटेड रोड बनाई जा रही

उन्होने कहा कि ग्वालियर के विकास के लिए प्रदेश सरकार द्वारा ऐतिहासिक कार्य किये जा रहे हैं। जिसमें लगभग 900 करोड़ रूपये की लागत से स्वर्ण रेखा नदी के उपर एलिवेटेड रोड बनाई जा रही है। जो कि ग्वालियर के विकास में नये आयाम रचेगी। वहीं पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया एवं ग्वालियर के सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर के सराहनीय प्रयासों से ग्वालियर शहर के विकास के लिए अनेक योजनायें

क्रियान्वित की जा रही हैं, जिनका लाभ आने वाले समय में ग्वालियर के लोगों को मिलेगा। ग्वालियर सांसद विवेक शेजवलकर ने कहा कि पिछले 15 वर्षों में प्रदेश के मुख्यमंत्री ने मध्य प्रदेश के सभी नगरों को सवांरने का कार्य किया है। ग्वालियर में भी पिछले समय से काफी परिवर्तन आया है तथा निरंतर विकास चल रहा है। आने वाले समय में ग्वालियर शहर का बडी-बडी विकास योजनाओं का लाभ मिलेगा। इस अवसर पर देशभर में प्रारम्भ किये गए अमृत महोत्सव के कार्यक्रम के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा स्वतंत्रता की 75वी वर्ष गांठ पूर्ण होने के उपलक्ष में सावरमती से एक यात्रा प्रारम्भ की जा रही है। यह यात्रा स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले बलिदानियों के लिए समर्पित होगी। इसी तारतम्य में देश के प्रत्येक शहर की तरह ग्वालियर में भी कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं जिसका शुभारंभ वीरांगना लक्ष्मीबाई की समाधी पर माल्यार्पण के साथ किया गया। मिशन नगरोदय के तहत ग्वालियर में आने वाले 5 वर्षों में किस प्रकार सडकों का, पेयजल व्यवस्थाओं का, विद्युत का, सीवर व अन्य विकास योजनाओं का किस प्रकार से विस्तार किया जाएगा। इसकी योजना के संबंध में ग्वालियर के विकास के रोड मैप को लेकर तैयार की गई पुस्तक का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया।

केन्द्रीय मंत्री, सांसद, जिले के वरिष्ठ प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों ने लगवाए टीके

कोविड-19 की वैक्सीन पूरी तरह सुरक्षित

● **गूंज न्यूज नेटवर्क,**

केंन्द्रीय कृषि विकास, किसान कल्याण, खाद्य प्रसंस्करण, उद्योग एवं पंचायत व ग्रामीण विकास मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने नईदिल्ली के

राम मनोहर लोहिया अस्पताल पहुँचकर कोविड-19 से बचाव के लिये पहला टीका लगवाया। केंद्रीय मंत्री श्री तोमर ने इस अवसर पर कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में दुनिया का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान चल रहा है। उन्होंने कहा देश में ही निर्मित कोरोना वैक्सीन पूरी तरह से सुरक्षित है। अपनी बारी आने पर सभी लोग टीका अवश्य लगवाएँ। वहीं दूसरी ओर 60 साल से अधिक आयु के बुजुर्ग एवं 45 से अधिक आयु के गंभीर बीमारी वाले लोगों को वैक्सीन लागाई गई ग्वालियर के सांसद विवेक शेजवलकर ने वैक्सीन लगवाई वैश्विक महामारी कोविड-19 से बचाव के लिये ग्वालियर जिले में भी वैक्सीन लगाकर लोगों को सुरक्षा कवच प्रदान किया जा रहा है। कोविड की वैक्सीन पूरी तरह सुरक्षित है। इसे हर व्यक्ति को लगवाना चाहिए। इसका संदेश देने के लिये जिले के वरिष्ठ प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों ने भी जयारोग्य चिकित्सालय पहुँचकर टीका लगवाया। जिले में 10, 11 व 12 फरवरी को फ्रंट लाइन वर्करों को कोविड से बचाव के टीके लगाए जा रहे हैं। फ्रंट लाइन कर्मचारियों में नगर निगम, जिला प्रशासन और जिला पंचायत के शासकीय अधिकारी-कर्मचारी शामिल हैं। जेएएच अस्पताल परिसर में बनाए गए टीकाकरण केन्द्र में संभागीय आयुक्त श्री आशीष सक्सेना, आईजी श्री अविनाश शर्मा, कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह, पुलिस अधीक्षक श्री अमित सांघी, नगर निगम आयुक्त श्री शिवम वर्मा, सीईओ स्मार्ट सिटी श्रीमती जयति सिंह, अपर कलेक्टर श्री आशीष तिवारी, एडीएम श्री टी एन सिंह, एडीएम श्री रिंकेश वैश्य, सीईओ जिला पंचायत श्री किशोर कान्याल, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व श्री प्रदीप तोमर, श्री अनिल बनवारिया, श्री एच बी शर्मा सहित नगर निगम के अपर आयुक्त श्री नरोत्तम भार्गव, श्री राजेश श्रीवास्तव और मुकुल गुप्ता सहित वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों ने टीके लगवाए।

पूर्व अधीक्षक जेएएच व जीआर मेडिकल कॉलेज के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. जे.एस. सिकरवार ने कोरोना वैक्सीन लगवाई और सभी से वैक्सीन लगवाने की अपील भी की।

रावतपुरा श्रीधाम में 85 फ़ीट ऊँची आदिदेव शिव प्रतिमा का अनावरण

ज्ञान, भक्ति एवं कर्म का संगम है रावतपुरा धाम

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि रावतपुरा धाम एक अदभुत पवित्र धार्मिक तीर्थ स्थल है। इसे तीर्थ पर्यटक सर्किट में जोड़ा जायेगा। यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं के लिये सामुदायिक भवन की व्यवस्था की जाकर धाम में पेयजल की समस्या को भी दूर किया जायेगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान गुरूवार को भिण्ड जिले के रावतपुरा धाम में 3 करोड़ रूपये की लागत से निर्मित 85 फीट ऊँची आदिदेव शिव प्रतिमा के अनावरण समारोह को सम्बोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने महाशिवरात्रि पर रावतपुरा श्रीधाम में 3 करोड़ रुपये की लागत से नवनिर्मित 85 फ़ीट ऊँची आदिदेव शिव प्रतिमा का अनावरण किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान के साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती साधना सिंह, खजुराहो सांसद एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री वीडी शर्मा, राज्यसभा सांसद श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, नगरीय विकास एवं आवास राज्य मंत्री श्री ओपीएस भदौरिया, भिण्ड-दतिया सांसद श्रीमती संध्या राय, गुना-शिवपुरी सांसद श्री के.पी.एस. यादव सहित विधायकगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री चौहान की धर्मपत्नी श्रीमती साधना सिंह चौहान, राज्यसभा सांसद श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, खजुराहो सांसद एवं प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री वी.डी. शर्मा, ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, नगरीय विकास राज्य मंत्री श्री ओपीएस भदौरिया, सांसद श्रीमती संध्या राय, सांसद श्री केपीएस यादव, सांसद श्री वीरेन्द्र खटीक, विधायक सर्वश्री वीरेन्द्र रघुवंशी, श्रीमती रक्षा सिरोनिया, श्री हरीशंकर खटीक, मुकेश चौधरी, राधेलाल रावत, नरेन्द्र सिंह कुशवाह, श्री रावतपुरा सरकार लोक कल्याण ट्रस्ट के महाराज श्री रविशंकर जी सहित जन-प्रतिनिधि, नागरिक एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने मूर्ति अनावरण कार्यक्रम में शिवरात्रि पर्व की सभी को शुभकामनाएँ दी। उन्होंने कहा कि आज के पवित्र दिन आदिदेव शिव की प्रतिमा के अनावरण के दौरान विशाल स्वरूप में भगवान शिव के दर्शन करने का अवसर मिला है। उन्होंने कहा कि मानव के जीवन का अंतिम लक्ष्य ईश्वर को प्राप्त करना है। इसके लिए तीन मार्ग हैं, जिनमें ज्ञान मार्ग के माध्यम से वेद, पुराण उपनिषेद एवं गीता के माध्यम से ज्ञान अर्जित करना है। जबकि दूसरा मार्ग ईश्वर की भक्ति का और तीसरा कर्म मार्ग का है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि कर्म मार्ग के रूप में ईश्वर ने मनुष्य को जिस रूप में कार्य करने का अवसर दिया है, उसे पूरी ईमानदारी एवं निष्ठा के साथ करें। उन्होंने कहा कि ज्ञान, भक्ति एवं कर्म के त्रिवेणी का संगम रावतपुरा धाम है।

राज्यसभा सांसद श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि रावतपुरा धाम में आकर काफी सकुन मिला है। ऐसा लग रहा है कि यहाँ प्रभु के चरणों में उपस्थित हुए हैं। उन्होंने कहा कि रावतपुरा सरकार धार्मिक स्थलों का एक केन्द्र बन चुका है। भगवान शिव की 85 फीट ऊँची प्रतिमा के यहाँ आकर दर्शन करने का अवसर मिला है। श्री सिंधिया ने कहा कि इस भव्य एवं विशाल प्रतिमा को बनाने वाले कारीगरों एवं शिल्पियों का भी विशेष योगदान रहा है। श्री सिंधिया ने कहा कि रावतपुरा सरकार चिकित्सा, शिक्षा एवं समाज-सेवा के क्षेत्र में पूरे मध्यप्रदेश में महत्वपूर्ण उदाहारण प्रस्तुत कर रहा है। खजुराहो सांसद एवं प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री वी.डी. शर्मा ने कहा कि हम बड़े सौभाग्यशाली है कि रावतपुरा धाम में भगवान शिव की विशाल प्रतिमा के दर्शन करने का अवसर मिला है। उन्होंने कहा कि रावतपुरा सरकार मध्यप्रदेश ही नहीं, पूरे देश के अंदर विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर अनूठा उदाहारण प्रस्तुत कर रहा है। यहाँ आने से जो प्रेरणा मिलती है, वह अनुकरणीय है। उन्होंने कहा कि रावतपुरा धाम आकर चारों धामों के दर्शन करने जैसा अहसास होता है। रावतपुरा धाम धर्म, संस्कृति एवं संस्कार देने का एक बड़ा केन्द्र बन रहा है।

रावतपुरा धाम को तीर्थ पर्यटक सर्किट से जोड़ा जायेगा : चौहान

ऐतिहासिक एवं प्राचीन ग्वालियर का मेला

मेला नाम लेते ही,ज़हन मैं झूले,खान पान,मस्ती उमंग की तस्वीर बनने लगती है. मेले भारत की संस्कृति का हिस्सा रहे है,समय के साथ तब और अब मैं बहुत बड़ा परिवर्तन देखने मिलता है .तब मेले लोक संस्कृति से ही जुड़े रहते थे ,पर अब इनका व्यवसायिककरण हो गया है. अगर आप ग्वालियर से जुड़े है तो आप की उत्सवधर्मिता मैं एक महत्पूर्ण हिस्सा होगा,वो है ग्वालियर मेला,1905 पशु मेले के रूप मैं शुरू हुआ मेला जो आज 100 से जयादा साल का होने के बाद और ज्यादा नौजवान हो गया है, कभी किसी ने सोचा भी ना होगा की आज का ग्वालियर मेला प्राधिकरण का श्रीमंत माधव राव सिंधिया व्यापार मेला 500 करोड़ तक का टर्नओवर देगा. आज ये मेला परम्परा और आधुनिकता का संगम है.

● (पुनीत शर्मा) गूंज न्यूज नेटवर्क,

23 अगस्त 1984 को इसे राज्य स्तर व्यापार मेले का दर्ज़ा दिया गया.104 एकड़ मैं बने इस मेले के लिए 1996 मैं व्यापार मेला प्राधिकरण बनाया गया। पूर्व प्रधानमंत्री अटल जी का तो इस मेले से बिशेष लगाव था.अपने

मेले का शुभारंभ

ग्वालियर प्रवास के वक़्त अगर मेला लगा हुआ हो तो वो वहां आये बिना नहीं रहते थे,झूलो का ,खानपान का आनंद भी लेते थे . इस बात मैं आधुनिक काल मैं माधव राव जी ने इसके विकास के लिए कई प्रयास किया,जैसे सेल्स टेक्स मैं छूट (जो बात मैं बंद हो गई थी) पर अब ज्योतिरादित्य सिंधिया के प्रयास फिर शुरू हो गई।शादी विवाह या घर गृहस्ती की खरीदारी ग्वालियर मेले के लिए रोक दी जाती थी .मेले कई बड़े गार्डनों को अब शादियों के आयोजनों के लिए दिया जाने लगा है .इस के स्थान पर पूरे साल अगर यहाँ सांस्कृतिक आयोजन या इस से जुडी हुई कोई और गतिबिधी की जाती तो जयादा अच्छा होता चलो फिर आया मेले का मौसम अपने सांस्कृतिक कायक्रमो और अपनी भव्यता के साथ तरह -तरह के मनोरजन के साधा जुटा कर फिर हम सब का स्वागत करने के लिए तैयार है ,आप भी फिर कहियेगा मेलो मैं मेला ग्वालियर का

सिंधिया परिवार ने की ग्वालियर मेले की शुरूआत : सिंधिया

ग्वालियर मेले के शुभारंभ अवसर पर राज्यसभा सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि यह ग्वालियर के लिये नहीं बल्कि पूरे मध्यप्रदेश के लिये ऐतिहासिक क्षण है कि 100 वर्षों से अधिक समय से लग रहे इस ऐतिहासिक एवं प्राचीन मेले की शुरूआत सिंधिया परिवार के पूर्वजों द्वारा की गई थी। उन्होंने कहा कि यह मेला एक पशु मेले के रूप में शुरू किया गया था, जिसका धीरे-धीरे विस्तार कर उनके पूज्य पिताजी स्व. माधवराव सिंधिया ने व्यापार मेले के रूप में पहचान दिलाई। मेले की पूरे देश में एक अपनी छवि एवं पहचान रही है। श्री सिंधिया ने कहा कि मेले में वाहन पंजीयन शुल्क से पहले जहाँ 100 करोड़ का व्यापार होता था, वहीं अब वाहनों के पंजीयन शुल्क में छूट से 800 करोड़ का व्यापार होगा, जिससे राज्य सरकार को राजस्व प्राप्त होगा। राजस्व एवं परिवहन मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा कि ऑटोमोबाइल के क्षेत्र में ग्वालियर का मेला एक क्रांतिकारी मेला रहा है। कार्यक्रम में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री श्री ओमप्रकाश सकलेचा और सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री महेन्द्र सिंह सिसौदिया, उद्यानिकी एवं खाद्य प्र-संस्करण (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री श्री भारत सिंह कुशवाह, नगरीय विकास एवं आवास राज्य मंत्री श्री ओ.पी.एस. भदौरिया, लोक निर्माण राज्य मंत्री श्री सुरेश धाकड़ सहित अन्य जन-प्रतिनिधि उपस्थित थे।

अंचल का लोक संगीत

लोकगीत लोक के गीत हैं। जिन्हें कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा लोक समाज अपनाता है। सामान्यतः लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित एवं लोक के लिए लिखे गए गीतों को लोकगीत कहा जा सकता है। लोकगीतों का रचनाकार अपने व्यक्तित्व को लोक समर्पित कर देता है। शास्त्रीय नियमों की विशेष परवाह न करके सामान्य लोकव्यवहार के उपयोग में लाने के लिए मानव अपने आनन्द की तरंग में जो छन्दोबद्ध वाणी सहज उद्भूत करता हूँ, वही लोकगीत है।

● (पुनीत शर्मा) गूंज न्यूज नेटवर्क,

संगीत की विरासत की बात करे तो इसका बजूद देवताओ से लेकर इंसानो तक इतना बिस्तृत है

की जीवन, प्रकृति, देवगण, प्रेम, नफरत, युद्धघोष, मौसम, जीव -जंतु तक इसमें समाये हुए है. लोकसंगीत एक ऐसा उपहार है जो बरदान है ..और बात है लोकसंगीत की तो यह हमारी लोक संस्कृति की पहचान है, ग्रामीण जनजीवन की लोक कला ,त्यौहार ,रीतीरिवाज़ आदि के सारे रंगो का जीवंत चित्रण है लोकसंगीत. हमारा चम्बल का अंचल लोकगीतों की कई विधाओं को अपने अंचल मैं समेटे हुए है.जिनमे कुछ लोकगीत शैली की बात करे तो कन्हैया लोकगीत एक ऐसी परम्परा का निर्वाहन करता है जिसमे बृज और बुंदेली शैली का मिश्रण है। हालांकि इस मैं कोई काव्यात्मक शैली नहीं होती.इसका पूरा विषय भक्ति,संस्कृति,लोकपरम्परा आधारित होता है.आमतौर पर कन्हैया लोकगीत किसी संगीत वाद्ययंत्र के मोहताज नहीं होते,और देखा जाये तो इसकी कोई ख़ास राग रागनी के बारे मैं कोई लिखित प्रमाण मिला है,आमतौर पर पुराने समाये जंगलो मैं रहने वाली जातियों ने इसे संजोया है।

हालांकि ये आजकल अपना मूलस्वरुप खो रही है .फिर भी बुजुर्गों की विरासत के तौर पर कुछ टोलियो ने इसे ज़िंदा रखा है.इसका प्रदर्शन गांव- चोपालो पर होता है पर विशाल स्वरुप आप ग्वालियर मेले के पशु मेले आज भी देखने को मिलता है कुछ और अंचल के लोक गीत परंपरा के बारे मैं आप को बताते। कई और लोकगीतों की जो प्रचलित कला है उन मैं एक है लांगुरिया।

लांगुरिया

लांगुरिया में बृज भाषा का पुट स्पष्ट दिखाई देता है। लोक गीतों की कई ऐसी विधाएं हैं जिनमें बृज भाषा बृज के कवियों का विशेष योगदान रहा है। लांगुरिया पर लोक नृत्य भी किया जाता है लांगुरिया इसमें मान्यताओं और हंसी-ठिठोली का वर्णन रहता है। जो समय के साथ सिमट गई हैं , अब यह गावों में अपने आखिरी चरण पर हैं। अन्य लोकगीत शैलीयो में प्रमुख है।

गोठः इसमेंभी लोक देवताओं की गाथाएं गाई जाती हैं। (के भये कनैया, के भए कारस,जिन्ने गयियनन की राक्खी हो लाज हो ..) गुर्जर समुदाय जो चम्बल और केन नदी के बीच बसेरा करते थे उनके लोकदेवता के रूप मैं मान्य कारसदेव को ये लोकगीत शैली समर्पित है, उनकी गाथा उनके सम्मान मैं छोटी छोटी गाथा के रूप में गाई जाती है.

लीला

लीला मैं लोक देवी देवताओ का प्रसस्ति गान होता है,जो की आमतौर पर तीज त्यौहारो आदि मैं गया जाता है इसमें कई लोक परमपराओं का उल्लेख भी होता है,साथ ही लोकदेवताओं की परमपरा को भी शामिल किया जाता है

ढिमरयाई

इसे ढीमर जाति के लोग ही गाते हैं। इसमें पानी और पानी के जीवों का वर्णन होता है। ढीमर समाज द्वारा गाये जाने वाले लोकगीतों मैं जीवन दायक जल और उस जल मैं विचरण करने वाले जीव जन्तुओ का लोक शैली मैं गायन किया जाता है।

राई

बेड़िया समाज का लोकसंगीत और लोकनृत्य राई यु तो सामाजिक दृष्टिकोण से बेड़िया समाज की संस्कृति का हिस्सा है, किन्तु कई लोगो का ऐसा मानना है की राई शब्द का उच्चारण राधा से आया है ..क्यों की इस लोकगीत के कई शब्द राधा द्वारा कृष्ण को रिझाने को गाये गए लोकगीतों का मिश्रण है . मगर दूसरे विद्वान इसे विशुध्द रूप से आदिवासी नृत्य मानते हैं। चूंकि यह नृत्य मशाल की रोशनी में होता था और मशाल को बुझने न देने के लिए इसमें राई डाली जाती थी, इसीलिए यह राई नृत्य कहलाया। सच तो यह है की लोकगीतों की देशव्यापी चर्चा तो अनंत है लेकिन अगर अंचल की ही बात करे तो ये लेख अधूरा है, क्यों की हमारे अंचल मै ही लोकगीतों का इतना विस्तृत संसार है की उन को सिर्फ इस लेख मै नहीं समेटा जा सकता. और इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता की लोकगीतों की लुप्त होती परंपरा को जो कुछ गायक या गायन टोली इस विस्तृत परम्परा को तब भी अपनी दम पर जीवित रखे , जब हिंदी फिल्मो मैं इनके मूल स्वरुप को बिगाड़ कर फूहड़ तरीके से पेश किया जा रहा है ,इस के हेतु कुछ नियम बनाने की बेहद आवश्यकता है साथ ही लोक गायकी की परंपरा को बचाने की जरुरत भी है .

ऐतिहासिक चम्बल की धरोहरें

“

मुरैना भारत के मध्य प्रदेश प्रान्त का एक नगर है एतिहासिक चम्बल की ऐतिहासिक धराहरें पर्यटकों को आकर्षित करतीं हैं। उत्तरी मध्य प्रदेश में स्थित मुरैना चंबल घाटी का प्रमुख जिला है। 5000 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैले इस जिले से चंबल, कुंवारी, आसन और सांक नदियां बहती हैं। पर्यटन के लिए आने वालों के देखने के लिए यहां अनेक दर्शनीय स्थल हैं। इन दर्शनीय स्थलों में सिहोनिया, पहाडग़ढ़, मीतावली, नूराबाद, सबलगढ़ का किला और राष्ट्रीय चंबल अभ्यारण्य प्रमुख हैं। यहां एक पुरातात्विक संग्रहालय और गैलरी भी देखी जा सकती है। यह जिला ग्वालियर नगर से लगभग 46 कि.मी. की दूरी पर है।

ऐतिहासिक शहर मुरैना मध्य प्रदेश राज्य का एक नगर तथा एक जिला मुख्यालय भी है, जो चंबल घाटी के अंतर्गत आता है। चम्बल घाटी के बारे में तो आप सभी जानते होंगे चंबल घाटी को बागियों का गढ़ भी कहा जाता है। मुरैना जिला ग्वालियर से मात्र 40 किलोमीटर दूर तथा उत्तरी मध्य प्रदेश में स्थित है जो लगभग 5000 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है।यह जिला अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के लिए लाखों पर्यटकों को आकर्षित करता है। यहाँ देखने योग्य सिहोनिया, मितावली पडावली, नूराबाद, सबलगढ़ का किला, चंबल अभ्यारण, करह धाम, नोनार शनिचरा धाम आदि प्रमुख हैं। जिन्हे देखने के लिए प्रतिवर्ष देश-विदेश से लाखों पर्यटक आते रहते हैं।

ककनमठ मंदिर सिहौंनिया

ककनमठ मंदिर सिहौंनिया 9वीं शताब्दी का है। पूरा मंदिर पत्थरों पर टिका हुआ है। इतिहासकारों के मुताबिक इस मंदिर को सिहौंनिया के सोनपाल राजा ने अपनी रानी ककनावती के लिए बनवाया था। हालांकि किवदंति है कि मंदिर को एक रात में ही भूतों ने तैयार किया था। इस मंदिर में शिवलिंग है और 52 खंभों पर बना हुआ है। मंदिर ख्याति प्राप्त तो है, लेकिन पर्यटकों के हिसाब से यहां पर सुविधाएं नहीं हैं। सिहौंनिया ककनमठ मंदिर मुरैना से करीब 30 किमी है। यहां पर बस या निजी वाहनों से जाया जा सकता है।

बटेश्वरा मंदिर

बटेश्वरा के शिव मंदिर भी 11 वीं शताब्दी के हैं। इन मंदिरों को गुर्जर प्रतिहार राजाओं ने बनवाए थे। यहां पर 4 सौ मंदिरों की श्रंखला है, लेकिन अवैध उत्खनन की वजह से अधिकतर मंदिर गिर गए थे, लेकिन आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया ने मंदिरों को दोबारा से खड़ा किया है। ऐसे करीब सौ मंदिर हैं, जिन्हें दोबारा से खड़ा किया है।

मितावली का चौंसठ योगिनी मंदिर

रिठौरा क्षेत्र का मितावली का चौंसठ योगिनी मंदिर पहाड़ी पर बना हुआ है। यह मंदिर भी 11वीं शताब्दी का है और इसे तांत्रिक पीठ बताया गया है। यानी यहां पर तंत्रमंत्र की साधना होती थी। मंदिर का डिजायन संसद भवन जैसा है। इतिहासकारों के मुताबिक इस मंदिर को देखकर ही लुटियंस ने दिल्ली में संसद भवन डिजायन की थी। इस मंदिर को देखने के लिए भी सैलानी आते हैं, लेकिन उतने नहीं आते।

ऐतिहासिक शहर ग्वालियर

ऐतिहासिक पर्यटन स्थल

ग्वालियर एक ऐतिहासिक शहर है जो अपने मंदिरों, प्राचीन महलों और करामाती स्मारकों के लिए प्रसिद्ध है जो किसी भी यात्री को पुराने ज़माने में ले जाते हैं। यह मध्य प्रदेश राज्य का चौथा बड़ा शहर है। ग्वालियर को हिन्द के किले के हार का मोती कहा जाता है। यह स्थान ग्वालियर किले के लिए प्रसिद्ध है जो कई उत्तर भारतीय राजवंशों का प्रशासनिक केंद्र था। जहाँ इतिहास आधुनिकता से मिलता है ग्वालियर वह स्थान है जहाँ इतिहास आधुनिकता से मिलता है। यह अपने ऐतिहासिक स्मारकों, किलों और संग्रहालयों के द्वारा आपको अपने इतिहास में ले जाता है तथा साथ ही साथ यह एक प्रगतिशील औद्योगिक शहर भी है। आधुनिक भारत के इतिहास में ग्वालियर को अद्वितीय स्थान प्राप्त है।

इतिहास के पन्नों में ग्वालियर का नाम ऐतिहासिक शहरों में शुमार है। इस ऐतिहासिक शहर की सुन्दरता, आकर्षित कर दने वाली स्मारकों, महलो और मंदिरों की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी ही कम हैं। यहां के ऐतिहासिक स्थलों की बनाबट में शानदार वास्तुकला की झलक देखने को मिलती हैं। ग्वालियर पर्यटन स्थल खूबसूरत पहाड़ियों, सुन्दर हरियाली और मदमस्त कर देने वाली जलवायु से घिरा हुआ स्थान हैं। ग्वालियर का किला शहर की भव्यता को और अधिक बड़ा देता है और इस किले से पूरे शहर का खूबसूरत नजारा दिखाई देता हैं। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि प्रसिद्ध संगीतकार तानसेन का जन्म ग्वालियर में ही हुआ था और तानसेन का मकबरा भी यही बना हुआ हैं। आज हम आपको ग्वालियर और इसके आकर्षित पर्यटक स्थलों के बारे में जानकारी देने जा रहे हैं। ग्वालियर कई महलो, इमारतो, खंडरो, मंदिरों और पर्यटन स्थलों से भरी हुई नगरी हैं। यह शहर पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता हैं अरु दूर-दूर से आने वाले पर्यटकों का मैला यहां लगा रहता हैं। तो आइए हम आपको ग्वालियर शहर के पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी देते है। ग्वालियर का किला पूरे दक्षिण भारत का एक अभेद किला है। इस किले का निर्माण दो भागो में किया गया था। जोकि दो अलग अलग समय अवधि के दौरान हुआ था। ग्वालियर किले की सुन्दरता और विशालता का वर्णन शब्दों में करना कठिन हैं। इस किले में मन मंदिर, गुजरी महल, पानी के टैंक, कर्ण, जहागीर आदि है। ग्वालियर आने वाले पर्यटकों को एक बार इस किले में जरूर घूमने जाना चाहिए। ग्वालियर का दर्शनीय स्थल तेली का मंदिर ग्वालियर किले

में स्थित हैं। इस मंदिर का निर्माण 9वीं शताब्दी में किया गया था और यह ग्वालियर की सबसे बड़ी ईमारत हैं। जिसकी ऊंचाई 100 फिट हैं। यह शानदार भव्य मंदिर अपनी अनूठी वास्तुकला के लिए पूरे भारत वर्ष में प्रसिद्ध है। ग्वालियर किले में भिन्न प्रकार के महल स्थित हैं जैसे कि मानमंदिर करण महल, जहाँगीर महल, शाहजहाँ मंदिर एवं गुरजी महल आदि। ग्वालियर क्षेत्र में ग्वालियर शहर के अन्तर्गत दुर्ग पर चले जहां आलमगीरी दरवाजा जो किलागेट से प्रारंभ होता है। दूसरा उरवाई एवं ढोड़ापुर गेट है। दुर्ग पर किलागेट से आने पर प्रतिहार कालीब चतुर्भुज मंदिर जिसमें शून्य का संकेत एक अभिलेख से होता है। किले पर निम्न स्थल दर्शनीय है। चतुर्भुज मंदिर 8-9 वीं शती. ई. , हथियापौर गेट , मानमंदिर , कर्णमहल , जहांगीर महल , शाहजहां महल, जौहर ताल, हुमायू महल , ढोड़ापुर गेट , तेली का मंदिर , सास बहू का मंदिर , गुरूद्वारा , सिंधिया स्कूल , दुर्ग की जैन मूर्तियां इसके अतिरिक्त सिंधिया संग्रहालय नगर निगम संग्रहालय, गूजरी महल संग्रहाल दर्शनीय है। रानी लक्ष्मीबाई की समाधि, फूलबाग, तिगराबांध, सूर्य मंदिर आदि दर्शनीय हैं।

तानसेन का मकबरा

ग्वालियर में देखने लायक जगहों में तानसेन का मकबरा भी शामिल हैं। यह मकबरा भारत के प्रसिद्ध संगीतकार

और सम्राट अकबर के दरबार के प्रमुख गायक तानसेन का हैं जोकि अकबर के दरबार के नो रत्नों में से एक हैं। माना जाता है कि ग्वालियर का यह प्रसिद्ध संगीतकार अपने संगीत के जादू से बारिश करा देता था और जानवरों को अपने संगीत से मन्त्र मुग्ध कर देता था।

गुजरी महल

गुजरी महल मान सिंह द्वारा अपनी सबसे प्रिय पत्नी

मृगनयनी के लिए 15वीं शताब्दी के दौरान बनबाया गया था। यह महल अब खंडरों में तब्दील होता जा रहा हैं। महल में एक पुरातात्विक संग्रहालय भी बना हुआ है।

सास बहु मंदिर

ग्वालियर के प्रसिद्ध सास बहु मंदिर का निर्माण 9वीं शताब्दी में किया गया था। ग्वालियर का सास बहु मंदिर यहा आने वाले पर्यटकों और भक्तो को बहुत अधिक आकर्षित करता हैं। मंदिर के नाम सास-बहू का अभिप्राय भगवान विष्णु के एक अन्य नाम शास्त्री बहू का संक्षिप्त रूप है।

सूर्य मंदिर

सूर्य मंदिर भगवान सूर्य देव को समर्पित हैं। सूर्य मंदिर ग्वालियर के सबसे शानदार मंदिरों में से एक है और साथ ही साथ इस मंदिर में शानदार वास्तुशिल्प है जो आश्चर्यचकित कर देती हैं। सूर्य मंदिर का निर्माण वर्ष 1988 के दौरान एक प्रसिद्ध उद्योगपति जीडी बिड़ला के द्वारा करबाया गया था। सूर्य मंदिर में आने वाले पर्यटकों की लम्बी कतार वर्ष भर लगी रहती हैं।

सरोद घर

ग्वालियर आने वाले पर्यटकों में संगीत के शौकीन व्यक्ति अक्सर सरोद घर की ओर रुख करना पसंद करते है। सरोद घर संगीत का एक संग्रहालय है जिसे महान संगीत उस्ताद हाफिज अली खान के पैतृक घर में बनाया गया हैं। इस संग्रहालय में पुराने समय के कुछ संगीत वाद्ययंत्र रखे गए हैं।

रानी लक्ष्मीबाई की समाधी

ग्वालियर में रानी लक्ष्मी बाई की समाधी बनी हुई है जोकि ग्वालियर आने वाले पर्यटकों के लिए एक शानदार पर्यटन स्थल हैं। यहां के आकर्षण में रानी लक्ष्मी बाई की 8 मीटर उंची प्रतिमा बनी हुई हैं। यह इतिहास प्रेमियों के लिए एक शानदार स्थान हैं।

जय विलास पैलेस

आज भी सिंधिया राजवंश और उनके पूर्वजों का निवास स्थान है। इसके एक भाग का उपयोग आजकल संग्रहालय की तरह किया जाता है। इसका निर्माण जीवाजी राव सिंधिया ने 1809 में किया था। लेफ्टिनेंट कर्नल सर माइकल फ़िलोस इसके वास्तुकार थे। इसकी स्थापत्य शैली इतालवी, टस्कन और कोरिंथियन शैली

का अद्भुत मिश्रण है। यहाँ सिंधिया शासनकाल के कई दस्तावेज़ और कलाकृतियाँ तथा औरंगज़ेब और शाहजहाँ की तलवार है। इटली और फ़्रांस की कलाकृतियां और जहाज़ भी यहाँ प्रदर्शन के लिए रखे

गए हैं। संग्रहालय में हज़ारों टन के दो बड़े झूमर लगे हुए हैं जो निश्चित रूप से पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यह स्थान इतिहासकारों और सामान्य जनता को समान रूप से आकर्षित करता है।

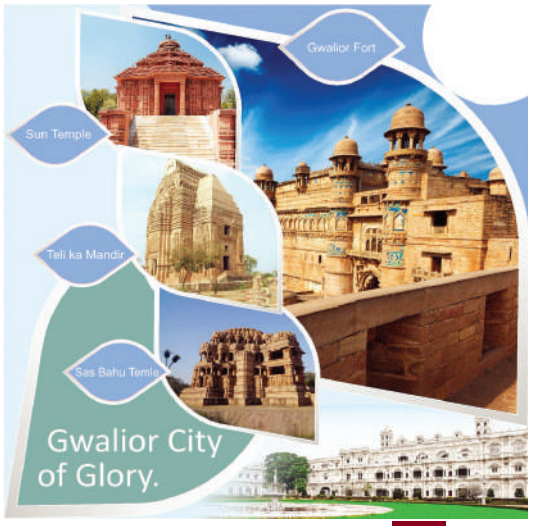

GOONJ

बनाएं मीडिया में करियर

मीडिया एक चमकदार और ग्लैमरस इंडस्ट्री दिखती है इसकी चमक-धमक देखकर अब अधिकतर छात्र मास कम्यूनिकेशन और जर्नलिजम का कोर्स कर रहे हैं। मीडिया में नौकरी के बहुत सारे अवसर हैं। जरूरी नहीं है कि आप किसी न्यूज चैनल या अखबार में ही नौकरी करें कोर्स करने के बाद आप एडवरटाइजिंग एजेंसी, फिल्म लाइन या पब्लिशिंग हाउस में भी काम कर सकते हैं यहां हम आपको मीडिया फील्ड में करियर बनाने के बारे में शुरू से बता रहे हैं।

एक बेहतर और बढ़िया करियर बनाना सब की चाहत है। हर कोई अपने लाइफ में एक ऐसा करियर बनाना चाहता है जो आगे चल के अपने लिए कामयाबी के झंडे गाड़े। इसी क्रम में एक करियर आता है जर्नलिज्म यानि मास कम्युनिकेशन की। अमूमन ये बोला जाता है कि यह फील्ड अधिकतर पुरुष प्रधान के लिए लिए बना है लेकिन पिछले कई सालों में महिलाएं भी इसमें अव्वल रही है। आज पत्रकारिता के फील्ड में अगर कोई पुरुष अग्रणी है तो महिलाएं भी कम नहीं है। उदहारण के लिए आप टीवी चैनलों पर खुद देख सकती है। बहरहाल, इस फिल्ड में जितना कामयाबी है उतना ही प्रारंभिक दिक्कते भी है। मास मिडिया अथवा मास कम्युनिकेशन पत्रकारिता का ही स्वरूप है। पत्रकारिता और मास कम्युनिकेशन की फील्ड में अगर आपको अपना करियर बनाना है तो इस आर्टिकल को बखूबी अच्छे से पढ़ना होगा। तो चलिए जानते हैं इन्हीं आयामों को जिसके जरिए आप पत्रकारिता में एक बेहतर करियर बना सके-

किसी भी फील्ड में जाने से पहले आप हमेशा अपने लक्ष्य को निर्धारित कर ले कि हमें इस फील्ड में ही जाना है। मै इसलिए बोल रहा हूं कि मास मिडिया में आज सिर्फ एक आयाम नहीं है बल्कि बहुत सारे फील्ड है। पत्रकारिता सिर्फ टीवी चैनलों पर दिखने वाली कार्य नहीं है बल्कि इसके कई रूप है। सबसे पहले यहं निर्धारित करें कि हमें पत्रकारिता के फील्ड में कौन सा एरिया सेलेक्ट करना है। क्योंकि आज पत्रकारिता का कोर्स बहुत ही बड़ा होगा है जैसे प्रिंट, रेडियो, वेब, एंटरटेनमेंट, जनसंपर्क आदि से जुड़कर अपना करियर संवार सकती है।

दूसरा कार्य-

किसी भी फील्ड में करियर बनाने के लिए एक डिग्री का होना बहुत ज़रूरी है। पत्रकारिता में भी करियर बनाने के लिए आपके पास कुछ डिग्री का होना अनिवार्य है। सबसे पहले आप 12 वी के बाद किसी मास मिडिया संस्था में दाखिला ले और वहां से बी.ए मास मीडिया का डिग्री ले। मास मीडिया का डिग्री ही आपको पत्रकारिता जैसे फील्ड में करियर को सवांरने में मदद मिलेगीं।

प्रिंट पत्रकारिता

प्रिंट पत्रकारिता एक बेहतर आप्शन हो सकता है जिसके सहायता से अपनी करियर को सवांर सकती है। प्रिंट पत्रकारिता का अगर मूल रम निकले तो इसे आम बोल चला के भाषा में लिखना बोलते हैं। जो हर रोज आपके घरों में पेपर आते और जो खबर उससे लिखे रहते हैं उसी को आज के दौर में प्रिंट पत्रकारिता कहते हैं।

वेब जर्नलिज्म

आज कल अगर इन्टरनेट का जमाना है तो इसका मतलब है बेव जर्नलिज्म का क्रेज। जी हां, आज हर कोई खबर को चलते चलते और किसी कम को करते-करते पढ़ लेना चाहता है। इसी स्वरुप को देखते हुए आप वेब जर्नलिज्म तेजी के साथ बढ़ रहा है। अगर आप इन्टरनेट के खबरों में रूचि रखते हैं तो बेव जर्नलिज्म एक बेहतर फील्ड हो सकता है।

रेडियो जर्नलिज्म

रडियो जर्नलिज्म भी आज के पत्रकारिता में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अगर आप को लगता है कि आप अपने स्वर के माध्यम से खबरों को आसानी से जन के पास पंहुचा सकती है तो रेडियो जर्नलिज्म भी कर सकती है।

मास कम्यूनिकेशन या जर्नलिजम का कोर्स करें

मीडिया में करियर बनाने के लिए आपके पास बेसिक क्वलिफिकेशन होनी चाहिए और वो है मास कम्यूनिकेशन या जर्नलिजम कोर्स की डिग्री या डिप्लोमा। आपके पास शैक्षिक योग्यता होने के बाद ही आपकी दूसरी योग्यताओं पर विचार किया जाएगा। मास कम्यूनिकेशन कोर्स आप किसी अच्छे संस्थान से कर सकते हैं। बेनेट यूनिवर्सिटी ने हाल ही में टाइम्स स्कूल ऑफ मीडिया के जरिए मास कम्यूनिकेशन और जर्नलिजम कोर्स शुरू किया है। आप यहां से कोर्स कर सकते हैं।

तय करें आपको मीडिया में कहां जाना है

मास कम्यूनिकेशन और जर्नलिजम कोर्स करने के बाद आप तय करें कि आपको कहां जाना है आप टेलिविजन यानी न्यूज चैनल्स जॉइन करना चाहते हैं या रेडियो, प्रिंट, डिजिटल मीडिया, एड एजेंसी आदि में नौकरी करना चाहते हैं। यह आप अपनी पसंद और प्राथमिकता के आधार पर तय करें।

इंटर्नशिप के लिए करें अप्लाई

करियर की शुरूआत आप इंटर्नशिप से कर सकते है जिसमें आपको काफी कुछ सीखने को मिलेगा। इंटर्नशिप करते-करते ही नौकरी के लिए भी अप्लाई करें। इसके लिए आप संबंधित कंपनियों की वेबसाइट पर जाकर अप्लाई कर सकते हैं या इन कंपनियों के एचआर सेक्शन में कॉल करके भी पूछ सकते हैं।

शहर-गांवों में एफएम रेडियो का बढ़ता क्रेज

छोटे-बड़े सभी शहरो गांवों में आज एफएम रेडियो का खूब क्रेज है। चौबीस घंटे इन पर नए-पुराने गाने बजते रहते हैं। उत्साह से लबरेज आरजे की मस्ती भरी बातें, न्यूज, करंट अफेयर्स और कहानियां भी श्रोताओं को सुनने को मिलती हैं। जाहिर-सी बात है, एफएम चैनल्स पर अगर इतना कुछ कंटेंट परोसा जा रहा है, तो यहां क्रिएटिव युवाओं के लिए जॉब के अवसर भी खूब होंगे। ऑल इंडिया रेडियो के अलावा विभिन्न एफएम चैनल्स में प्रोड्यूसर, रेडियो जॉकी, न्यूज रीडर, न्यूज रिपोर्टर, कंटेंट राइटर, ट्रांसलेटर, म्यूजिक मैनेजर, साउंड इंजीनियर, कंटेंट मैनेजर, कंटेंट एग्जीक्यूटिव जैसे अनेक प्रोफेशंस की डिमांड तेजी से बढ़ रही है। हाल ही में सरकार ने घोषणा की है कि वर्ष 2016-17 के दौरान देश भर में 100 नए एफएम चैनल्स खोले जाएंगे। स्पष्ट है कि रेडियो इंडस्ट्री में आगे भी चमकदार करियर बना रहेगा।

रेडियो जॉकी/ अनाउंसर

रेडियो इंडस्ट्री की यह सबसे ज्यादा चर्चित और ग्लैमरस जॉब है। एफएम चैनल्स पर आरजे यानी रेडियो जॉकी की मनोरंजक बातें सुनकर मानो एकबारगी सारा तनाव गायब हो जाता है। सरकारी रेडियो स्टेशंस में यही जिम्मेदारी अनाउंसर निभाते हैं। अगर आप भी आवाज की दुनिया में अपना जादू बिखेरना चाहते हैं, तो आपका ग्रेजुएट होना जरूरी है। इस पद के लिए कोई कोर्स किया होना बहुत ज्यादा जरूरी नहीं है। हां, क्रिएटिव और बातूनी स्वभाव यहां बहुत काम आता है। उम्मीदवार की आवाज अच्छी होनी चाहिए। अपने शहर के बारे में अच्छी समझ होनी चाहिए। प्रेजेंटेशन स्किल्स अच्छी होना बहुत जरूरी है।

प्रोड्यूसर/ प्रोग्राम डायरेक्टर

किसी भी रेडियो स्टेशन के प्रोडक्शन डिपार्टमेंट में प्रोड्यूसर अहम पद है। रेडियो के लिए प्रोग्राम का कंटेंट ये ही डिजाइन करते हैं। ये शो की रणनीति तैयार करते हैं। इस जॉब के लिए उम्मीदवार के पास जर्नलिज्म या रेडियो प्रोडक्शन में डिग्री या डिप्लोमा होना जरूरी है।

म्यूजिक मैनेजर

एफएम चैनल्स में म्यूजिक मैनेजर की बड़ी अहम

भूमिका है। शो के दौरान सुनाए जाने वाले गाने ये ही तय करते हैं। अक्सर ऐसे पदों पर क्रिएटिव, म्यूजिक का ज्ञान और म्यूजिक की पृष्ठभूमि रखने वाले लोगों को ही हायरिंग में तवज्जो दी जाती है।

कंटेंट राइटर

रेडियो में कंटेंट राइटर्स ही प्रसारित होने वाले किसी भी कार्यक्रम की स्क्रिप्ट लिखते हैं। कंटेंट राइटिंग रेडियो का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसलिए कॉपी ऐसी होनी चाहिए जो श्रोताओं का ध्यान खींच सके। आप जर्नलिज्म में डिग्री या डिप्लोमा कोर्स करके यहां करियर बना सकते हैं। यह कोर्स 12वीं या ग्रेजुएशन के बाद कर सकते हैं।

रेडियो रिपोर्टर

आप अखबार, टीवी के अलावा रेडियो में भी जर्नलिज्म कर सकते हैं। समाचार प्रसारण के लिए रेडियो स्टेशंस में खुद के रिपोर्टर्स होते हैं। जर्नलिज्म में डिग्री/ डिप्लोमा करके आप यह जॉब पा सकते हैं।

न्यूज रीडर

न्यूज रीडिंग के लिए विशेष तौर पर न्यूज रीडर की नियुक्ति की जाती है। आकाशवाणी और एफएम चैनल्स में ऐसे प्रोफेशनल्स के लिए जॉब के अच्छे अवसर हैं। इसके लिए भी जर्नलिज्म की पृष्ठभूमि का होना जरूरी है। अच्छी आवाज और प्रेजेंटेशन स्किल भी होनी चाहिए।

साउंड इंजीनियर

रेडियो स्टेशन में किसी भी प्रोग्राम को %ऑन एयर÷ करने के लिए साउंड इंजीनियर की सेवाएं ली जाती हैं। साउंड इंजीनियरिंग में डिग्री कोर्स करके आप यह जॉब पा सकते हैं।

ट्रांसलेटर

रेडियो इंडस्ट्री में आप बतौर ट्रांसलेटर भी करियर बना सकते हैं। ऑल इंडिया रेडियो में ऐसे लोगों के लिए अच्छे अवसर होते हैं। इसके लिए योग्यता यह है कि आप अंगरेजी में ग्रेजुएट हों, साथ ही किसी एक भारतीय भाषा पर भी अच्छा अधिकार रखते हों।

निजी एफएम चैनल्स में एंट्री

निजी एफएम चैनल्स में आरजे, प्रोड्यूसर, म्यूजिक मैनेजर या साउंड इंजीनियर की हायरिंग टेस्ट और इंटरव्यू के आधार पर होती है। आरजे पद के लिए स्टूडियो टेस्ट लिया जाता है। वेकेंसी की जानकारी आप एफएम चैनल्स की वेबसाइट्स या जॉब पोर्टल्स पर पा सकते हैं।

रेडियो के साथ ट्यून कीजिए करियर

रेडियो संचार का सबसे पुराना माध्यम है. रेडियो संचार का एकमात्र ऐसा माध्यम है जो दुनिया में सबसे ज्यादा लोगों तक पहुंचा है। रेडियो इंफोटैनमेंट का साधन है जो हमें इंफोर्मेशन देने के साथ-साथ इंटरटेन भी करता है। रेडियो की सबसे बड़ी खासियत ये है कि यह संचार का सबसे सस्ता साधन तो है ही साथ ही हम रेडियो सुनते हुए हमारा काम भी कर सकते है। रेडियो की लोकप्रियता को देखते हुए कई लोग सोचते है कि क्यों ना हम भी रेडियो में काम करे। कई लोग रेडियो में आने वाली आवाज के दिवाने हो जाते है। अगर आप भी रेडियो में एक रेडियो जॉकी के रूप में काम करना चाहते है तो आज हम आपको बताने जा रहे कि एक रेडियो जॉकी कैसे बना जा सकता है। आजकल हर बड़े शहर में प्राइवेट एफएम रेडियो के कई स्टेशन खुल गये है जिससे इस फिल्ड में रोजगार के कई अवसर पैदा हुए है। प्राइवेट एफएम चैनल में अच्छे रेडियो जॉकी की काफी डिमांड रहती है। अगर आप भी रेडियो जॉकी बनना चाहते है तो आपमें कुछ खास गुणों का होना जरूरी है।

रेडियो का नाम लेते ही जहन में पहला वाक्य आता है यह आकाशवाणी है। 1936 में इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस का नाम बदलकर ऑल इंडिया रेडियो रख दिया गया था जिसे हिन्दी में आकाशवाणी के नाम से जाना जाता है। आज भी आकाशवाणी रेडियो माध्यम को सुनने और जानने वालों का पसंदीदा स्टेशन है। केवल आकाशवाणी ही ऐसा एकमात्र स्टेशन है जिस पर हम कमेंटरी और समाचार सुन सकते हैं। जहां तक एफएम की बात है तो देश में इसकी शुरुआत 1977 में मद्रास में हुई। आगे चलकर दिल्ली, कोलकाता, मुंबई और चेन्नै में भी एफ एम प्रसारण शुरू हुए। 1993 तक भारत में ऑल इंडिया रेडियो ही एकमात्र रेडियो प्रसारक था। इसके बाद सरकार ने रेडियो प्रसारण क्षेत्र के निजीकरण की प्रक्रिया शुरू की।

एफ एम तकनीक है क्या?

एफ एम का मतलब है फ्रीक्वेंसी मॉड्यूलेशन। फ्रीक्वेंसी मॉड्यूलेशन रेडियो प्रसारण में हाई फिडेलिटी (जिसे हम हाई-फाई भी कहते हैं) साउंड देता है, जिससे हम साफ स्टीरोफोनिक साउंड सुन पाते हैं। रेडियो प्रसारण में प्राइवेट प्रसारकों को शामिल करने से एफ एम रेडियो का पहला चरण पूरा हुआ और इसके बाद दूसरे चरण के तहत बहुत से रेडियो स्टेशन खुल गए। अब बारी है एफ एम रेडियो के तीसरे चरण की। एफ एम के तीसरे चरण की ज्यादातर प्रक्रिया पूरी हो चुकी है और जल्द ही हमें पूरे देश में करीब 400 नए एफ एम रेडियो सुनने को मिलेंगे। जितने ज्यादा रेडियो स्टेशन, उतने ही ज्यादा रोजगार के अवसर। एक अनुमान के अनुसार, एफ एम के तीसरे चरण में करीब 5 हजार रेडियो जॉकी की जरूरत होगी। इसके अलावा, म्यूजिक सिलेक्टर्स, ओबी प्रजेंटर्स, स्क्रिप्ट राइटर्स,

मार्केटिंग स्टाफ की भी जरूरत होगी। हालांकि, ज्यादातर लोग रेडियो जॉकी ही बनना चाहते हैं लेकिन हमें अपनी प्रतिभा को पहचान कर ही अपने रोजगार का चयन करना चाहिए। रेडियो में रेडियो जॉकी बनने के अलावा और विकल्पों पर भी विचार कर सकते हैं, लेकिन अगर रेडियो जॉकिंग ही आपका पैशन है तो हम आपको बताएंगे कि एक कामयाब आरजे कैसे बन सकते हैं।

आरजे में हों ये गुण

अच्छी आवाज: खराब आवाज जैसा कुछ नहीं होता। हो सकता है कि आपकी आवाज रेडियो प्रसारण के अनुरूप न हो पर अच्छी ट्रेनिंग लेकर आप उसे उस स्तर का बना सकते हैं। रेडियो में आवाज, उच्चारण और स्पष्टता का एक ऐसा मानक है जिसपर आपको खरा उतरना ही होता है। बेशक आपकी आवाज में वह कशिश हो सकती है जिसके जरिए आपको अपने स्कूल, कॉलेज, ऑफिस या किसी समारोह में स्टेज पर बोलने का मौका मिला हो और साथ में मिली हो खूब सारी वाहवाही पर रेडियो के लिए आवाज में कुछ गुणों का होना बहुत जरूरी है।

उच्चारण और स्पष्टता

मोटेतौर पर देखें तो ये दोनों एक जैसे लगते हैं लेकिन उच्चारण जहां बोलने का सही और सटीक तरीका है, बोलने का एक स्टैंडर्ड फॉर्म है, वहीं स्पष्टता का संबंध साफ बोलने से है यानी आपने क्या बोला और दूसरे तक आपकी बात कितनी सही-सही पहुंची। यह ध्वनि के सोर्स से टारगेट तक पहुंचने की प्रक्रिया है और देखने वाली बात यह है कि यह क्रिया कितनी सटीकता से श्रोता तक पहुंची। दोनों में अंतर है। तो उच्चारण से पहले यह जान लेते हैं

कि बोलने में स्पष्टता का महत्व कितना है? कई बार हम अपने माहौल से इस कदर प्रभावित होते हैं कि एक खास तरीके से बोलने लगते हैं।

मॉड्यूलेशन

मॉड्यूलेशन हमारे ध्वनि उच्चारण की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। यह हमारे बोलने के अंदाज में शामिल है। बस जरूरत है तो इसे बाहर लाने की यानी जो भी स्क्रिप्ट दी जाए उसे उसके मूड के हिसाब से पढ़िए, मॉड्यूलेशन अपने आप आ जाएगा। अब आप इसे उच्चारण का भाव कहें या उतार-चढ़ाव कहें, बात इतनी है कि आप अपनी स्क्रिप्ट के साथ इंसाफ करें और उसका मूड बनाए रखें या यूं कहें कि आप बोलते समय एक अभिनेता होते हैं और अपनी आवाज के साथ अभिनय करते हैं। इससे श्रोताओं को तो अच्छा लगेगा ही, आपका संदेश भी पूरा का पूरा चला जाएगा।

भाषा

भाषा पर पकड़ तो रेडियो जॉकी के लिए बहुत जरूरी है। वह भाषा चाहे अंग्रेजी हो, हिन्दी, ऊर्दू या फिर कोई भी क्षेत्रीय भाषा। आप जिस भी भाषा में बोल रहे हों, आपके शब्दों का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए। बोलते समय भावशून्यता, फंबल, रोल, लिप साउंड जैसी गलतियों से बचना चाहिए। बोलने में पढ़ने का भाव नहीं आना चाहिए। बोलने में अगर अंग्रेजी या ऊर्दू भाषा के शब्दों का प्रयोग करें तो वह भी पूरी सटीकता और स्पष्टता से करें।

पढ़ने की आदत

रेडियो जॉकी के लिए पढ़ना बहुत जरूरी है। आप जितना पढ़ेंगे, आपके ज्ञान का विस्तार उतना ही होगा। रेडियो जॉकी न सिर्फ संगीत की बात करता है, बल्कि समाज की हर अच्छाई और बुराई पर भी अपनी राय देता है पर उसमें मनोरंजन का पुट भरकर। इसे इंफोटेनमेंट कहते हैं। आज रेडियो जॉकी ट्रैफिक की बात करता है, मौसम की बात करता है, मुहब्बत और जज्बातों की बात करता है। वो एक तरफ करियर पर भी जानकारी देता है तो दूसरी तरफ महत्त्वपूर्ण लोगों की टिप्पणियों पर भी अपनी राय रखता है। इस तरह वह अपनी तमाम जानकारियों के साथ एक हल्का-फुल्का संगीतमय माहौल बनाए रखता है। इसके लिए एक अच्छे रेडियो जॉकी को अपनी जानकारी हमेशा अपडेट रखनी चाहिए। ऐसा तभी होगा जब आप साहित्य पढ़ें, समाचारों पर ध्यान दें और समाज के साथ तालमेल बैठा कर रखें।8. वाकपटुता

रेडियो जॉकी बनने के लिए जरूरी नहीं कि आप किसी

खास रेडियो जॉकी को कॉपी करें। आप खुद का कौशल दिखा सकते हैं। यह निर्भर करता है आपके स्टाइल और आपके ज्ञान पर। चूंकि आरजे का काम बोलने का है तो बोलने में कंजूसी करना आरजे की फितरत नहीं होती। वह तो बोलता है और बेबाक बोलता है। ध्यान रखें कि रेडियो जॉकी की कही हर बात में एक वजन होता है। वह कभी किसी धर्म, जाति, आस्था पर कोई ऐसी टिप्पणी नहीं करता जिससे गलत संदेश जाए। वह कभी न्यायपालिका पर कॉमेंट नहीं करता। अति विशिष्ट व्यक्तियों, देश की सुरक्षा और पड़ोसी देशों से संबंधों को लेकर भी कोई बात रेडियो जॉकी को नहीं करनी चाहिए, नहीं तो आप स्वयं के साथ-साथ अपने रेडियो प्रसारक को भी परेशानी में डाल सकते हैं।

संगीत की समझ

आरजे के लिए जरूरी है कि उसे संगीत की पूरी समझ हो। मुमकिन हो तो उसे पुराने गीतों से लेकर अब तक के नए गीतों के बारे में, गायकों और गीतकारों तथा संगीतकारों के बारे में भी पता होना चाहिए। हालांकि इसमें स्क्रिप्टराइटर आपकी मदद करता है पर रेडियो जॉकी का खुद का ज्ञान भी विस्तृत होना चाहिए।

स्क्रिप्टराइटिंग

अगर आप खुद अपनी लिखी स्क्रिप्ट पढ़ें तो जो स्वाभाविकता और प्रवाह उसमें आएगा, वह किसी और की लिखी स्क्रिप्ट में नहीं आ पाएगा। आरजे के लिए यह भी जरूरी है कि वह स्क्रिप्ट लिख सके। इसके लिए इंटरनेट, समाचारपत्रों और किताबों से जानकारी जुटाकर अपनी स्क्रिप्ट को और तथ्यात्मक और दिलचस्प बनाया जा सकता है।

ट्रेनिंग कितनी जरूरी

रेडियो स्टेशन भी किसी रेडियो जॉकी को नियुक्त करने के बाद उसे ट्रेनिंग देते हैं और फिर उसे स्वतंत्रतापूर्वक काम करने दिया जाता है। रेडियो जॉकी का एक कार्यक्रम एक घंटे से लेकर चार घंटे तक हो सकता है। कार्यक्रम को और बेहतरीन बनाते हैं आपके म्यूजिक सिलेक्टर्स जो आपके चंक के अनुसार बेहतरीन संगीत/गीतों का चयन करते हैं। स्क्रिप्टराइटर आपकी स्क्रिप्ट को दमदार, मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक बनाते हैं। आरजे अपने कार्यक्रम से पहले अपने प्रड्यूसर की राय लेता है और उसे अपने कॉन्टेंट से अवगत कराता है और उसके सुझावों के मुताबिक कार्यक्रम पेश करता है। यह कार्यक्रम लाइव भी हो सकता है और रेकॉर्डेड भी। खास मौकों के लिए कार्यक्रम रेकॉर्ड कर लिए जाते हैं। तो इन सभी चीजों पर ध्यान देने से आप एक सफल रेडियो जॉकी बन सकते हैं और आप समाज में प्रसिद्धि पा सकते हैं। हो सकता है, इनमें से काफी गुण आपमें पहले से हों, फिर भी ट्रेनिंग जरूरी है। इसके लिए किसी अच्छे संस्थान से ट्रेनिंग लें। ट्रेनिंग किसी ऐसे निजी संस्थान से न लें जिसका मकसद मात्र पैसा कमाना है। ऐसे अनुभवहीन और स्तरहीन संस्थानों में जाकर आप केवल अपना समय और धन बर्बाद करते हैं।

बच्चों के लिए अवसर

अगर आप अपने बच्चों को इस क्षेत्र में लाना चाहते हैं, तो आकाशवाणी के छोटे उस्ताद कार्यक्रम में आप अपने बच्चे को रेडियो जॉकी बनाने के लिए अप्लाई कर सकते हैं। यह कार्यक्रम बच्चे ही पेश करते हैं। इससे आपके बच्चे को अभी से आत्मविश्वास से भरपूर होकर स्पष्ट बोलना और रेडियो पर कार्यक्रम पेश करना आ जाएगा।

रेडियो जॉकी के लिए बढ़ रहे मौके, बनाएं इसमें करियर

हर छोटे-बड़े शहर में रेडियो चैनल तेजी से अपने पांव पसार रहे हैं। सामुदायिक रेडियो चैनल भी तेजी से अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहे हैं। पहले जहां केवल प्रिंट मीडिया का वर्चस्व था, वहीं अब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, वेब मीडिया, सोशल मीडिया, यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म और एफएम

चैनल्स अपनी तरफ खूब आकर्षित कर रहे हैं।विभिन्न शहरों में एफएम चैनल्स खुलने से आरजे के लिए संभावनाएं बढ़ गई हैं... हर छोटे-बड़े शहर में रेडियो चैनल तेजी से अपने पांव पसार रहे हैं। सामुदायिक रेडियो चैनल भी तेजी से अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहे हैं। इसके अलावा, आजकल सोशल मीडिया तो मुख्य मीडिया को भी पीछे छोड़ते हुए अपनी दमदार उपस्थिति को दर्ज करवा रहा है। ऐसे में प्रशिक्षित पत्रकारों की तुलना में आम आदमी भी यहां बढ़-चढ़कर देश दुनिया की खबरें और वीडियो शेयर कर रहा है या खुद तैयार कर सोशल मीडिया पर अपलोड कर रहा है। जाहिर है अब यह क्षेत्र भी व्यावसायिक रूप ले चुका है और यहां भी प्रशिक्षित लोगों की जरूरत बढ़ने लगी है, क्योंकि जब आप अपनी खबर को प्रस्तुत करेंगे तो उसका तौर-तरीका पता होना जरूरी है और स्थानीय या राष्ट्रीय रेडियो चैनल्स पर काम करेंगे तो उसकी भी कार्य प्रणाली का ज्ञान होना जरूरी है।

करियर संभावनाएं

कोर्स के तुरंत बाद किसी बड़े रेडियो स्टेशन, टीवी पर काम की उम्मीद नहीं लगानी चाहिए, बल्कि छोटे रेडियो स्टेशन, टीवी प्रोग्राम्स में खुद को शामिल कराने का प्रयास करना चाहिए, जिससे रेडियो और टीवी से जुड़ी प्रैक्टिकल स्किल सीखने को मिल सके। आपको ऐसे चैनल्स पर अपने रेज्यूमे भेज कर ऑडिशन का समय लेना चाहिए। ऑल इंडिया रेडियो में भी कुछ-कुछ अंतराल पर ऑडिशन होते रहते हैं।

शैक्षिक योग्यता

टीवी न्यूज एंकरिंग या रेडियो जॉकी बनने के लिए 12वीं के बाद जहां सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, शॉर्ट टर्म या वीकेंड कोर्स किए जा सकते हैं, वहीं ग्रेजुएशन के बाद पीजी डिप्लोमा कोर्सेज के लिए आवेदन किया जा सकता है। इस क्षेत्र में आने के लिए डिप्लोमा, डिग्री के अलावा एक और योग्यता बेहद जरूरी है और वह है आपकी भाषा। सही उच्चारण, शब्द भंडार और भाषा के व्याकरण पर पूरी पकड़ होनी बहुत जरूरी है। इसके अलावा न्यूज एंकरिंग के लिए आपका व्यक्तित्व आकर्षक होना महत्वपूर्ण शर्त है। साथ में आपकी अभिव्यक्ति भी दमदार होनी चाहिए।

चयन का तरीका

ऑडिशन के वक्त आप को 10-15 मिनट का समय दिया जा सकता है। कहा जा सकता है कि मान लो आज बॉलीवुड के शहंशाह अमिताभ बच्चन का जन्मदिन है। आपको प्रोग्राम को होस्ट करते हुए गाने भी प्ले करने हैं या फिर आपको एक स्क्रिप्ट लिखने का मौका दिया जाए और फिर आपसे कहा जाए कि आप इसे बोलें। याद रहे लिसनर को यह नहीं लगना चाहिए कि आप स्क्रिप्ट पढ़कर ऑडिशन दे रहे हैं, भले ही आपके हाथ में स्क्रिप्ट हो।

स्किल्स-

एक आरजे में बेहतर कम्यूनिकेशन स्किल के साथ ही प्रेजेंटेशन स्किल का होना भी जरूरी है। एक आरजे के रूप में आपकी आवाज प्रभावशाली होना चाहिए आपके उच्चारण सही और आवाज पर नियंत्रण होना जरूरी है। आपका स्टाइल ओरिजिनल होना चाहिए ताकि लोग आपको पसंद कर सके। आपको मिमिक्री के अलावा अपने शहर की खास लैंग्वेज भी आना जरूरी है ताकि आप अपने शो को और भी अधिक मजेदार बना सके। आपको म्यूजिक की अच्छी समझ होना जरूरी है। एक ऋ्ष्ठ को अपने शहर की जानकारी के साथ-साथ देश और विदेश में होने वाली गतिविधियों की जानकारी होना जरूरी है।

रेडियो जॉकी का काम-

एक रेडियो जॉकी अपनी आवाज की वजह से पहचाना जाता है, यहां उसे हर रोज शो प्रजेंट करना होता है। लेकिन इसके अलावा भी कई काम होते है जो एक रेडियो जॉकी को करने पड़ते है जैसे पटकथा लेखन, म्यूजिक प्रोग्रामिंग और रेडियो एडवरटाइजिंग बनाने का काम करना होता है। इसके अलावा शहर में आई हुई सेलेब्रिटी का इंटरव्यू लेना, शहर के किसी बड़े अधिकारी से किसी मुद्दे पर बात करना

आदि।

योग्यता-

एक रेडियो जॉकी बनने के लिए ये जरूरी नही है कि आपके पास कोई प्रोफेशनल डिग्री हो। लेकिन फिर भी आप चाहे तो 12वीं पास करने के बाद इसके किसी डिग्री या डिप्लोमा कोर्स में एडमिशन ले सकते है ताकि अपने गुणों को और अच्छे से निखारा जा सके।

संभावनाएं-

रेडियो इंडस्ट्री एक ऐसी फिल्ड है जहां संभावनाओं की कमी नही है, बस आपमें टैलेंट होना जरूरी है। आप कई रेडियो चैनल में जॉब के लिए अप्लाई कर सकते है, आकाशवाणी से लेकर कई प्राइवेट एफएम चैनल है जो आपको जॉब दे सकते है। इसके अलावा इस फिल्ड में एक्सपीरियंस हो जाने के बाद आप वॉइस ओवर कमर्शियल, लाइव शो होस्ट, टेलीविजन शो और फिल्मों में भी ट्राई कर सकते है।

मां बनने के बाद भी बॉलीवुड में कायम

अभिनेत्रियों का जलवा

एक समय था जब भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में ऐसी धारणा थी कि एक अभिनेत्री का मां बनने के करियर खत्म हो जाता है. लेकिन आज बदलते वक्त के साथ-साथ अभिनेत्रियों ने इस सोच को बदल दिया है. यह बदलाव सिर्फ बॉलीवुड इंडस्ट्री में ही नहीं बल्कि भारतीय समाज के तकरीबन हर कोने में हो रहा है. आज महिलाओं ने अपनी काबिलियत के बलबूते पर इस परंपरा को तोड़ा है. बॉलीवुड में कई ऐसी अभिनेत्रियां हैं अपने दम पर इंडस्ट्री में एक नया मुकाम हासिल किया है. विश्व महिला दिवस के मौके पर जानें बॉलीवुड की कुछ ऐसी ही अदाकाराओं के बारे में जो मां बनने के बाद भी इंडस्ट्री में कायम है....

हाल ही में अभिनेत्री करीना कपूर खान मां बनी हैं. लेकिन प्रेग्नेंसी के दौरान उन्होंने कोई ब्रेक नहीं लिया और रैंपवॉक करती नजर आई. इस दौरान उन्होंने अपने बयान में कहा था कि वे बेहद खुश हैं क्योंकि रैंप पर वो अकेली नहीं चलीं थी. उन्होंने इस पल को अपनी जिंदगी का बेहद खास पल बताया था.

एश्वर्या राय

बॉलीवुड की खूबसूरत जोड़ी ऐश्वर्या राय और अभिषेक बच्चन एक ही इंडस्ट्री में हैं और अपने करियर में अच्छा कर रहे हैं. मगर पॉपुलैरिटी के मामले में ऐश्वर्या काफी आगे हैं. ऐश्वर्या ने जब शादी का फैसला किया था तो वो अपने करियर में पीक पर थीं. ऐश्वर्या ने 16 नवंबर 2011 को बेटी आराध्या को जन्म दिया था. बेटी आराध्या को समय देने के लिए उन्होंने कुछ समय के लिए थोड़ा ब्रेक लिया और फिर साल 2015 की फिल्म जज्बा से धमाकेदार वापसी की. इसके बाद वे हाल ही में करण जौहर की फिल्म ऐ दिल है मुश्किल में नजर आई. उनकी खूबसूरती ने एकबार फिर दर्शकों को दीवाना बनाया.

माधुरी दीक्षित

बॉलीवुड की धक-धक गर्ल माधुरी दीक्षित के लिए लाखों दिल धड़कते थे, मगर उन्होंने अपना हमसफर इंडस्ट्री से बाहर एक डॉक्टर मिसेज श्रीराम नैने को चुना.

उनके दो बेटे हैं अरिन नेने (मार्च 2003) और रेयान नेने (मार्च 2005). उन्होंने दोनों बेटों की परवरिश के लिए थोड़ा वक्त लिया लेकिन साल 2007 में फिल?म आजा नचले से धमाकेदार वापसी की. इसके बाद वे फिल्म डेढ़ इश्किया में भी नजर आईं आजकल माधुरी डांस दिवाने डांस शो में जज बनी हैं।

काजोल

सदाबहार अभिनेत्री काजोल दो बच्चों की मां हैं. उन्होंने साल 1999 में अभिनेता अजय देवगन संग शादी की थी. साल 2003 में उन्होंने बेटी न्यासा का जन्म दिया था. इसके बाद 2010 में उनको बेटा हुआ जिसका नाम उन्होंने युग रखा. मां बनने के बाद काजोल फना, दिलवाले, और माइ नेम इज खान और दिलवाले जैसी सुपरहिट फिल्मों में काम कर चुकी हैं. अपनी शानदार अदाकारी के कारण आज भी वे दर्शकों की फेवरेट बनी हुई हैं अभी हाल ही में फिल्म तानाजी में काजोल नजर आईं थीं।

शिल्पा शेट्टी

अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी का भी जलवा बरकरार है. उन्होंने बॉलीवुड में कई सफल फिल्में दी है. शिल्पा ने साल

2009 में उद्योगपति राज कुंद्रा से शादी करने के बाद उन्होंने 2012 में बेटे को जन्म दिया था. मां बनने के बाद भी वह टीवी सीरियल और सोशल साइट पर काफी पॉपुलर हैं. इसके अलावा वे अपने पति के बिजनेस में भी उनका हाथ बंटा रही हैं.

ओटीटी

कलाकारों के लिए नया

प्लेटफॉर्म

● गूंज न्यूज़ नेटवर्क,

सिनेमा देख़ने के नए अंदाज़ ओटीटी,नए कलाकारों के लिए नए दरवाजे खोल दिए है. और अब बड़े सितारों ने भी,इस पर अपनी आमद दर्ज़ करा ली है।

रेडियो,सिनेमा,टी.बी.,और अब ओटीटी (ओवर ऑन टॉप) ,इन सारे मनोंरजन के माध्यमो ने

समय-समय पर नए कलाकारों के लिए अपनी क्षमताओं के अनुसार अपने दौर मैं जगह बनाई.कुछ रेडियो के सितारे बने तो कुछ ने सिनेमा टीवी पर अपनी जगह बनाई,शाहरुख खान,टीवी से बड़े परदे पर आये बड़े परदे के सितारे टीवी पर उतरते रहे ,कोरोना काल मैं जब नई फिल्मो की रिलीज़ रुक गई तो सैफ अली से लेकर कई छोटे सितारे ओटीटी के जरिये लोगो के बीच बने रहे.

नाम ,दाम, शोहरत सब कुछ इस नए प्लेटफॉर्म ने दिया,कल तक गुमनाम कलाकारों ने भी अपनी जड़े यही जमा ली ,पर देखा जाए तो इस अवसर को भुनाने के लिए कई फ़र्ज़ी बेनर भी फेसबुक,टवीटर के जरिये कलाकारों को बेबखूफ बनाने मैं जुट गए,वेब सीरीज़ की की एक पूरी दुनिया दीवानी हो गई है ,पाताल लोक,मिर्जापुर जैसी कई हिट सीरीज ओटीटी पर मोजूद है.अगर आप भी ओटीटी स्टार बन कर नाम कमाना चाहते है. तो किसी अच्छे और सच्चे बैनर की तलाश करे . अगर आप देखेंगे तो आप के शहर मैं ही कई लोग वेब सीरियल बना रहे होंगे ,शुरू मैं बेशक पैसा तो नहीं मिलेगा .पर एक बार खुद को साबित करेंगे तो पैसा भी आने लगेगा ओ टी टी का सबसे बड़ा फायदा ये है की आप अपनी दम से कई लोगो को अपना फैन फ़ॉलिंग मैं

जोड़ सकते है। कई छोटे रोल करने वाले पंकज त्रिपाठी आज ओटीटी के बड़े नाम है . कई बड़ी फिल्मे भी यही प्रदर्शित की जा रही है,आप को खुद को स्टार बनाने के लिए अभिनय की समझ,सही निर्णय,और धीरज की आवश्यकता होगी तो फिर कीजिये एक सही शुरुआत,कल सितारे बनने के लिए ।

आरजे से बनाई, फिल्मो में पहचान

ऐसा नहीं है की एक्टर सिर्फ एक्टिंग इंस्टिट्यूट से या टेलीविज़न से आते है, रेडियो ने भी फिल्म इंड्रस्टीज को कामयाब एक्टर दिए है. आप को ऐसा नहीं लगता की रेडियो ,सिर्फ बोलने का काम नहीं करता,साथ ही अभिनय भी करवाता है.जब कोई रेडियो जॉकी या रेडियो एनाउन्सर बोल रहा होता है,तब उसकी बॉडी लेंग्वेज और फेस एक्सप्रेशन बदलते जाते है, या इस बात को यूँ समझ लीजिये की बोले हुए शब्दो के मुताबिक वो अभिनय कर रहे होते है. आज की तारीख मैं रेडियो सिर्फ रेडियो नहीं है वो कम्पलीट इंस्टिट्यूट है. अगर आप रेडियो से गए फिल्मो मैं गए आरजे स की डायलॉग डिलेवरी सुनेगे तो महसूस करेंगे,बाकी एक्टरों के मुकाबले इन की डायलॉग डिलेवरी ज्यादा बेहतर है आयुष्मान खुराना उनके भाई अपारशक्ति रेडियो शुरुआत कर फिल्मो गए और काम समय मैं कामयाब भी हुए. इन के अलावा मनीष पाल, मंत्रा, मलिका , सलिल जैसे नए नाम है पर इस से अलग रेडियो से आकर एक्टर बनने वाले एक्टरों मैं सुनील दत्त भी थे, जिन्होंने रेडियो सीलोन मैं काम करते हुए दिलीप कुमार ,राजकपूर जैसे दिग्गजों के इंटरव्यू लिए पर को को मालूम था ,की कल सुनील दत्त उनके बराबर के सितारे बनेगे .ऐसे ही

दूसरे सितारे सईद जाफरी आकाशवाणी से शरू हो कर बीबीसी तक पहुंचे . और बात मैं बॉलीवुड और हॉलीवुड के कामयाब सितारे बने. मतलब रेडियो भी एक्टिंग की दुनिया मैं अपनी छाप छोड़ रहा है.चाहे तो आप भी रेडियो के जरिये आगे जाने की कोशिश कर सकते है।

अध्यात्म निकेतन और संत शिरोमणि श्री कृपाल सिंह जी महाराज

● गूंज न्यूज नेटवर्क

वैसे तो हर धर्म मैं उसके अपने अनुयायी होते हैं लेकिन ग्वालियर का अध्यात्म निकेतन, साधना का एक ऐसा केंद्र है जहां समाज के हर वर्ग की आस्था है, परम संत हजूर मालिक साहिब द्वारा स्थापितअध्यात्म निकेतन मैं आज भी उन्ही संस्कारो को तब्बजो दी जाती है,आडंबरो से दूर आज ये स्थान सिर्फ ग्वालियर अंचल का ही नहीं बल्कि विदेशो मैं रहने वाले भक्तो की आस्था का केंद्र है. परम संत हजूर मालिक साहिब के द्वारा स्थापित, अध्यात्म निकेतन का संचालन सुचारु रूप से परम संत हुजूर मालिक साहब के पुत्र संत श्री कृपाल सिंह जी द्वारा किया जाता है.संत कृपाल सिंह जी सही मायनो मैं हजूर मालिक साहब के सच्चे उत्तराधिकारी है.बड़े गुरु जी बनाये गए नियम,संस्कार,और परंपराओं निर्वहन आप के कर कमलो से ही सम्पन्न होता है,आश्रम की जिम्मेदारी उठाना कोई मामूली बात नहीं है, लाखों अनुयायियों की आस्था का विश्वास बनाये रखना संत कृपाल सिंह जी की ही वो योग शक्ति के फलस्वरुप है,जो उन्हें संत हजूर मालिक साहब से मिली है,प्रति वर्ष आस्था किस कदर बढ़ रही है इसका अनुभव आप गुरु पूर्णिमा जैसे आयोजन से समझ सकते है. अध्यात्म निकेतन, आज सिर्फ आस्था का ही नहीं,बल्कि खुद मैं एक आध्यात्मिक शक्ति महसूस करने का केंद्र भी है। साथ ही आप को बताना चाहेगे की संत श्री कृपाल सिंह जी एक कुशल लेखग भी है.आप की लिखी कई पुस्तकों के कई रीप्रिंट आ चुके है.आम नागरिक हो या कोई राजनीतिज्ञ सब को सामान रूप से संत जी का आशीर्वाद मिलता है,कई सामाजिक संस्थाओ के संरक्षक की भूमिका मैं संत श्री का अभूतपूर्व योगदान है,गरीब कन्याओ के विवाह,गरीब बच्चो की शिक्षा प्रबंध,जरुरतमंदो की मदद ये कुछ ऐसे काम है,जो कृपाल सिंह जी महाराज बिना किसी प्रचार के करते रहते है. आज भी संत श्री की ऊर्जा,ललाट पर तेज लोगो को विशिष्ट प्रेरणा देता है.तेजी से बदलती जीवन शैली मैं सुकून और मानसिक शांति की तलाश अध्यात्म निकेतन मैं और संत शिरोमणि श्री कृपाल सिंह जी महाराज के दर्शन मात्र से पूरी होती है... दिव्यशक्तिधर संत शिरोमणि श्री कृपाल सिंह जी महाराज के बारे मैं जितना लिखा जाये वो काम है ,जो अंनत है असीम है।

आध्यात्मिक गुरु श्री संत कृपाल सिंह जी महाराज ने गूंज पत्रिका के (जनवरी 2021) प्रथम अंक का विमोचन किया। इस अवसर पर गूंज पत्रिका की एडिटर कृति सिंह, विवेक सिकरवार भी उपस्थित थे। महाराज जी ने पत्रिका का अवलोकन किया एवं इसके सफलतम प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं पूरी गूंज टीम को बधाई व शुभकामनाएं भी दीं।

गूंज ओपन माइक कॉन्टेस्ट

शहर की होनहार प्रतिभाओं ने शानदार प्रस्तुतियों से सभी का मन मोहा

● गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर शहर में गूंज इंस्टीट्यूट द्वारा होनहार प्रतिभाओं को अपनी प्रतिभा निखारने के उद्देश्य से एक मंच दिया गया जिसमें छुपी हुईं प्रतिभाएं अपने हुनर दिखा सकें और आगे बढ़कर ग्वालियर अंचल का नाम देश दुनिया में रौशन कर सकें इसी उद्देश्य से ग्वालियर शहर के हरिशंकरपुरम स्थित गूंज इंस्टीट्यूट में आयोजित गूंज ओपन माइक कॉन्टेस्ट का आयोजन किया गया जिसमें शहर के लगभग 70 कलाकारों ने प्रतियोगिता में हिस्सा लिया एकल अभिनय, गायन, इंस्टुमेंटल, स्टैंडअप कॉमेडियन और युवा कवियों ने अपनी कला का शानदार प्रदर्शन किया और सभी का मन मोह लिया।

कार्यक्रम में अभिनय, इंस्टूमेंटल स्टैंडअप कॉमेडी से प्रतिभागियों ने शानदार प्रस्तुतियां दीं और कार्यक्रम में पधारे अतिथियों, श्रोताओं, अतिथियों द्वारा सभी प्रतिभागियों की खूब प्रशंसा और सराहना की गई कार्यक्रम में अन्त में अतिथियों द्वारा सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में अतिथि के रूप में रिटायर्ड कमांडेंट बीएसएफ यदुनाथ सिंह, जेएएच के पूर्व अधीक्षक एवं जी.आर. मेडिकल कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. जे. एस. सिकरवार, सरला देवी, गूंज इंस्टीट्यूट एवं गूंज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन आरती शेखावत, आकांक्षा तिवारी ने किया जबकि कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथियों का आभार कृति सिंह ने व्यक्त किया।

कार्यक्रम में अभिनय, इंस्टूमेंटल स्टैंडअप कॉमेडी से प्रतिभागियों ने शानदार प्रस्तुतियां दीं और कार्यक्रम में पधारे अतिथियों, श्रोताओं, अतिथियों द्वारा सभी प्रतिभागियों की खूब प्रशंसा और सराहना की गई कार्यक्रम में अन्त में अतिथियों द्वारा सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

GOONJ OPEN MIC CONTEST (चित्रमय झलकियां)

होलिया में उड़े रे गुलाल....

भारत में त्योहार और पर्वों का अनादि काल से विशिष्ट महत्व है। हमारी संस्कृति की यह अनूठी विशेषता है कि हमारे त्योहार समाज में मानवीय गुणों को स्थापित कर लोगों में समता, समानता, सद्भाव, प्रेम और भाईचारे का सन्देश प्रवाहित करते हैं। होली देश का सबसे पुराना त्योहार है जिसे छोटे-बड़े अमीर-गरीब सभी लोग मिलजुल कर मनाते हैं। यह असत्य पर सत्य और बुराई पर अच्छाई का प्रतीक है। राग-रंग का यह पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है। राग रंग और नृत्य इसके प्रमुख अंग हैं। फाल्गुन माह में मनाए जाने के कारण इसे फाल्गुनी भी कहते हैं।

होली का त्यौहार देश और दुनिया भर में बड़े ही उत्साह के साथ धूमधाम से मनाया जाता है हर तरफ लोग मस्ती में झूमते व एक दूसरे पर अबीर-गुलाल लगाते व रंगों की वर्षा करते दिखाई देते हैं। यह त्योहार सामाजिक समानता, राष्ट्रीय एकता और अखण्डता तथा विभिन्नता में एकता का साक्षात प्रतीक है। होली मनाते समय जात-पात, छोटा-बड़ा का भी कोई भेद नहीं होता। अमीर-गरीब, बच्चे, युवा बुजुर्ग सभी मिल-जुल कर यह त्यौहार मनाते हैं। होली रंगों के साथ गीत-संगीत और नृत्य का अनूठा त्यौहार है। इसे एकता, प्यार, खुशी, सुख और जीत का त्योहार के रुप मे भी जाना जाता है। यह हर्षोल्लास परस्पर मिलन व एकता का प्रतीक है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, पंजाब, दिल्ली आदि हिन्दी भाषी प्रदेशों में होली का पर्व भारी उल्लास और रंगों के साथ मनाया जाता है। देश के अन्य राज्य भी अलग-अलग तरीकों से होली का आनन्द उठाते हैं। ब्रज, मथुरा और बरसाने की होली विश्व प्रसिद्ध है। देश में

होली पर्व को अनेक कहानियों के साथ भी जोड़कर देखा जाता है। उत्तर भारत के राज्यों में जिसमें राजस्थान भी शामिल है, भक्त प्रहलाद की कहानी विख्यात है।

फाग और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग-बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से आह्लादित हो जाते हैं। खेतों में गेहूँ की बालियाँ इठलाने लगती हैं। किसानों का हृदय खुशी से नाच उठता है। बच्चे-बुजुर्ग सभी सब कुछ संकोच और रूढियाँ भूलकर ढोलक-झाँझ-मंजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। उत्साह और उमंग से भरा ये त्योहार एक दूसरे के प्रति प्रेम, स्नेह और निकटता लाता है। इसमें लोग आपस में मिलते हैं, गले लगते हैं और एक दूसरे को रंग और अबीर लगाते हैं। इस दौरान सभी मिलकर ढोलक, हारमोनियम तथा करताल की धुन पर धार्मिक और फागुन गीत गाते हैं। होली राग रंग और मौज मस्ती का बांका त्योहार है। होली हमारे लिये सांस्कृतिक और पारंपरिक उत्सव है। होली का त्योहार जैसे-जैसे नजदीक आता है वैसे-वैसे लोगों में खिलन्दड़ भाव के साथ एक अनोखा और अद्भुत उन्माद छा जाता है। विशेषकर उत्तर भारत के मैदानी राज्यों में होली बहुत धूमधाम के साथ मनाई जाती है। होली रंग बिरंगा पर्व है। रंग और पिचकारी लेकर युवा निकल पड़ते हैं और एक-दूसरे पर अबीर, गुलाल और रंग डालकर होली मनाते हैं। हर तरफ लोग मस्ती में झूमते व एक दूसरे पर अबीर-गुलाल लगाते व रंगों की वर्षा करते दिखाई देते हैं।

GOONJ (M.P.)

आपकी अपनी आवाज़

देश-दुनिया और अपने आसपास की हर खबर को पढ़ने के लिए जुड़ें हमारे साथ

गूंज एमपी न्यूज पोर्टल में देश-विदेश, राजनीति, खेल, बॉलीवुड, अपराध, व्यापार, मध्य प्रदेश, अंचल की खबरें पढ़ने के लिए लॉग इन करें.....

www.goonjmp.in

(अगर आपके पास कोई ख़बर हो तो हमें भेजें हम उसे प्रमुखता से फ्लैश करेंगे)

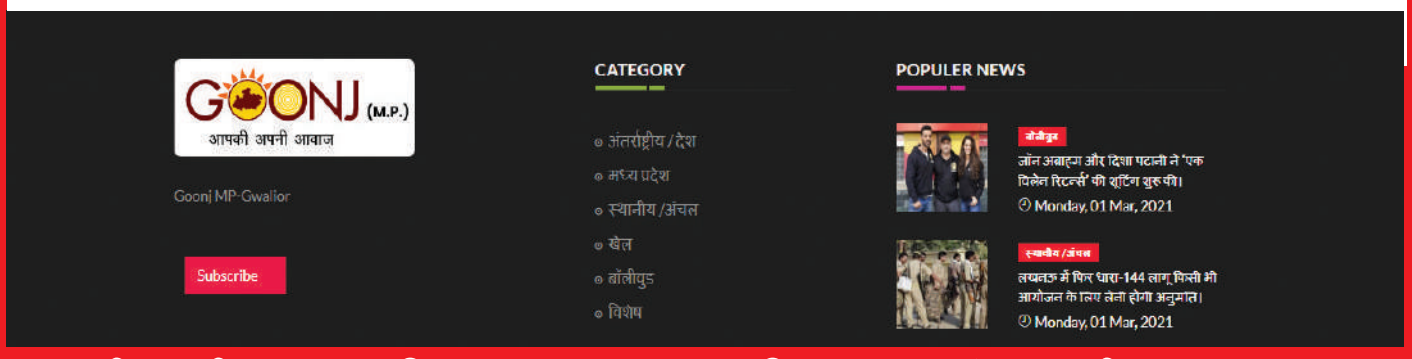

कार्यालय: ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश संपर्क: 7987167692

90.8 FM GOONJ

आपकी अपनी आवाज़

2 MONTHS CERTIFICATECOURSEOFFERED

CONTENT WRITING

RADIO JOCKEY

Communication & Personality Development

RADIO PRODUCTION

NEWS ANCHORING

@8Goonj
Goonj 90.8FM-Aapki Apni Awaz

78800719087880040908
goonj90.8

Address : E-69, Harishankarpuram, Gwalior (M.P.)

Contact us : 7880040908 7880071908 7880077908

website : www.goonjgwl.com, Email : goonjgwl@gmail.com